सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 146, नई दिल्ली, सोमवार 04 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन बदलने के लिए लड़ना पड़ता है और आसान करने के लिए जीवन को समझना जरूरी है।

03 स्वच्छता कर्तव्य और पर्यावरण जीवन की डोर मेयर राजा इक़बाल

06 एक राष्ट्र, कई आवाज़ें: भारत में भाषाई विविधता : विजय गर्ग

08 विपक्ष लाशों पर राजनीति कर रहा है : बीजेपी

संजय कुमार बाटला

प्रकाशक । संपादक । समाज सुधारक । उद्योग लीडर

व्यावसायिक सारांश

संजय कुमार बाठला एक अनुभवी मीडिया पेशेवर, दूरदर्शी नेता और परिवहन श्रमिकों और उद्योग हितधारकों के कल्याण के लिए अथक वकील हैं। चार दशकों से अधिक समय तक जमीनी स्तर पर भागीदारी और नेतृत्व के साथ, उन्होंने भारत में परिवहन क्षेत्र, लोक कल्याण और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आरएनआई द्वारा अनुमोदित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक 'परिवहन विशेष' के प्रकाशक और मुख्य संपादक तथा ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड के प्रबंध निदेशक के रूप में उन्होंने परिवहन पत्रकारिता और नीति वकालत में एक विश्वसनीय आवाज स्थापित की है।

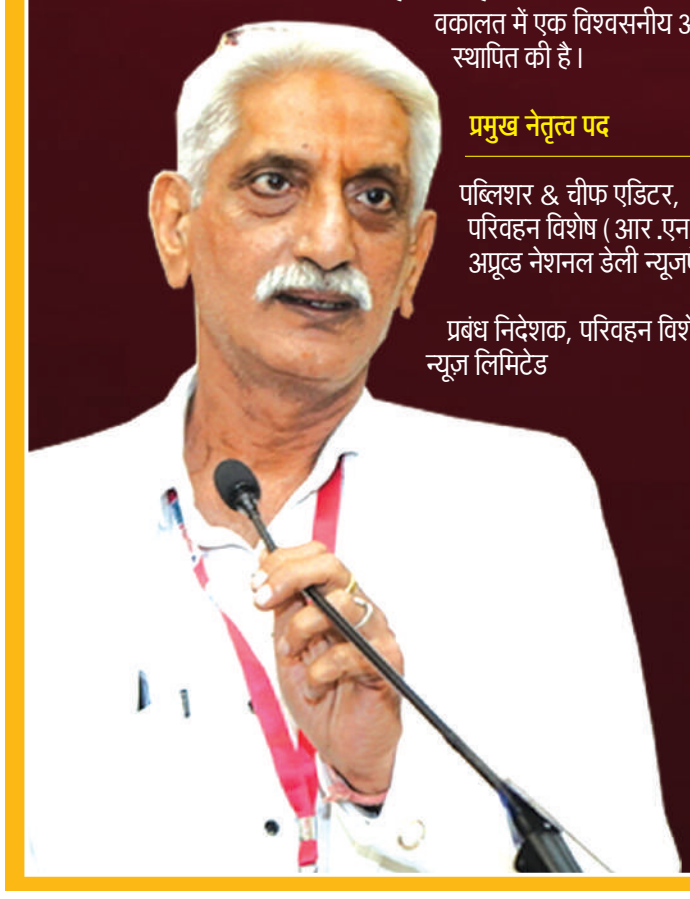

प्रमुख नेतृत्व पद

पब्लिशर & चीफ एडिटर, परिवहन विशेष (आर .एन .आई अप्रूव्ड नेशनल डेली न्यूजपेपर)

प्रबंध निदेशक, परिवहन विशेष न्यूज़ लिमिटेड

चेयरमैन, ट्रांसपोर्ट आपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजीकृत)

चेयरमैन, टेम्पल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

चेयरमैन, इलेक्ट्रिक ऑटोमोबाइल्स मैन्युफैक्चरर्स एक्सपर्ट्स एंड डीलर्स वेलफेयर सोसाइटी (पंजीकृत)

पूर्व छात्र नेता, दिल्ली विश्वविद्यालय (1979-1982)

विशेषज्ञता के क्षेत्र

परिवहन नीति और उद्योग वकालत

इलेक्ट्रिक वाहन प्रचार और डीलर प्रतिनिधित्व

परिवहन क्षेत्र में श्रम अधिकार और कल्याण

पत्रकारिता एवं मीडिया नेतृत्व

गैर-लाभकारी और सार्वजनिक ट्रस्ट शासन

जन जागरूकता अभियान

मोबाइल : +91-98117 32095 | +91-95992 32095
@email :
bathlasanjaybathla@gmail.com
bathlasanjay@live.com
tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com
newstransportvishesh@gmail.com
parivahanvishesh@gmail.com

वेबसाइटें :
www.tolwa.com |
www.tolwa.in
www.newstransportvishesh.com
www.newsparivahan.com
www.newstranspot.in
www.transporttoday.co.in
www.wordpress.com/bathlasa

यूट्यूब चैनल :
News Transport Vishesh
newsparivahan

सोशल मीडिया :
Linkedin
Twitter/X
Instagram
Facebook

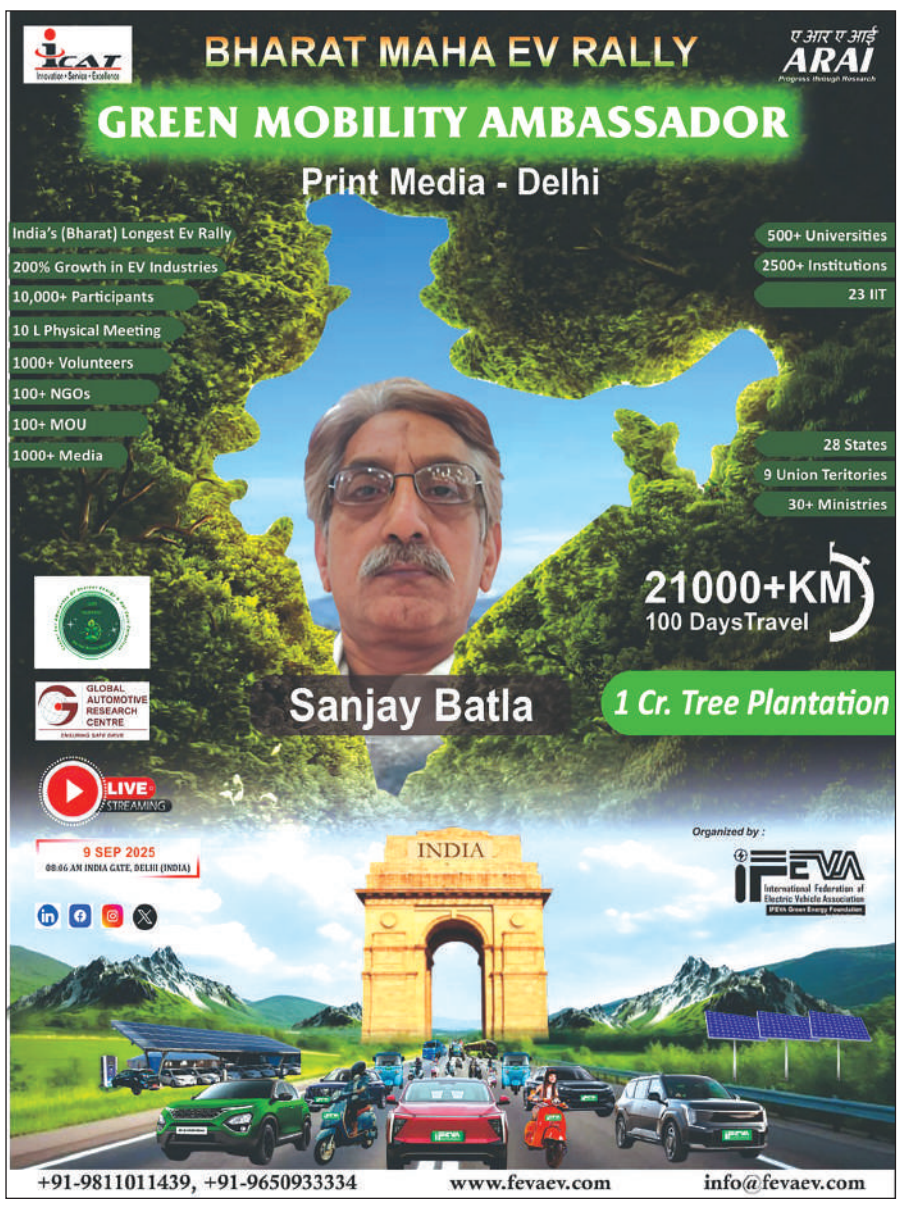

"केन्द्र सरकार ओन लाइन चालान बन्द करें"

परिवहन विशेष न्यूज

केन्द्र सरकार ओन लाइन चालान बन्द करें इससे पुलिस ओर आरटीओ विभाग में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार हो रहा है कहीं भी देख लो अगर आरटीओ पुलिस को रिश्वत नहीं दी तो ओन लाइन चालान कर देते हैं

हरियाणा में मोटर व्हीकल एक्ट में बदलाव किया जाएं जैसे हाइट का चालान हरियाणा में 21000/

राजस्थान 5000/

गुजरात 2500/

एक देश एक कानून होना चाहिए

वैस्ट बंगाल डन्डा टैक्स एक साल 11000/18 चक्का

छत्तीसगढ़ मकैनिकल 4000/ 18 चक्का

मध्यप्रदेश में चैकिंग के नाम पर चैकिंग पाइन्ट के नाम पर अवैध वसूली ली जाती है

राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष
भारत ट्रक एन्ड ट्रान्सपोर्ट वेलफेयर एसोसिएशन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रान्सपोर्ट सारथी संगठन

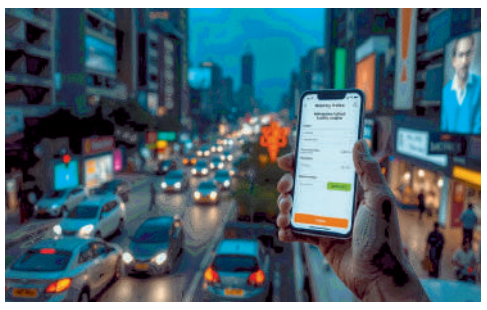

दिल्ली में पार्किंग ठेकेदारों की मनमानी, जुर्माने के बाद भी नहीं लगी लगाम, 100 रुपये तक वसूला जा रहा है शुल्क

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली में पार्किंग ठेकेदारों द्वारा निर्धारित शुल्क से अधिक वसूली जारी है जिससे लाजपत नगर और करोल बाग जैसे इलाकों में जाम और परेशानी बढ़ रही है। निगम द्वारा जुर्माना लगाने के बावजूद स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। पार्किंग कर्मी मनमाना शुल्क वसूल रहे हैं और माय पार्किंग ऐप का उपयोग नहीं कर रहे हैं।

नई दिल्ली। पुरानी दिल्ली की विभिन्न पार्किंग में तय शुल्क से ज्यादा शुल्क वसूलने पर निगम द्वारा 24 लाख रुपये का जुर्माना लगाए जाने के बाद भी दिल्ली में पार्किंग ठेकेदार सुधरने का नाम नहीं ले रहे हैं। अब भी दिल्ली की व्यस्ततम बाजारों में तय शुल्क से ज्यादा पार्किंग का शुल्क वसूलने से लोग परेशान हैं।

ऐसी ही स्थिति दक्षिणी दिल्ली के लाजपत नगर सेंट्रल मार्केट से लेकर करोल बाग की है। जहां पर न केवल पार्किंग में तय शुल्क से ज्यादा शुल्क वसूला जा रहा है बल्कि एक लेन की पार्किंग में तीन-तीन लेन की पार्किंग लगाई जा रही है। इससे जाम की स्थिति तो उत्पन्न हो ही रही है बल्कि लोगों को परेशानी हो रही है। क्योंकि पार्किंग कर्मी न तो वर्दी में नजर आते हैं और न ही तय नियमों के अनुसार पार्किंग संचालन कर रहे हैं।

लाजपत नगर सेंट्रल मार्केट की बात करें तो यहां पर एक पजल पार्किंग है। वहां पर तो निगम के तय शुल्क के अनुसार शुल्क लिया जा रहा है लेकिन सड़कों के दोनों किनारे मार्केट में फिरोज गांधी रोड, वीर सावरकर मार्ग, हल्दीराम के पास सड़क पर एक लेन की पार्किंग तय है लेकिन सड़क पर तीन-तीन लेन की पार्किंग लगी है। जो कि जाम का कारण भी बन रहा है। यहां पर कुछ ही दूरी तय करने के लिए लोगों को 20-30 मिनट का समय लग जाता है। इतना ही नहीं पार्किंग संचालक

लोगों की मजबूरी का फायदा उठाते हुए चार पहिया वाहनों का पार्किंग शुल्क 20 रुपये घंटे की बजाय 100 रुपये वसूल रहे हैं। साथ ही पार्किंग की पर्ची पर 100 रुपये पूरे दिन का शुल्क लिखकर पर्ची दी जा रही है।

समाचार पत्र की एक टीम ने भी यहां पर गाड़ी खड़ी की तो 10 मिनट की पार्किंग का 100 रुपये का शुल्क लिया गया। जब तय रेट की पर्ची मांगी गई तो कर्मचारी पर्ची देने से इन्कार कर दिया। साथ ही यह भी कहा कि चाहे एक घंटे वाहन खड़ा करें या फिर चार घंटे शुल्क तो 100 रुपये ही लगेगा।

ऐसी ही स्थिति करोल बाग के सरस्वती मार्ग पार्किंग की है। यहां पर वैसे तो पार्किंग का शुल्क 40 रुपये घंटे तय है लेकिन यहां पर भी लोगों की मजबूरी का फायदा उठाकर 100 रुपये का शुल्क वसूला जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली भर में एमसीडी का पार्किंग शुल्क 20 रुपये प्रति घंटा है। चार घंटे से अधिक होने पर 24 घंटे के लिए अधिकतम 100 रुपये का शुल्क चार पहिया वाहनों से लेकर का नियम है। हालांकि करोल बाग के गुरुद्वारा रोड, आर्य समाज रोड, अजमल खां रोड और सरस्वती मार्ग पर यह शुल्क 40 रुपये शुरुआती घंटा है। वहीं, इसके बाद पांच घंटे तक 10 रुपये प्रति घंटे का शुल्क लगेगा। 24 घंटे के लिए 300 रुपये का शुल्क है।

डिवाइस में नहीं उपयोग हो रहा है माय पार्किंग एप

तय मात्रा से ज्यादा शुल्क लेने का एक कारण यह भी जिस डिवाइस से पार्किंग ठेकेदार पर्ची काट रहे हैं उसमें माय पार्किंग एप का उपयोग नहीं हो रहा है। अपनी मर्जी से पार्किंग डिवाइस में शुल्क डाल रखा है। इससे लोगों को पर्ची पर 100 रुपये का शुल्क दिखाकर भ्रमित किया जा रहा है। जबकि नियमानुसार सभी पार्किंग ठेकेदारों को एमसीडी के माय पार्किंग का एप का इस्तेमाल करना होता है।

पिछले माह समाचार पत्र ने पार्किंग शुल्क ज्यादा लेने और नियमों का पालन न करने का मुद्दा उठाया था। इसके बाद निगम ने नियमों का उल्लंघन करने वाले पार्किंग ठेकेदारों पर 24 लाख रुपये का जुर्माना लगाया था।

हमने कई बार शिकायत एमसीडी उपायुक्त को की है लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। पार्किंग जहां-तहां की जा रही है। एक लेन की अनुमति है तीन-तीन लेन में गाड़िया खड़ी की जा रही है। इससे जाम लगता है और व्यापारी और ग्राहक दोनों परेशान होते हैं। -

योगेंद्र डावर, अध्यक्ष, सेंट्रल मार्केट शापकीपर्स एसोसिएशन, लाजपत नगर

निगम ने पहले ही एडवाइजरी जारी की थी तय शुल्क ही पार्किंग ठेकेदार लें। मामला आपके द्वारा हमारे संज्ञान में लाया गया है। नियमानुसार सख्त और कड़ी कार्रवाई की जाएगी। - ***सुमित कुमार, प्रवक्ता, एमसीडी***

पार्किंग ठीक तरह से चले इनके पास है जिम्मेदारी

मोहित बंसल, उपायुक्त, लाभकारी परियोजना सेल, एमसीडी

रवि मीणा, क्षेत्रीय निरीक्षक, करोल बाग जोन, लाभकारी परियोजना सेल, एमसीडी

अंकुश, क्षेत्रीय निरीक्षक, मध्य जोन, लाभकारी परियोजना सेल, एमसीडी

श्रावण का आखिरी वन सोमवार आज

सावन का पवित्र महीना 11 जुलाई 2025 को शुरू हुआ था। इसका आखिरी सोमवार 4 अगस्त को पड़ेगा, जबकि 9 अगस्त को सावन का महीना खत्म हो जाएगा। इस दौरान अपने आराध्य की कृपा पाने के लिए और उनको प्रसन्न करने के लिए सोमवार के व्रत कई लोगों ने किए हैं। मगर, क्या आपको पता है कि यदि आपने इन व्रतों को करने के बाद उद्यापन नहीं किया, तो व्रत का पूरा फल आपको नहीं मिलेगा। उद्यापन का मतलब होता है पूर्ण होना। इसलिए किसी भी व्रत के पूरा होने पर जो अंतिम पूजा या अंतिम व्रत किया जाता है, उस दिन उद्यापन करना होता है।

उद्यापन में लगेगी ये सामग्री

==========================

सावन के सोमवार के व्रत का उद्यापन करने के लिए आपको कुछ चीजों की जरूरत होगी। इसलिए इन चीजों को पहले से ही बाजार से खरीदकर घर ले आएं। इसके लिए सबसे पहली और जरूरी चीज है शिव-पार्वती जी की प्रतिमा या मूर्ति। इसके अलावा आपको वस्त्र, फल, केले का पत्ता, आम का पत्ता, पान, सफेद मिठाई की जरूरत होगी।पंचामृत बनाने के लिए गाय का कच्चा दूध, दही भी आपको उसी दिन खरीदना पड़ेगा।

वहीं पंचामृत के लिए घी, शहद और शक्कर भी घर में ही होगी। शिव-पार्वती की प्रतिमा को स्थापित करने के लिए लकड़ी की चौकी और साफ-सुथरा लाल कपड़ा आपके घर में ही मिल जाएगा। पूजा के लिए छोटी इलायची, लौंग, कुंकुम, रोली, अक्षत, सुपारी भी घर में ही मिल जाएगी।

उद्यापन की विधि

===================

सुबह स्नान आदि दैनिक कार्यों को करने के बाद साफ और स्वच्छ कपड़े पहनें। इसके बाद गंगा जल से पूजा स्थान को शुद्ध करके चौकी रखें। फिर उस पर लाल कपड़ा बिछाकर शिव-पार्वती की मूर्ति या प्रतिमा स्थापित करें। स्वयं को पवित्र करने के लिए हाथ में जल लेकर इस मंत्र का उच्चारण करें...

'ॐ पवित्रः अपवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्यभ्यन्तर शुचिः॥'

इसके बाद वह जल अपने ऊपर छिड़क लें। फिर एक दीपक और धूप जलाने के बाद शिवजी को चंदन और अक्षत लगाएं। माता पार्वती को रोली लगाएं। इसके बाद फूल-माला, फल, मिठाई, पंचामृत चढ़ाकर उसका भोग लगाएं। साथ ही अन्य सामग्री भी चढ़ा दें।

इसके बाद शिव चालीसा, शिव पंचाक्षरी मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र आदि का जाप करें। अंत में शिव जी की आरती उतारें। इस तरह से आपके व्रत का उद्यापन पूरा हो जाएगा। इसके बाद अपनी क्षमता के अनुसार जरूरतमंद और गरीब लोगों को दक्षिणा या वस्त्र आदि दान करें।

सावन के आखिरी सोमवार जरूर करें ये उपाय

=========================

=

1) सावन के आखिरी सोमवार को रुद्राभिषेक करना से भी भगवान शिव प्रसन्न होते हैं। रुद्राभिषेक कराने से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है और ग्रह दोष शांत होते हैं। इसलिए सावन के आखिरी सोमवार को रुद्राभिषेक जरूर कराएं। ऐसा कहा जाता है कि रुद्राभिषेक करने से भगवान शिव अपने भक्तों की मनोकामना जल्द ही पूरी करते हैं।

2) सावन के आखिरी सोमवार 108 बेलपत्र लेकर सफेद चंदन से उनपर ओम नमः शिवाय लिखें और एक एक करके भगवान शिव को अर्पित करें। इसी के साथ शमी के पत्ते लेकर उन पर शहर लगाकर भगवान शिव को अर्पित करें।

3) सावन के आखिरी सोमवार किसी शिव मंदिर में जाकर भगवान शिव की पूरी श्रद्धा के साथ पूजा अर्चना करने के बाद जरुरमंद लोगों को भोजन कराएं और उन्हें अपने सामर्थ्य के अनुसार दान करें।

#आवश्यक_विमर्श

प्रश्न -क्या भगवान शिव भांग धतूरा और गांजा आदि का सेवन करते हैं?

#आवश्यक_विमर्श
प्रश्न -क्या भगवान शिव भांग धतूरा और गांजा आदि का सेवन करते हैं ?
उत्तर -बिल्कुल नहीं। भगवान शिव व्यसनी और प्रमादी नहीं है,किसी भी शास्त्र में,शैव दर्शन -पाशुपत दर्शन, शिवमहापुराण जो शिव जी को समग्रता से व्यक्त करते हैं उनमें कहीं भी भांग धतूरा गांजा आदि का उल्लेख नहीं है। शिवतत्व अद्भुत है सृष्टि में व्याप्त हैं सम्पूर्ण सृष्टि का एक कण भी शिव और शिवतत्व से रहित नहीं है।शिव जी के सकल और निष्कल (सगुण साकार और निर्गुण निराकार) स्वरूप का शास्त्र वर्णन करते हैं। अनेकानेक रूपों में शिव लीला करते हैं परन्तु प्रमाद, नशा नहीं करते समाधि अवस्था में भी परम जाग्रत, सतत चैतन्य रहते हैं। यह नितांत अज्ञान ही है कि शिव जी भांग पीते हैं नशा करते हैं।

भगवान शिव ने लोक रक्षण हेतु समुद्र से निकले हालाहल महाविष का पान किया था वह भी प्रमाद के लिए नहीं सृष्टि को विनाश से बचाने के लिए..

₹तत करतलीकृत्य व्यापि हालाहलं विषम्।
अभक्षयन्महादेव कृपया भूत-भावन।।(श्रीमद् भागवत ८/७/४२)

लेकिन लोग अपने व्यसन की पूर्ति और दुराग्रह के साथ एव छुपाने के लिए ऐसा जघन्य अपराध करते हैं, भगवान को अपने प्रिय व्यसन सामग्री का भोग लगाकर स्वयं को निर्दोष साबित करने का कुप्रयास करते हैं।

पण्डित लोग भी वैदिक मंत्र ₹रुद्र सूक्त₹ के मंत्र को उच्चारण करते भांग शिवजी को चढ़वाते हैं -
ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवां उत....
इस मंत्र के विषय में कहते हैं कि इसमें विजया अर्थात भांग का भोग लगाया जाता है जबकि यह कहाना तो महान अज्ञान ही है।विज्य का मतलब है विगत ज्या यानि धनुष की ज्या प्रत्यंचा डोरी उतार लेना।इस मंत्र में कहा गया है कि हे भगवान आप अपने धनुष की ज्या प्रत्यंचा उतार लीजिए और अपने नुकीले वाणों को विशल्य कर लीजिए यानि वाणों के शल्य नोंक को निषंग यानि तरकश में रख लीजिए परंतु अज्ञान के विशेष प्रभाव से इस भाव को विजया यानि भांग से ही जोड़ दिया।

अरे भाई ! भगवान शिव की होड़ ही करना है तो उन्होंने तो लोक कल्याण के लिए हालाहल महाविष ज़हर पिया था तुम लोग भी तोला दो तोला ज़हर पीकर सिद्ध कर दो बच गए तो शंकर नहीं तो शिवनिवास भूमि श्मशान तो पक्का मिल ही जाएगा।

जरत सकल सुरवृंद,विषम गरल जेहिं पान किय।
तेहि न भजसि मतिमंद,को कृपालु संकर सरिस।।(मानस)
निष्कर्ष है कि भगवान शिव ने कभी भी भांग धतूरा गांजा आदि का सेवन नहीं किया और नहीं करते हैं ! वे व्यसनी और प्रमादी नहीं है।
₹एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं समस्तं
सत्यं सत्यं नेहनानास्ति किंचिन्।
एकोरुद्रो न द्वितीयोऽ धतस्ते
तस्मादेकं त्वां प्रपन्नं
महेशम्।।₹(शिवपुराण,वैश्वानर स्तोत्र)
कभी भी शिव जी को अभक्ष्य अखाद्य और व्यसन प्रमाद की वस्तुएं नहीं चढ़ाएं, सात्विक भाव से पूजन कर उन महेश्वर की शरणागति ग्रहण करें -

----विश्वामित्र
(भगवत गीता अनुसंधान एवं प्रचार प्रसार ट्रस्ट रजि गोवर्धन)

सूर्य आदि ग्रहों के रथ दृश्यों का वर्णन

सूर्य के रथ में रहने वाले आदित्य, सुर, मुनि, गंधर्व, अप्सराएं, ग्रामि, सर्प और राक्षस हैं, ये सभी दो महीने तक रथ में रहते हैं, और उनके कार्य इस प्रकार हैं। सुर अपने तेज से सूर्य का तेज बढ़ाते हैं।

मुनि अपने द्वारा रचित स्तोत्रों और स्तोत्रों से भास्कर की स्तुति करते हैं। गंधर्व गायन कला के माध्यम से सूर्य की पूजा करते हैं। अप्सराएं सुंदर नृत्य कला के माध्यम से सूर्य को प्रसन्न करने का प्रयास करती हैं। सर्पसूर्य को घेर लेते हैं। ग्राम की स्त्रियां, यक्ष और भूत किरणों को एकत्रित करने का कार्य करेंगे। यातुधान सूर्य के रथ को आगे बढ़ाएंगे। वालखिल्य सूर्य के चारों ओर अपना घेरा बनाकर अस्त को करेंगे।

सूर्य जो सबके स्वामी हैं, तपस्या करेंगे। सूर्य का परिवार गंधर्व आदि होगा। सूर्यग्रीष्म, वसंत और शीत ऋतुओं के अनुसार गर्मी, हिम, बुरे दिन, रात आदि उत्पन्न करेगा तथा वसंत आदि ऋतुओं के अनुसार किरणों में परिवर्तन करेगा। इस प्रकार वह देवताओं, पितरों और मनुष्यों को संतुष्ट करके यात्रा करेगा। इस प्रकार रवि सभी देवताओं और पितरों की रक्षा करेगा।

सुंदर घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले एक पहिये वाले, शुभ, सुंदर और दर्शनीय रथ से भास्कर एक दिन और एक रात तक तेजी से परिक्रमा करेगा। रथ के बाएं पहिये पर गायत्री के समान सात नक्षत्र हैं, जो केवल एक बार बंधे होते हैं। सूर्य का रथ एक सौ चौरासी मंडलों को घुमाता है। इस प्रकार भास्कर महान ऋषियों द्वारा रचित स्तोत्रों से स्तुति करते हुए यात्रा करता है। चंद्रमा का रथ ऐसा ही है। यह रथ तीन पहियों से सुसज्जित है, और इसमें सफेद घोड़े शोभायमान हैं। यह जल के गर्भ से निकला है।

सौ वलयों से घिरा हुआ यह रथ तीन पहियों से युक्त, सुन्दर, मनोहर तथा दिव्य है, तथा इसमें दस घोड़े शोभायमान हैं। वे दस घोड़े यजु, चन्द्रमा, वृष, वाजि, नर, हय, गविष्णु, हंस, वोम तथा मृग हैं। ये घोड़े दीक्षा सहित चन्द्रमा को प्रभावशाली ढंग से ले जा सकते हैं। कृष्ण पक्ष के अन्त में, दिन के ढलते भाग के अन्त में, अथवा शुक्ल पक्ष के प्रारम्भ में, यह सूर्य में विलीन हो जाएगा तथा सूर्य की किरणों के साथ अपना पूर्ण रूप ले लेगा।

सुरा इन तत्वों का उपभोग करेगी तथा शशांक, जो पन्द्रह दिनों से दुबला-पतला है, को रवि अपनी एक किरण से निरन्तर पोषण देगा। दिन-प्रतिदिन वह सूर्य की सुषुम्मा नामक किरण से प्रत्येक तत्व को बढ़ाएगा। तब चन्द्रमा में तत्वों की वृद्धि होगी। इस तत्व का सेवन करने से कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा तत्व उपजाऊ हो जाएगा और शुक्ल पक्ष के आरम्भ में अपनी किरणों से सूर्य के साथ इसे पूर्ण करने से शशांक तत्व की वृद्धि होगी।

रात्रि के समय शशांक में इस दिव्य अमृत को पीने के लिए सभी देवता, ऋषि और पितर पूर्णिमा की सीमा के बराबर पूर्ण चन्द्रमा की पूजा करेंगे। कृष्ण पक्ष के आरम्भ से सूर्य की ओर गति करने वाले चन्द्रमा की कलाएँ पितरों और देवताओं द्वारा भस्म हो जाने के कारण क्षय को प्राप्त होती हैं। इस प्रकार सूर्य से चन्द्रमा की वृद्धि और क्षय होता है।

अब चन्द्रमा के पुत्र बुध के रथ के विषय में मुझसे सुनो। बुध का रथ मेघ के समान गर्जना करने वाला, श्वेत रंग का और ध्वजाओं तथा पताकाओं से सुशोभित है। शुक्र का रथ सूर्य के समान तेज से सुशोभित है। इसमें पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले श्वेत, पिसंग, सारंग, नील, पीत और विलोहित नामक घोड़े हैं। अंगारक का रथ स्वर्ण रंग का है और उसमें आठ घोड़े हैं।

बृहस्पति का रथ जल में उत्पन्न वायु की गति वाले आठ दिव्य घोड़ों से सुशोभित है। राहु का रथ आठ काले घोड़ों से सुशोभित है। शनि का रथ धातु से बना है और आकाश से उत्पन्न घोड़ों से बना है। चंद्रमा सूर्य के दिनों में भास्कर के साथ जुड़ता है। केतु का रथ वायु की गति वाले आठ घोड़ों से बना है। इस प्रकार ग्रहों के रथ और वाहनों का वर्णन किया गया है.

आयुर्वेदिक समाधान

1. मूत्र रुकावट खरबूजा के छिलके खिलाये। कैस्टर आयल गर्म पानी मे दें।

2. सुजाक (गुनेरिया) राल 6 माशा, 3 सेर गाय के दूध में मिलाकर गर्म करें, दही बनाये, फिर मक्खन निकाले, यह मक्खन दिन में 2 बार खिलाये और छाछ पिलाये, 2 दिन में रोग समाप्त।

3. प्लीहा (तिल्ली) रोग बारिश के गिरे हुए ओले, प्लीहा पर बांध दें, 1-2 बार मे ही समस्या समाप्त।जरक नामक जानवर की जीभ को छाया में सुखाकर इसका लेप करें, 1 बार मे रोग समाप्त।

4. फोड़ा 120 ग्राम राल को महीन पीसकर, 6 ग्राम पारा को, 24 ग्राम तूतिया के साथ, घी के साथ पत्थर सिल पर 6 घंटे घुटाई करें, इसे रूई में लेकर फोड़ा पर चिपका दें, पका हुआ फोड़ा फूट जाएगा, कच्चा हुआ तो पिचक जाएगा।

5. कफ लाल फिटकरी का बारीक चूर्ण करें। देशी शक्कर के साथ 3,3 ग्राम सेवन करें। 3 दिन ने कफ बाहर निकल जायगा। बैंगन खटाई तेल परहेज करें।

6. हाथ की हथेली रूखी हो, फटती हो बाकुचि का चूर्ण अदरक के रस में मिलाकर हाथो पर लगायें।

7. माइग्रेन (आधाशीषी) ईख का सिरका 120 ग्राम। सेंधा नमक 12 ग्राम कांच की बोतल में रखे। 3,3 बूंद नाक में डाल दें। दर्द बंद होगा कफ की गांठ गल जाएगी।

8. मुंहासे 12 ग्राम सेमल के कांटे, 60 ग्राम दूध में 1 घंटे के लिए भिगो दें, और प्रात काल इसको पीसकर लेप करें, धूप में न जाएं, 14 दिन में ही चेहरे का कायाकल्प हो जायगा।

9. पायरिया धान का भूसा लेकर, लोहे की कड़ाही में जलाकर भस्म बना लें, भस्म 480 ग्राम, कपूर 12 ग्राम को पत्थर की सील पर पीसें, गेरू 60 ग्राम, कार्बोलिक एसिड 12 ग्राम ,आयलजीरेनियम आधा ग्राम लेकर घुटाईं करें, फिर शीशी में रखें, पायरिया निश्चित ठीक होगा।

10. बाबसीर के मस्से
१. सफेद कत्था
२. नीला थोथा
. कुचला
४. अहीफेंन
५. बड़ी सुपारी
प्रत्येक 12,12 ग्राम,
सुपारी और नीला थोथा तवे पर डालकर भून लें, फिर सबको पीसकर मक्खन मिलाकर तांबे के बर्तन में घोंटकर मरहम बना लें, मस्सा पर लगाए ,निश्चित मस्से समाप्त होंगे।

नीले ड्रम का आतंक': इससे जुड़ा खौफ और समाज में उसकी गूंज

शम्भू शरण सत्यार्थी

कभी मजदूरों के घरों में पानी और अनाज रखने का भरोसेमंद साधन रहा नीला प्लास्टिक ड्रम, अब लोगों के लिए खौफ का पर्याय बन गया है. यह वही ड्रम है जिसे मैं अक्सर ट्रेनों के जेनरल डिब्बों में बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के मजदूरों को महानगरों से अपने गांव ले आते देखता हूं.

ट्रेन की जनरल बोगी में जहां एक साधारण बैग ले जाना मुश्किल होता है, वहां इन भारी ड्रमों को ढोना किसी पर्वतारोहण से कम नहीं. मजदूरों के चेहरे पर तकलीफ के बीच एक संतोष की झलक होती—"घर जाकर मां या पत्नी इसे देखकर खुश होगी, इसमें अनाज, पानी या घर की जरूरत का सामान रखा जाएगा."

लेकिन आज वही ड्रम एक भयानक मंजर की याद दिलाने लगा है. सोशल मीडिया के दौर में इन ड्रमों की कहानी गांव-गांव तक पहुंच गई है और यह कहानी भय, शंकाओं और अविश्वास की है.

मेरठ की घटना

मेरठ की घटना ने ड्रम को अपराध का प्रतीक बना दिया.मेरठ में हुए एक चर्चित हत्याकांड ने इस ड्रम की छवि बदल दी.मुस्कान नाम की महिला ने अपने प्रेमी साहिल के साथ मिलकर अपने पति सौरभ की हत्या की.शव को टुकड़ों में काटकर एक नीले ड्रम में गीले सीमेंट के साथ छिपा दिया गया.इस खौफनाक घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया सोशल मीडिया पर इसे "नीले ड्रम का आतंक" नाम दिया गया.

*** लुधियाना की एक और घटना:**

लुधियाना की एक और घटना से डर की परत और गहरी हुई. पंजाब के लुधियाना में भी हाल ही में एक नीले ड्रम में रस्सी से बंधा शव मिला.

लोगों ने इसे सीधे मेरठ कांड से जोड़ते हुए सोशल मीडिया पर साझा किया. "नीले ड्रम का आतंक" फिर ट्रेंड करने लगा.

*** बाजार पर असर: नीला ड्रम अब नहीं बिकता**

इन घटनाओं ने बाजार को भी प्रभावित किया.बिहार के अमित कुमार ने बताया कि जहां पहले 40—50 ड्रम प्रति माह बिकते थे, अब बिक्री घटकर 15 रह गई.

व्यापारी शाहनवाज और मोहम्मद नदीम बताते हैं, "लोग अब नीले ड्रम लेने से कतराते हैं.खरीदार अब अन्य रंगों के ड्रम पसंद करने लगे हैं ताकि मजाक और शक से बच सकें.

*** सोशल मीडिया: मजाक, मीम और मनोवैज्ञानिक प्रभाव**

सोशल मीडिया ने इस डर को और गहरा किया.मीम्स और रील्स ने नीले ड्रम को एक डरावने प्रतीक में बदल दिया.गांव-गांव तक इन घटनाओं की भयानक कहानियां फैलीं.कुछ लोगों ने इसे अपराध और हास्य का मिश्रण बनाकर वायरल किया, जिससे मजाक के डर से भी लोग नीले ड्रम लेने से बचने लगे.

*** सामाजिक प्रतिक्रिया: डर और सवाल**

लोग अब ड्रम को सिर्फ एक बर्तन के रूप में नहीं देखते बल्कि उसमें छिपे अपराध की आशंका जोड़ने लगे हैं.

* पटना के एक दुकानदार राजकुमार कहते हैं "लोगों ने इस मुद्दे को मजाक और डर का रूप दे दिया है. असल में हमें अपराध रोकथाम और सामाजिक सुरक्षा पर गंभीर चर्चा करनी चाहिए."

*** मजदूरों की मन:स्थिति: खुशी से खौफ तक**

सबसे अधिक प्रभावित वे मजदूर हैं जो इन ड्रमों को फैक्ट्री से घर लाते थे.पहले उनके लिए यह जरूरी और घर के काम का साधन था.अब वही ड्रम शक और डर की वजह बन गया है.

यात्रा में भी मजदूर इन ड्रमों के साथ असहज महसूस करते हैं, कहीं लोग गलत धारणा न बना लें.

*** आर्थिक और मनोवैज्ञानिक असर**

ड्रम विक्रेताओं की बिक्री प्रभावित हुई. लोग ड्रम को अपराध से जोड़कर देखने लगे. हास्य और भय का मिला-जुला माहौल, जो गंभीर अपराधों पर चर्चा को हल्के में ले जाता है.

मेरठ और लुधियाना की घटनाएँ सिर्फ क्राइम न्यूज नहीं रहीं. उन्होंने एक साधारण बर्तन को आपराधिक प्रतीक बना दिया.

इसका असर बाजार से लेकर लोगों की मानसिकता तक पर पड़ा है.

संघ गली अति सांकरी जामे धनखड़हुं न समाय!

(आलेख : बादल सरोज)

हाल के दौर — विशेषकर २014 के बाद से संवैधानिक शासन प्रणाली में पतझड़ की जो बहार आई है, उसने सत्ता के चारों-आठों अंगों की ऐसी शल्यक्रिया की है कि शीराजा बिखरता ही चला जा रहा है। संघीय ढाँचे को तार-तार किया गया, हर संभव-असंभव तिकड़म से लोकतंत्र का अपहरण किया गया, न्याय पालिका को मातहत बनाने की सारी लज्जा और मान-मर्यादा लांघ कर जी-तोड़ कोशिशें की गयीं, सेना तक को नहीं बख्शा गया, चौथा खम्भा माने जाने वाले मीडिया का खम्भा ही उखाड़ कर उसे अस्तबल में खूंटे से बांध लिया गया। शुरुआत शुरु से ही, मतलब ठीक ऊपर से हुई। संवैधानिक पदों का तो जैसे मखौल ही बना दिया। उनका जितना बेहिसाब अवमूल्यन और क्षरण किया गया, वह इन पदों पर बैठे किसी भी आत्मसम्मान वाले व्यक्ति के लिए बर्दाश्त के बाहर होता — मगर असाधारण अपमान सहनशक्ति और स्वाभिमान विहीन प्रजाति के व्यक्ति भी तैयार कर लिए गए। इस दौरान सम्प्रभु, लोकतान्त्रिक गणराज्य के 'हम भारत के लोगों' ने अत्यंत चौंकाने और काफी हद तक डराने वाले नज़ारों को देखा ; प्रधानमंत्री के आगे हाथ जोड़े, सर झुकाए देश के सर्वोच्च मुखिया राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति देखे, चारण मुद्रा में प्रशस्ति गान गाते सुप्रीम कोर्ट के जज देखे, कार्यपालिका के आगे लंबलेट होते बोबडे, गुसाईं, दीपक और अडानी मिश्रा और अपने घर में आरती उतारते, घंटरिया बजाते चंद्रचूड़ जैसे चीफ जस्टिस देखे। विपक्ष पर बमकते, गुर्राते और गरजते और हुक्मरानों के सामने मिमियाते, रिरियाते संसद, विधानसभाओं के सभापति और अध्यक्ष देखे । राजभवनों को कुटिल साजिशों के अन्त:पुर और संघीय प्रणाली के मूल्यों की परंपरा के लाक्षागृह बनाते उनमें बैठ फुफकारते राज्यपाल देखे। नालबद्ध से नालीबद्ध में बदलती नौकरशाही देखी। अच्छे दिनों के कौतुक और सुबह उठने से पहले बैंक खाते में 15 लाख रूपये जाने के एक ज़रा से जुमले के लोभ में क्या-क्या नहीं देखना पड़ा इस देश को!!

बहरहाल इस सबके बाद भी जगदीप धनखड़ को इस तरह धकियाये जाते हुए देखने की नौबत आ जायेगी, यह उनके बड़े से बड़े विरोधियो ने भी नहीं सोचा होगा। कोई सोचता भी तो क्यों और कैसे ? ऊपर गिनाये महामहिम अगर महाराज के कमरबंध में जड़े हीरे और रतन थे, तो धनखड उन नवरत्नों में भी कोहिनूर थे। ऐसा कोई काम नहीं, जो उन्होंने अपनी सारी संवैधानिक हैसियत को गिराते हुए, किया न हो ; मर्यादाओ से फिसलने की ऐसी कोई नीचाई नहीं थी, जिसे उन्होने छुआ न हो। पश्चिम बंगाल का राज्यपाल रहते हुए जिस तरह की हरकतें उन्होने की, वे इसकी एक मिसाल हैं ; जो कुछ उन्होंने राजभवन में बैठकर कहा, उनमें से बहुत कुछ ऐसा भी था, जो जिस पार्टी — भाजपा — के भक्त के रूप में वे कह रहे थे, तब तक उस पार्टी के नेता और प्रवक्ता भी कहने की जुर्रत नहीं कर रहे थे। वे बैठे किसी भी भवन में हों, एजेंडा उनका सत्तापार्टी का निर्लज्ज अनुगमन और अपने संवैधानिक पद की हर सीमा तक उल्लंघन ही रहा। उनकी इसी 'योग्यता' के चलते प्रधानमंत्री मोदी की निजी पसंद पर उन्हें उपराष्ट्रपति बनाया गया, ताकि राज्यसभा के पदेन सभापति के रूप में उनकी इस विलक्षण एजेंडाधारी योग्यता को विपक्ष और संविधान के लिए डंडाधारी के रूप में काम लाया जा सके। वही हुआ भी। जिन्होंने हाल के समय में संसद के दोनों सदनों की कार्यवाहियों को देखा है, वे जानते हैं कि दोनों सदनों के पीठासीन अधिकारियों ने लोकतंत्र के इन दोनों सर्वोच्च मंचों का क्या हाल किया है। जगदीप धनखड़ ऊपरी सदन के मुखिया थे, इसलिए इसमें भी ऊपर रहने, इक्कीस ही रहने की कोशिश में रहे। भले उसके लिए राज्यसभा जैसे सदन की गरिमा धूल में क्यों मिलानी पड़ी हो। सिर्फ इतना ही नहीं, राज्यसभा के सभापति रहते हुए उन्होंने इतना सब किया ही नहीं, सदन के मंच पर आरएसएस की प्रशंसा में वह सब तक कहा, जिसे कहने का साहस अटल बिहारी वाजपेयी से लेकर अडवानी तक, यहाँ तक कि 'स्वयंसेवक' प्रधानमंत्री मोदी भी अब तक नहीं कह पाए थे।

पिछली साल 31 जुलाई को उन्होंने धर्मनिरपेक्ष सविधान की धज्जियां उड़ाते हुए राज्य सभा में यहां तक कह डाला था कि "आरएसएस की आलोचना करना संविधान के खिलाफ है।" समाजवादी पार्टी के सांसद रामजीलाल सुमन द्वारा यूपीएससी और बाकी सरकारी निकायों में आरएसएस के लोगों को भरे जाने की बात कहे जाने पर बिफरते हुए कहा कि उनकी टिप्पणी रिकॉर्ड में नहीं जाएगी, क्योंकि "आरएसएस एक ऐसा संगठन है, जिसकी साख पर कोई सवाल नहीं उठता।" धनखड़ ने कहा, "मैंने इस सदन में जोर देकर कहा है कि आरएसएस की साख बेदाग है।" आरएसएस की स्तुति और चरण वन्दना में वे यहीं तक नहीं रुके, उन्होंने इसे जो संघी खुद भी नहीं मानते, वह बता दिया और उसे "सर्वोच्च स्तर का वैश्विक थिंक-टैंक" तक करार दिया। अपनी इस प्रशस्ति को सदन के रिकॉर्ड का हिस्सा बनाते हुए बाकी कुछ भी रिकॉर्ड में दर्ज नहीं किये जाने का आदेश भी सुना दिया। जब उन्हें बताया गया कि सदन अपने नियमों से चलता है, तो पेशे से वकील रहे और इस नाते क़ानून के ज्ञाता माने जाने वाले महामहिम सभापति — सह-उपराष्ट्रपति ने भविष्य में भी कोई संघ पर टिप्पणी न कर सके, इसके लिए नया नियम ही बना डाला। राज्यसभा के रिकॉर्ड के मुताबिक़ सभापति की आसंदी से उन्होने कहा कि "मैं यह नियम बनाता हूं कि आरएसएस एक ऐसा संगठन है, जिसे इस राष्ट्र की विकास यात्रा में भाग लेने का पूरा संवैधानिक अधिकार है। इस संगठन की साख बेदाग है और इसमें ऐसे लोग शामिल हैं, जो निस्वार्थ भाव से राष्ट्र की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस संगठन के किसी सदस्य के राष्ट्र की विकास यात्रा में भाग न लेने पर आपत्ति जताना नियमों के विरुद्ध है। इसलिए मैं सदस्य को यह मुद्दा उठाने की अनुमति नहीं देता।" इससे पहले भी वे एक कार्यक्रम में कह चुके थे कि "वे पिछले २५ वर्षों से आर एस एस के प्रशंसक रहे हैं।" उन्होंने खुद की तुलना एकलव्य से की , जो समर्पण का प्रतीक है और अफ़सोस जताया कि संघ से औपचारिक रूप से नहीं जुड़ पाए। संसदीय लोकतंत्र और पद की गरिमा को दागदार करने वाली इतनी 'शानदार' सेवा पुस्तिका के बाद भी इस तरह से धकिया के बाहर खदेड़ दिया जाना — भले धनखड़ के साथ ही क्यों न हुआ हो — सवाल तो पैदा करता है। एक तो इसलिए कि जितनी शिद्दत से उन्होंने वफादारी दिखाई थी, उतनी इज्जत से उन्हें निकाला नहीं गया। व्यक्ति के हिसाब से भी यह अनुचित है। हालांकि यदि वह देश के दूसरे सबसे बड़े संवैधानिक पद पर बैठा हो, तो व्यक्ति की गरिमा का सवाल गौण हो जाता है, सवाल उस पद की गरिमा और इस तरह देश की गरिमा का हो जाता है। यूँ भी खुल्द से आदम का निकलना काल्पनिक प्रसंग है, बेआबरू करके निकाल जाने का पैमाना तो धनखड़ बन गए। कहते हैं कि न उनका विदाई भाषण होगा, न कोई प्रेस कांफ्रेंस करने की 'इजाजत' दी गयी है। न किसी ने हमदर्दी दिखाई, न इतनी सारी सेवा का व्यवहार चुकाते हुए कोई शाब्दिक सुश्रुषा ही की। ख़बरें तो यहाँ तक आयीं कि उस दिल्ली में, जिसमे सेवानिवृत्ति के बाद छह-आठ महीने तक पुराने मकान में रहने की मोहलत सरकारी कर्मचारी तक को मिल जाती है, उस दिल्ली में उपराष्ट्रपति भवन के रूप में मिला घर भी आनन-फानन में खाली कराने की चेतावनी दे दी गयी। वह भी तब, जबकि अभी कोई नया उपराष्ट्रपति भी नहीं बना है, जिसे मकान की दरकार हो, जबकि नए चीफ जस्टिस के पदभार संभाले महीनों गुजर जाने के बाद भी चन्द्रचूड़ हिलने तक को तैयार नहीं है। कुछ खबरों के मुताबिक़ तो देर रात इस्तीफा 'मंजूर' होते ही सरकारी रसोई भी बंद कर दी और कुछ घंटों पहले तक जो महामहिम थे, उन्हें सर्वेंट क्वार्टर्स से मंगाए खाने पर गुज़ारा करना पड़ा। इन सब खबरों में कितना सच है, कितनी गप्प, यह बाद में कभी लिखे जाने वाले संस्मरणों में — अगर वे लिखने और छपने दिए तो — पढ़ने में या कभी धनखड़ बोले, तो सुनने में आये या शायद न भी आये। फिलहाल जितना आया है, वह ही कम नहीं है ; सूत्र बताते हैं कि पहले दिन में राज्यसभा की चलती मीटिंग में सांसद और भाजपा अध्यक्ष जे पी नड्डा ने विपक्षियों की कही एक भी बात रिकॉर्ड में न लेने का एलान किया और धनखड़ टुकुर-टुकुर ताकते रहे। उसके बाद देर रात तक एक-एक करके वे तीन मंत्री, जो दो दिन से स्थगित हो रही राज्यसभा की कार्यमंत्रणा बैठक — बिजनेस एडवाइजरी मीटिंग -- में नहीं पहुंच रहे थे, वे उनके घर पहुंचे, उन्हें इस्तीफे के लिए समझाया -- कुछ के मुताबिक़ हड़काया — अंत में उनके हाथ में लिखा-लिखाया, उन्ही के पैड पर छपा-छपाया उन्हीं का इस्तीफा थमा दिया गया। बस दस्तखत करने का काम शेष था, सो उन्होंने कर दिए। जो लाया था, वही गाड़ी रिवर्स करके सीधे राष्ट्रपति भवन पहुंचा और रिकॉर्ड फुर्ती के साथ मंजूरी का बयान जारी हो गया।

घटना असाधारण है, भारत के संसदीय इतिहास में पहली है, इसलिए कारणों को लेकर कयास और अनुमान लगाया जाना स्वाभाविक है। बताते हैं कि इस बार उपराष्ट्रपति सभापति के नाते कुछ नियमों पर चलने का मन बना रहे थे। सदन की कार्यवाही चलाने को लेकर विपक्षी सांसदों के साथ उनकी बातचीत, जिसे करना उनका काम भी है, जिम्मेदारी भी है, चल रही थी। इन्हें लेकर दो दिन पहले ही खुद मोदी एक सार्वजनिक आयोजन में धनखड़ के फर्शी सलाम के जवाब में 'आजकल बहुत मीटिंग-मीटिंग खेल रहे हैं' का ताना मार चुके थे। पहलगाम और सिन्दूर पर चर्चा टाली भी कैसे जा सकती थी। मगर असल मुद्दा बना इलाहाबाद और दिल्ली हाईकोर्ट के दो जजों के खिलाफ महाभियोग का मामला। भारतीय संविधान में न्यायपालिका की स्वतन्त्रता को बनाए रखने के लिए न्यायाधीशों को हटाये जाने की एक प्रक्रिया निर्धारित की गयी। इसके मुताबिक़ संसद में महाभियोग लाकर ही उन्हें हटाया जा सकता था। इन दो जजों के खिलाफ महाभियोग आ चुके थे, जिनमें से एक को विचार करने तथा दूसरे को सदन में रखने के लिए सभापति के नाते धनखड़ मंजूर कर चुके थे। मोदी और कुनबे का इरादा उन्हें लोकसभा में रखवाने का था, ताकि लोकसभा अध्यक्ष के जरिये उन्हें तकनीकियत का शिकार बनाया जा सके। धनखड़ की यही बात उन्हें नागवार गुज़री और माननीय जज अभी तक माननीय बने हुए हैं, धनखड़ अमान्य और असम्माननीय हो गए। याददिहानी के लिए बता दें कि दिल्ली हाई कोर्ट के जज न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा वे हैं, जिनके घर में लगी आग बुझाने जब फायर ब्रिगेड पहुंची, तो उसे एक कमरा सैकड़ों करोड़ रुपयों के नोट से अटा-पटा मिला। उनके घर से भारी मात्रा में नकदी बरामद हुई थी। कई बोरियों में जले और अधजले बड़े नोट्स भी जब्त किये गए थे। इस घटना ने सुप्रीम कोर्ट के कॉलेजियम को भी तत्काल कदम उठाने पर मजबूर कर दिया था। विपक्ष इन पर महाभियोग के लिए हस्ताक्षर इकट्ठा करके राज्यसभा के सभापति के पास पहुंचा था। यह पैसा किसका था, इसे लेकर जब तक सच्चाई सामने न आये, तब तक सिर्फ अनुमान ही लगाए जा सकते हैं।

दूसरे जज इलाहाबाद हाईकोर्ट के जस्टिस शेखर यादव थे, जिन्होंने विश्व हिन्दू परिषद के आयोजन में जाकर खुल्लमखुल्ला कहा था कि उन्हें "ये कहने में बिल्कुल गुरेज नहीं है कि ये हिंदुस्तान है। हिंदुस्तान में रहने वाले बहुसंख्यकों के अनुसार ही देश चलेगा। यही कानून है। आप यह भी नहीं कह सकते कि हाई कोर्ट के जस्टिस होकर ऐसा बोल रहे हैं। कानून तो भइया बहुसंख्यक से ही चलता है। परिवार में भी देखिए, समाज में भी देखिए। जहां पर अधिक लोग होते हैं, जो कहते हैं, उसी को माना जाता है।" इसी प्रवचन में उन्होंने ये भी कहा कि "कठमुल्ले' देश के लिए घातक हैं।"

धनखड़ भूल गए कि 'संघ गली अति सांकरी जा में दो न समाय' का ज़माना है ; बिना मोदी की मर्जी और अनुमति के जिस सरकार और पार्टी में पत्ता तक नहीं खड़कता, उसमें महाभियोग चलाने की इजाजत देना कैसे स्वीकार किया जा सकता है। सर्वसत्तावाद की अति के इस दौर में अपने विवेक और मति के इस्तेमाल की सख्त मनाही है। यह बात जब बाकी सब को पता है, तो उन्हें तो खासकर मालूम होनी ही चाहिए थी।

यहाँ सवाल सिर्फ व्यक्ति धनखड़ या उनके किये-धरे का नहीं है — यहाँ सवाल संसदीय लोकतंत्र पर मंडरा रहे तानाशाही के घने, गहरे और आशंकाओं से भरे मेघों का है। तत्कालीन उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी के विदाई भाषण में असभ्य और अभद्र तानाकशी और उनकी मुस्लिम पृष्ठभूमि और विदेश सेवाओं में तैनाती का हवाला देकर स्वयं मोदी द्वारा की गयी कुटिल साम्प्रदायिक टिप्पणी आज भी भारत के संसदीय इतिहास में एक शर्मनाक अध्याय है। राज्यसभा में अंसारी को विदाई देते हुए अपनी विषाक्त टिप्पणी में मोदी ने कहा था कि "हो सकता है कि कार्यकाल के दौरान उनके अंदर कुछ छटपटाहट रही हो, लेकिन यह संकट आज के बाद नहीं रहेगा।" सीधे-सीधे सांप्रदायिक टिप्पणी करते हुए यह भी कहा था कि "आपके कार्यकाल का बहुत सारा हिस्सा वेस्ट एशिया से जुड़ा रहा है बतौर डिप्लोमैट। उसी दायरे में जिंदगी के बहुत सारे आपके वर्ष गए। उसी माहौल में, उसी सोच में, उसी डिबेट में ऐसे लोगों के बीच रहे। वहां से रिटायर होने के बाद भी ज्यादातर काम वही रहा, चाहे माइनॉरिटी कमीशन हो या अलीगढ़ यूनिवर्सिटी हो। ... लेकिन ये 10 साल पूरी तरह एक अलग तरह का जिम्मा आपके पास आया... हो सकता है कुछ छटपटाहट रही होगी आपके अंदर भी, लेकिन आज के बाद शायद आपको वैसा संकट नहीं रहेगा... मुक्ति का आनंद भी रहेगा... और अपने मूलभूत जो सोच रही होगी, उसके अनुसार कार्य करने, सोचने का और बात बताने का अवसर भी मिलेगा।" ध्यान रहे कि राज्यसभा के पदेन सभापति होने के नाते खुद हामिद अंसारी इस दौरान सदन का संचालन कर रहे थे। जो उस समय खामोश थे — वे आज इस उपराष्ट्रपति के अपमान के समय सकते में हैं। मगर न ख़ामोशी कारगर होती है, न ही सिर्फ चौंकना भर ही काफी होता है ; इस पूरे काण्ड में सिर्फ एक ही बात सही है और वह यह कि "स्वास्थ्य खराब है", मगर उन जगदीप धनखड़ का नहीं, जिनका बताया गया है — भारत के लोकतंत्र की सेहत खराब है। बिहार में एसआईआर — सर — के नाम पर जो सुरसुरी दिख रही है, वह इसी का एक लक्षण है, समग्रता में यह बीमारी कहीं ज्यादा सांघातिक है।

संसदीय लोकतंत्र पर झपटते सांड को सींग से पकड़ना होता है। अनेक विपक्षी दलों ने धनखड़ काण्ड को इसी तरह से लिया है। इसमें निहित आशंकाओं को जनता के बीच भी उसी तरह ले जाना होगा। इसलिए कि लोकतंत्र किसी से मिला नहीं है, उसे लड़कर हासिल किया गया है। इसे और समावेशी बनाना है, तो पहले इसे बचाना होगा और यह काम भी लड़कर ही किया जा सकता है।

(लेखक 'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।

अमेरिका का टैरिफ दबाव नहीं सहेगा भारत !

'टैरिफ मैन' अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारत पर 25% टैरिफ की घोषणा के बाद इसे 7 दिन के लिए टाल दिया है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ये 1 अगस्त 2025 से लागू होना था, जो अब 7 अगस्त 2025 से लागू होगा। पाठकों को बताता चलूं कि ट्रम्प ने हाल ही में यानी कि 31 जुलाई 2025 को ही भारत पर 25% टैरिफ लगाने की घोषणा की थी तथा अभी तक अमेरिका भारत पर 10% बेसलाइन टैरिफ लगा रहा था। हैरानी की बात है कि अमेरिका ने यहां तक कहा है कि वो भारत के रूस से हथियार और तेल खरीदने पर जुर्माना भी लगाएगा, लेकिन भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने इसके प्रतिउत्तर में यह बात कही है कि वह ट्रंप की टैरिफ की इस घोषणा के प्रभावों को देखते हुए और राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए सभी जरूरी व आवश्यक कदम उठाएंगे। पाठकों को बताता चलूं कि ट्रंप का भारत पर यह टैरिफ स्टील, एल्यूमीनियम, ऑटोमोबाइल, टेक्सटाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स और ज्वेलरी जैसे क्षेत्रों को प्रभावित कर सकता है। बहरहाल,यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि ट्रम्प ने 91 देशों पर नए टैरिफ की एक सूची जारी की है। इसमें भारत पर 25% और पाकिस्तान पर 19% टैरिफ लगाया गया है। हालांकि, अमेरिकी देश कनाडा पर 1 अगस्त 2025 से ही 35% टैरिफ लागू हो गया है। गौरतलब है कि दक्षिण एशिया में सबसे कम टैरिफ पाकिस्तान पर लगा है। गौरतलब है कि अमेरिका ने पहले पाकिस्तान पर 29% टैरिफ लगा रखा था। वहीं, दुनियाभर में सबसे ज्यादा 41% टैरिफ सीरिया,लाओस और म्यांमार पर 40 प्रतिशत, स्विट्जरलैंड पर 39 प्रतिशत, तथा इराक और सर्बिया पर 35 प्रतिशत टैरिफ लगाया गया है।जानकारी के अनुसार इस लिस्ट में चीन का नाम शामिल नहीं है। गौरतलब है कि डोनाल्ड ट्रम्प ने 2 अप्रैल 2025 को दुनियाभर के देशों पर टैरिफ लगाने की घोषणा की थी, लेकिन 7 दिन बाद ही इसे 90 दिनों के लिए टाल दिया था और कुछ दिनों बाद ट्रम्प ने 31 जुलाई तक का समय दिया था। इसके बाद ट्रम्प सरकार ने 90 दिनों में 90 सौदे कराने का टारगेट रखा था।यह बात अलग है कि अमेरिका का अब तक सिर्फ 7 देशों से समझौता हो पाया है। यहां पर यदि हम एशियाई देशों की बात करें तो इनमें क्रमशः चीन पर 30 प्रतिशत, भारत और कजाकिस्तान पर 25 प्रतिशत, वियतनाम पर 20 प्रतिशत, थाइलैंड और आस्ट्रेलिया पर 19 प्रतिशत तथा इराक,तुर्किए, जापान तथा दक्षिण कोरिया पर 15 प्रतिशत टैरिफ लगाया गया है। यूरोपीय देशों में यूरोपीय यूनियन, स्विट्जरलैंड और नार्वे पर 15 प्रतिशत तथा ब्रिटेन पर 10 प्रतिशत टैरिफ लगाया गया है। बहुत बड़ी बात है कि डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिकी देशों कनाडा, ब्राजील,गयाना, मेक्सिको, कोलंबिया और अर्जेंटीना तक को भी नहीं बख्शा है। अफ्रीकी देशों की यदि हम यहां पर बात करें तो इनमें लीबिया, साउथ अफ्रीका, और अल्जीरिया पर 30 प्रतिशत तथा मेडागास्कर पर 15 प्रतिशत टैरिफ लगाया गया है। बहरहाल, यहां प्रश्न यह उठता है कि आखिर अमेरिका ने भारत पर इतना बड़ा टैरिफ क्यों लगाया है ? तो इसकी अनेक वजहें हैं। पहला तो यह कि अमेरिका यह चाहता है कि भारत उसके डेयरी प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करें। लेकिन जैसा कि अमेरिका के डेयरी उत्पादों में जानवरों की हड्डियों से बने एंजाइम का इस्तेमाल होता है। इसलिए भारत को धार्मिक-सामाजिक वजहों से इसे लेकर आपत्ति है।दूसरी बड़ी वजह भारत की ट्रम्प की टैरिफ पॉलिसी पर असहमति है।भारत अमेरिका द्वारा लगाए जाने वाले रेसिप्रोकल टैरिफ पर असहमत है।भारत स्टील, एल्यूमीनियम, और ऑटो पार्ट्स पर पहले से लागू अमेरिकी टैरिफ में भी छूट दिए जाने की मांग कर रहा है। इतना ही नहीं,भारत यह चाहता है कि उसके कपड़ा, गहने, चमड़ा और प्लास्टिक इंडस्ट्री को अमेरिकी मार्केट में ज्यादा से ज्यादा स्थान मिले।एक अन्य कारण यह भी है कि भारत अपने आर्थिक हितों को लेकर काफी सजग और सतर्क है।इधर, ट्रंप के भारत पर भारी टैरिफ के बीच हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डोनाल्ड ट्रम्प को संदेश देते हुए यह बात कही है कि वे 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देंगे। दरअसल, उन्होंने (प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने) साफतौर पर यह कहा है कि-' वे वही चीजें खरीदेंगे जिनमें किसी भी भारतीय का पसीना बहा हो।' कहना ग़लत नहीं होगा कि प्रधानमंत्री जी ने 'वोकल फॉर लोकल मंत्र'(स्वदेशी अपनाओ की बात)को अपनाने की बात कहकर एक प्रकार से अमेरिका को तगड़ा संदेश दे दिया है कि अब भारत किसी भी हाल और परिस्थितियों में अमेरिका के दबाव में आने वाला नहीं है और वह अपनी आर्थिक व व्यापारिक नीतियों के लेकर बहुत ही सतर्क व सजग है। कहना ग़लत नहीं होगा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का यह बयान ट्रंप के भारतीय सामान पर 25% टैक्स लगाने के जवाब के तौर पर देखा जा रहा है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'वोकल फॉर लोकल मंत्र' की बात शनिवार 2 अगस्त 2025 को इस समय कही जब वे वाराणसी के बनौली गांव में एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि-'आज दुनिया की अर्थव्यवस्था कई आशंकाओं से गुजर रही है।अस्थिरता का माहौल है। दुनिया के सभी देश अपने-अपने हितों पर ध्यान केंद्रित कर रहे है। भारत दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। अब भारत को भी अपने आर्थिक हितों को लेकर सजग रहना होगा। किसान, हमारे लघु उद्योग और रोजगार हमारे लिए सर्वोपरि है। सरकार इस दिशा में हर प्रयास कर रही है।' इस दौरान उन्होंने आमजन से यह आह्वान किया कि अब त्योहार आएंगे, दिवाली आएगी, ऐसे

में हम स्वदेशी ही खरीदें। उन्होंने कहा कि भारत में ही शादी करें, 'स्वदेशी का भाव' भारत का भविष्य तय करेगा और यह हम देशवासियों की महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि होगी।अपने 53 मिनट के भाषण के अंतिम छह मिनट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'भारत की अर्थव्यवस्था और स्वदेशी' का जिक्र किया तथा इस दौरान उन्होंने 11,00 करोड़ रुपए की 52 योजनाएं भी लॉन्च की। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि चीन पर ऊंचे टैरिफ के बाद अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 1 अगस्त से भारत पर जो 25 फीसदी आयात शुल्क लगाने के साथ ही रूस से सैन्य उपकरण और कच्चा तेल खरीदने पर भी जुर्माना लगाने की बात कही है, यह ट्रंप की सरासर मनमानी ही कही जा सकती है। दरअसल, ट्रंप की भारत के प्रति यह शिकायत रही है कि भारत ग्लोबल ट्रेड में अत्यंत कठोर नीतियों का पालन करता है। निश्चित ही इसका व्यापक असर दोनों देशों के संबंधों पर पड़ेगा।कटु सत्य तो यह है कि अमेरिका आर्थिक-सामरिक रूप से भारत के साथ नहीं बल्कि पाकिस्तान के साथ खड़ा है। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार रहा है। ऐसे में अब भारतीय कंपनियों को सोच-समझकर तथा बहुत संभलकर अपने लिए नये बाजार खोजने होंगे और आगे बढ़ना होगा। हालांकि, यह भी एक कड़वा सच है कि अपने ट्रेड वॉर(टैरिफ वार) में अब ट्रंप पूरी तरह से विफल नजर आ रहे हैं और भारत के कड़े रुख से झल्लाकर डोनाल्ड ट्रंप जहां एक ओर बेतुके बयान दे रहे हैं वहीं दूसरी ओर वे हड़बड़ाहट में फैसले ले रहे हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि देखा जाए तो यह एक प्रकार से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की आर्थिक, राजनैतिक और कूटनीतिक स्तर पर विफलता ही कही जा सकती है।इस क्रम में 02 अगस्त 2025 शनिवार को ही राष्ट्रपति ट्रंप ने यह दावा किया कि उन्होंने भारत की ओर से रूसी तेल आयात रोकने की खबरें सुनी हैं और इसे एक अच्छा कदम बताया है। वास्तव में सच तो यह है कि हकीकत इससे बिल्कुल परे है। पाठकों को बताता चलूं कि भारत की सरकारी और गैर-सरकारी तेल रिफाइनरी कंपनियों ने न तो रूसी सस्ता तेल खरीदना ही बंद किया है और न ही इस तरह का कोई विचार ही जाहिर किया है।दरअसल, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक समाचार एजेंसी के हवाले से यह बात कही है कि-' उन्होंने भारत द्वारा रूसी तेल खरीदना बंद करने की बात सुनी है। मैं समझता हूं कि भारत अब रूस से तेल नहीं खरीदेगा। मुझे नहीं पता कि यह सही है या नहीं। यह एक अच्छा कदम है। हम देखेंगे कि आगे क्या होता है।' गौरतलब है कि ट्रंप के बयान के कुछ ही समय बाद दिल्ली में सरकारी सूत्रों ने उनके इन दावों(रूस से तेल न खरीदने के दावों) को खारिज कर दिया तथा इस बात की पुष्टि की कि भारत का ऊर्जा आयात बाजार की ताकतों और राष्ट्रीय हित से प्रेरित है। पाठकों को बताता चलूं कि सरकार ने इससे पहले भी शुक्रवार को भी स्थिति स्पष्ट कर दी थी कि देश की ऊर्जा खरीद बाजार की ताकतों और राष्ट्रीय हितों से प्रेरित है और उन्हें भारतीय तेल कंपनियों द्वारा रूसी आयात रोकने की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि हड़बड़ाहट में किए फैसले में ट्रंप ने श्रम सांख्यिकी ब्यूरो(रोजगार के आंकड़े जारी करने वाली संस्था) की प्रमुख एरिका मैकएंटार्फर(अमेरिका की श्रम शास्त्री)को बर्खास्त करने के निर्देश दिए हैं। दरअसल, इस एजेंसी ने अपनी एक रिपोर्ट में यह कहा था कि बेरोजगारी दर बढ़ गई है।इसके बाद ट्रंप ने यह कहा कि राजनीतिक कारणों से ऐसी रिपोर्ट दी जा रही है। उल्लेखनीय है कि एरिका को बाइडन काल में नियुक्त किया गया था। वास्तव में, डोनाल्ड ट्रंप ट्रेड डील में भारत के कड़े रुख, टैरिफ नीति के अनुकूल परिणाम नहीं आने और रूस-यूक्रेन युद्ध समाप्त करवाने में विफलता से हैरान हैं। भारत सरकार ने वस्तु विशेष पर टैरिफ तय करने पर अपना जोर रखा, जो ट्रंप को पसंद नहीं आया। इतना ही नहीं, भारत कृषि व डेयरी उत्पाद के लिए भी भारतीय बाजार खोलने पर राजी नहीं हुआ और भारत ने अमेरिका से एफ-35 लड़ाकू विमान खरीदने में भी अपनी रुचि नहीं दिखाई। और तो और भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' रुकवाने के ट्रंप सरकार के दावे को भी सिरे से खारिज कर दिया। आश्चर्यजनक है कि पहले पुतिन को दोस्त बताने वाले ट्रंप अब उनकी ही कड़ी आलोचना कर रहे हैं। पूर्व रूसी राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव के बयान के बाद ट्रंप ने दो न्यूक्लियर पनडुब्बियों को 'उचित जगह' पर तैनात होने का भी आदेश दिया।रूस हमेशा हमेशा से भारत का एक मित्र राष्ट्र रहा है और भारत के रूस के साथ संबंध बहुत अच्छे रहे हैं। अमेरिका के टैरिफ दबाव के बीच भी भारत अपने मित्र राष्ट्र रूस से तेल खरीदना जारी रखेगा, भले ही अमेरिका कितने ही कड़े प्रतिबंध भारत पर क्यों न लगाए।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

स्वच्छता कर्तव्य और पर्यावरण जीवन की डोर: मेयर राजा इक़बाल

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

दिल्ली : उत्तर पूर्वी जिला द्वारा आयोजित कार्यक्रम स्वच्छता अभियान व एक पेड़ माँ के नाम तीसरा पुस्ता रिज एरिया मे सफाई अभियान के बाद वृक्षारोपण किया गया गया। स्वच्छ दिल्ली मिशन व एक पेड़ माँ के नाम कार्यक्रम मे मेयर राजा इक़बाल जिला अध्यक्ष डॉ यू के चौधरी विधायक अजय महावर स्टैंडिंग कमेटी चेयरमैन सत्या शर्मा राज कुमार बल्लन कौशल मिश्रा कार्यक्रम संयोजक राहुल गौर पार्षद प्रमोद गुप्ता रेखा रानी मीडिया प्रभारी दीपक चौहान की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम मे बोलते हुए राजा इक़बाल ने बताया दिल्ली को स्वच्छ रखने के लिए हमें अपनी सामाजिक भूमिका को समझना पड़ेगा। भाजपा का कार्यकर्त्ता अपनी इस जिम्मेदारी के लिए प्रतिबद्ध आज बड़ी कोशिश करेंनंबर दिया थाहै। हमें पर्यावरण को संरक्षित करना है और एक पेड़ माँ के नाम जरूर लगाना है।जिला अध्यक्ष डॉ यू के चौधरी ने बताया हमारा संकल्प है कि देश को हरा भरा बनाना है और जो वृक्ष हमारे लिए प्राण वायु प्रदान करते है उनका हमे उनको संरक्षित करना है।

विधायक अजय ने स्वच्छता अभियान की प्रमुखता करते हुए बताया दिल्ली देश की नाक है और राजधानी है दिल्ली मे साफ सफाई रखना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। दिल्ली सरकार की पहल को हमें साकार करना है। दिल्ली को साफ रखना हम लोगो की नैतिक जिम्मेदारी है और हम सब मिलकर इसको साबित करेंगे।

इस कार्यक्रम मे रंजन त्यागी बृजेश सिंह सत्यपाल सिंह राजकुमार झा जगत नारायण गुप्ता हितेंद्र त्यागी सालवेंदर मिश्रा सौरभ चातक बंश पांडेय अमर राय व अपेक्षित श्रेणी के साथ साथ समस्त पदाधिकारी उपस्थित रहे।

सांसद बांसुरी स्वराज की मजूदगी में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने ग्रेटर कैलाश में जन सेवा केंद्र का उद्घाटन किया

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने ग्रेटर कैलाश में जनसेवा केंद्र का उद्घाटन किया।इस अवसर पर सांसद बांसुरी स्वराज और स्थानीय विधायक शिखा राय भी मौजूद रहीं। इस मौके पर फरीदाबाद के इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. एसएस बंसल ने कहा कि इस पहल से मरीजों को किफायती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं मिलेंगी।

स्वास्थ्य क्षेत्र में दिल्ली सरकार के प्रयासों की सराहना करते हुए डॉ. एसएस बंसल ने कहा कि सीएम रेखा गुप्ता ने स्वास्थ्य सेवाओं को प्राथमिकता दी है। पिछले चार महीनों में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं, जिनमें आयुष्मान भारत योजना का विस्तार शामिल है।

डॉ. बंसल ने बताया, ₹इस योजना के तहत, यदि सरकारी अस्पतालों में बेड उपलब्ध नहीं हैं, तो प्राइवेट अस्पतालों को सूचीबद्ध किया गया है ताकि जरूरतमंद मरीजों को तुरंत इलाज मिल सके। यह योजना दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य योजनाओं में से एक है, जो गरीब और जरूरतमंद लोगों को मुफ्त या कम खर्च में इलाज प्रदान करती है।"

सीएम ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर कहा, यह केंद्र आम लोगों की समस्याओं का त्वरित समाधान, केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी और जरूरतमंदों को सहायता प्रदान करने का प्रभावी माध्यम बनेगा। उन्होंने लिखा, ₹आज ग्रेटर कैलाश विधानसभा क्षेत्र में 'जन सेवा केंद्र' का लोकार्पण कर उसे जनसेवा के लिए समर्पित किया। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'सेवा और सुशासन' के संकल्प को साकार करते हुए आम जनता की समस्याओं के समाधान, केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी और जरूरतमंदों को त्वरित सहायता पहुंचाने का प्रभावी माध्यम बनेगा। भाजपा की डबल इंजन सरकार अंतिम पंक्ति के नागरिक तक विकास, सेवा और अधिकार समयबद्ध रूप से पहुंचाने के लिए संकल्पबद्ध है।

इस मौके पर भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज ने कहा, आयुष्मान भारत योजना की बात करें तो दिल्ली इस योजना से वंचित थी। मुझे याद है कि हमारे 7 सांसदों को दिल्ली हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ा था, लेकिन जैसे ही यहां जनता ने डबल इंजन वाली सरकार बनाई, दिल्ली में 'आयुष्मान भारत' योजना लागू हो गई। मुझे बहुत खुशी है कि प्रधानमंत्री 'मेक इन इंडिया' की बात करते हैं और इस जन सेवा में उसी को बढ़ावा दिया गया है। मैं बधाई देती हूं।

भोजपुरी भाषा को संवैधानिक मान्यता के लिए धरना सम्पन्न

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली : भोजपुरी भाषा को भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल कराने हेतु भोजपुरी जन जागरण अभियान द्वारा एक दिवसीय धरना प्रदर्शन का आयोजन डॉ संतोष पटेल के नेतृत्व में 3 अगस्त, 2025 को दिल्ली के जंतर मंतर पर किया गया। भोजपुरी जन जागरण अभियान ने इस 25वें धरना-प्रदर्शन के साथ दस वर्ष भी पूरे किए।

विदित हो कि भोजपुरी भाषा सोलह देशों में लगभग 25 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। इस भाषा को मारीशस और नेपाल में संवैधानिक मान्यता प्राप्त है। आज के हुए इस धरना की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध रचनाकार डा.गोरख प्रसाद मस्ताना ने किया। उन्होंने कहा कि भोजपुरी भाषा को अब तक मान्यता मिल जानी चाहिए परंतु लगातार राजनीति की शिकार होती आ रही है। यह भाषा बहुत ही पुरानी भाषा है। कुछ लोग इसको हिंदी की बोली बता कर संविधान में नहीं आने देना चाहते। वहीं डॉ संतोष पटेल ने कहा कि हम लगातार 6 अगस्त, 2015 से संसद के प्रत्येक सत्र में धरना कर सरकार के गृह मंत्रालय, प्रधानमंत्री

कार्यालय से मांग करते आ रहे हैं। इसके बावजूद सरकार अभी तक हम पच्चीस करोड़ भोजपुरियों की भावना को नहीं समझ रही। हमें उम्मीद है कि ये सरकार भोजपुरी को जल्द ही मान्यता देगी। वहीं सुप्रसिद्ध रचनाकार डा.पृथ्वी राज सिंह ने कहा कि हमारी आंदोलन तब तक चलती रहेगी जब तक कि सरकार हमारी बात नहीं मान लेती। हम लगातार संघर्ष करते रहेंगे। संस्था के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सी. के. भट्ट ने कहा कि अभी हम शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। अगर सरकार हमारी बात नहीं मानी तो हम सड़क पर उतरेंगे और जरूरत पड़ी तो लाखों भोजपुरियों के साथ संसद का घेराव भी करेंगे। वहीं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रमेंद्र सिंह ने कहा कि भोजपुरी को सामाजिक मान्यता तो बहुत पहले ही मिल चुकी है, लेकिन खेद की बात है कि अभी तक यह संवैधानिक मान्यता के लिए तरस रही।

इस धरना में शामिल लोगों में कोषाध्यक्ष देवेन्द्र कुमार, राष्ट्रीय समन्वयक डा.मनोज कुमार सिंह,राष्ट्रीय प्रवक्ता डा. मनोज कुमार, प्रमेन्द्र सिंह राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय संयोजक राजेश भोजपुरिया, लेट्स इंस्पायर बिहार से इंद्रमोहन,आवर मिट्टी फाउंडेशन से चंदन कुमार,धनंजय सिंह जेएनयू, जनार्दन सिंह,धमेंद्र चौहान,डॉ राजेश कुमार,श्री शंकर सिंह, श्री सी. के. भट्ट, श्री रामेश्वर महतो, श्री धनंजय सिंह, श्री रितेश राणा, श्री अमित कनौजिया, श्री संतोष यादव, श्री पंकज सिंह, मुखदेव बैठा, सोनी मंजुल चौहान, विजय लक्ष्मी उपाध्याय, प्रो पी राज सिंह, अंजलि उपाध्याय, संदीप चौहान, प्रमोद कुमार सुमन,अंतरराष्ट्रीय गायक राकेश श्रीवास्तव,राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार आर्यन कुमार, अमरजीत कुमार, रितेश सिंह राणा, शालिनी कपूर, राहुल कुमार सिंह, भाई बी के सिंह,जद यू नेता नागेन्द्र सिंह पटेल मालती राय, शारदा सिंह ,स्यंदन सुमन,डा.पुष्कर , अनिल कुमार, राकेश सिंह,लव यादव, अनिल कुमार गुप्ता, डॉक्टर मनोज कुमार, सुधीर जायसवाल, प्रवीण पंकज,हार्दिक भूषण, ओम प्रकाश समेत अनेक लोग शामिल हुए तथा सरकार से एक सूर में मांग किया कि भोजपुरी को संवैधानिक मान्यता दी जाय।--डॉ.पुष्कर, राष्ट्रीय प्रवक्ता भोजपुरी जन जागरण अभियान।

मोदी सरकार अपने एसमैन को मुख्य चुनाव आयुक्त बना रही है, जो उनके लिए ढोल बजा रहे हैं- सौरभ भारद्वाज

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। बिहार में वोटर लिस्ट का चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर मचे बवाल और मुख्य चुनाव आयुक्त की बयानबाजी पर आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने भी चुनाव आयोग पर तीखा हमला बोला है। सौरभ भारद्वाज का कहना है कि मुख्य चुनाव आयुक्त, भाजपा के किसी प्रकोष्ठ के अध्यक्ष की तरह बयानबाजी कर रहे हैं। मोदी सरकार अपने एसमैन को मुख्य चुनाव आयुक्त बना रही है, जो उनके लिए ढोल बजा रहे हैं। उन्होंने मुख्य चुनाव आयुक्त को सुझाव देते हुए कहा कि वह अपने दफ्तर में पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त टीएन शेषन की तस्वीर लगाकर सुबह-शाम देखें, ताकि उनके मन का शुद्धिकरण हो सके।

"आप" के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने मुख्य चुनाव आयुक्त के बयान की आलोचना करते हुए कहा कि मुख्य चुनाव आयुक्त इस तरह बयानबाजी कर रहे हैं, जैसे भाजपा के किसी प्रकोष्ठ के अध्यक्ष हों। मुझे लगता है कि एक बाबू को रिटायरमेंट के बाद केंद्र सरकार जिस तरह मुख्य चुनाव आयुक्त बना रही है, उससे साफ हो जा रहा है कि अपने 'यस मैन' को मुख्य चुनाव आयुक्त बना दिया। उधर उसकी रिटायरमेंट के बाद उनकी लॉटरी लग गई। उसे गाड़ी, बंगला और रुतबा मिल गया। अब वह सरकार के लिए हर जगह ढोल बजा रहा है। मुख्य चुनाव आयुक्त को पूर्व मुख्य चुना आयुक्त टीएन शेषन की तस्वीर अपने दफ्तर में लगा लेनी चाहिए और सुबह-शाम उनकी तस्वीर देखनी चाहिए। मुझे लगता है, इससे उनके विचारों में थोड़ा शुद्धिकरण होगा।

व्यंग्य : फोन नंबर अनंत, फोन कथा अनंता

मोहन मंगलम

करीब चार दशक पहले का जमाना। गांव का माहौल। उस समय मेरी उम्र कोई आठ-दस साल रही होगी। तब दादीजी से मिलने कभी-कभार पड़ोस की एक बूढ़ी अम्मा आया करती थीं। जब मैं उनके पैर छूता तो वे अपने चांदी सरीखे सफेद बालों में से दो-चार बाल नोचकर मेरे सिर पर रख देतीं और कहतीं- "लखिया होअऽ" यानी लाख वर्ष जीओ।

अक्षर बोध से बिल्कुल अनजान मगर व्यावहारिक ज्ञान से परिपूर्ण इन वृद्धाओं की गिनती बीस से आगे नहीं बढ़ पाती थी। रोजमर्रा के जीवन में कामकाज के दौरान गिनते समय कोई वस्तु जब बीस से अधिक हो जाती तो वे एक बीस, दो बीस के हिसाब से काम चलातीं लेकिन ममता और आशीर्वाद का खजाना लुटाने में वे गिनती की किसी सीमा का ध्यान नहीं रखती थीं।

ऐसी ही एक अन्य दादीजी मेरे किशोरावस्था के दौरान आशीर्वाद देतीं - "भगवान जल्दी तुम्हें एक रोटपकाई (भोजन पकाने वाली पत्नी) दें।" मगर, अफसोस, केवल आशीर्वाद से कुछ नहीं होता। खुद का प्रारब्ध भी तो कोई चीज होती है ! तभी तो मेरे हमउम्र किसी मित्र की शादी मैट्रिक की परीक्षा देने के बाद रिजल्ट आने से पहले ही हो गई तो कोई इंटरमीडिएट और ग्रेजुएशन करते-करते एक से दो हो गया। वहीं मुझे यूनिवर्सिटी की पढ़ाई पूरी करने के बाद भी कई वर्षों तक अपनी 'रोटपकाई' का इंतजार करना पड़ा। आखिरकार जब अपना नंबर आ ही गया तो राज खुला कि पत्नी केवल रोटी ही नहीं पकाती, जब अपने पर आ जाए तो दिमाग भी पकाती है। ... और मूड बना ले तो पति को 'पानी पिलाने' में भी पीछे नहीं रहतीं।

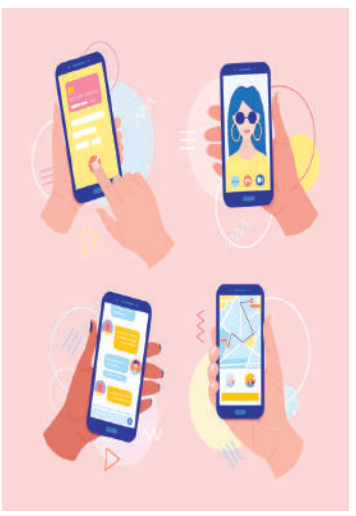

कई साल जयपुर में साथ-साथ रहने के बाद पिंकसिटी में पत्नी को छोड़कर लखनऊ में जब अकेले रहने की नौबत आई तो पता चला कि शहरों में पानी की आपूर्ति एक तय समय के अनुसार ही हुआ करती है। ...और शायद इसीलिए गांव वालों की तुलना में शहर के लोगों की आंखों में पानी थोड़ा कम हुआ करता है। सो साहब, अखबार की नौकरी में रात ढाई-तीन बजे दफ्तर से लौटने के बाद भोर चार बजे तक सोना हो पाता। आंखें नींद से बोझिल होने के बावजूद न चाहते हुए भी पानी भरने के लिए सुबह छह से सात बजे के बीच एक बार उठना ही पड़ता।

उन दिनों यूपी ही नहीं, देश भर के मीडिया में हर ओर कानपुर के बदमाश विकास दुबे एनकाउंटर की चर्चा थी। वही विकास दुबे जो कानपुर के चौबेपुर के बिकरू गांव में सीओ सहित आठ पुलिस वालों की हत्या का मुख्य आरोपी था।...और मैं चूंकि यूपी की राजधानी लखनऊ के एक नामचीन अखबार में काम करता था, सो वहां न्यूज रूम में विकास दुबे की चर्चा कुछ ज्यादा ही हुआ करती थी।

उन्हीं दिनों एक सुबह पानी भरने के बाद मैं दुबारा सो गया। जैसे ही आंख लगी कि मोबाइल की घंटी बजी। दूसरी तरफ से पूछा गया- "सुरेंदर ?" मैंने रॉन्ग नंबर की बात कहकर मना कर दिया और सो गया। कच्ची नींद खुलने की वजह से 20-25 मिनट तक करवटें बदलने के बाद दुबारा नींद आई ही थी कि फिर मोबाइल टनटनाने लगा। उठाया तो आवाज आई- "विकास से बात करा दो।" मैंने कहा- "विकास तो पुलिस के एनकाउंटर में मर गया। जाने अब तक कहां से कहां पहुंच गया होगा ! कैसे बात कराऊं ?" फोन करने वाले ने कहा, "मैं कानपुर वाले विकास दुबे की बात नहीं कर रहा।" मैंने कहा, "मैं तो पिछले कई दिनों से चहुंओर बस एक ही विकास का नाम सुन रहा हूं।" उसने कहा, "समझने की कोशिश करो, मैं विकास दुबे की नहीं, विकास यादव से बात कराने के लिए कह रहा हूं।"

अब तक मेरी नींद काफूर हो चुकी थी। मैंने पूछा - "भलेमानस, कहां से बोल रहे हो ?" उसने कहा- "अलीगढ़ के सिकंदरपुर से। विकास यादव से जरूरी बात करनी है।" मैंने उसे बड़े प्यार से समझाया- "आंख-मुंह अच्छी तरह धोकर ठंडा पानी पीओ और फिर सही तरीके से नंबर देखकर दुबारा फोन मिलाओ।" ...और फिर उससे विदा लेने के बाद मैंने सोचा कि नींद तो इसने उड़ा ही दी। अब मैं कुछ नाश्ता-पानी का ही जुगाड़ करूं।

ऐसा ही एक वाकया और याद आता है। 15-20 साल पहले की बात है। तब मैं जयपुर में सपरिवार रहा करता था। तब भी अखबार में ही नौकरी करने की वजह से रात में जगना और दिन में सोना ही अपनी दिनचर्या थी। एक दिन दोपहर में खाना खाकर सो रहा था कि किसी महिला का फोन आया। श्रीमती जी ने फोन उठाया तो उधर से कोई महिला जीजाजी से बात कराने के लिए कह रही थी। अब किसी पुरुष के जीजाजी होने की तस्दीक पत्नी से बेहतर कौन कर सकती है। सो श्रीमती जी ने रॉन्ग नंबर कहकर मना कर दिया लेकिन दुबारा-तिबारा वह रिंग करती रही और श्रीमती जी जवाब में बार-बार मना करती रहीं। इस दौरान झल्लाहट की वजह से श्रीमती जी की आवाज का वॉल्यूम बढ़ जाने के कारण मेरी भी नींद खुल गई। श्रीमती जी से पूछने के बाद सारा माजरा समझ में आता, तब तक फिर मोबाइल की घंटी बज उठी। मैंने खुद कॉल रिसीव कर समझाने की कोशिश करनी चाही तो वह दक्षिण भारतीय महिला टूटी-फूटी हिंदी में कहने लगी, "जीजाजी, आप झूठ बोल रहे हो। फोन ही नहीं उठाते हो। बात नहीं करना चाहते।" क्या बताऊं साहब, कैसे पिंड छुड़ा पाया।

स्मार्ट फोन आने और ट्रू कॉलर की सुविधा होने की वजह से अब कॉल करने वाले का पता चल जाता है लेकिन फीचर फोन से अपना पुराना नाता है। बात करने के लिए अब भी अमूमन मैं फीचर फोन ही उपयोग में लिया करता हूं। ऐसे में जाने-अनजाने कारणों से रॉन्ग नंबर की कॉल आने का सिलसिला खत्म नहीं होता। कई बार तो रॉन्ग नंबर से फोन आने पर काफी चिक-चिक होती है तो कई बार चकल्लस भी खूब हो जाती है। अंत में बाबा तुलसी से क्षमायाचना के साथ यही कहना चाहूंगा - "फोन नंबर अनंत फोन कथा अनंता।"

शान्ति बिहारी आश्रम में मनाया गया करह बिहारी सरकार एवं गोस्वामी तुलसीदास महाराज का जन्म महोत्सव

परम सिद्ध व भगवत्प्राप्त सन्त थे पूज्य राम दास महाराज उर्फ करह बिहारी सरकार : श्रीमहंत वैष्णव दास महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। कैलाश नगर रोड़-मारूति नगर क्षेत्र स्थित शान्ति बिहारी आश्रम में वैष्णव सेवा ट्रस्ट(रजि.) के तत्वावधान में संत राम दास महाराज (करह बिहारी सरकार) एवं गोस्वामी तुलसीदास महाराज का जन्म महोत्सव श्रीमहंत वैष्णवदास महाराज पावन सानिध्य में अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ मनाया गया।जिसके अंतर्गत श्रीराम चरित मानस पाठ, अखंड श्रीहनुमान चालीसा पाठ, श्रीहरिनाम संकीर्तन एवं संत,ब्रजवासी, वैष्णव सेवा (भंडारा) आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।इसमें अलावा वृहद सन्त-विद्वत सम्मेलन आयोजित हुआ।जिसमें अपने विचार व्यक्त करते हुए शांति बिहारी आश्रम के संस्थापक श्रीमहंत वैष्णवदास महाराज ने कहा कि हमारे पूज्य सदगुरुदेव बाबा रामदास महाराज (करह बिहारी सरकार) परम सिद्ध व भगवत्प्राप्त सन्त थे।उनके रोम-रोम में संतत्व विद्यमान था।संत सेवा, विप्र सेवा,गौ सेवा एवं निर्धन-निराश्रित व्यक्तियों की सेवा उनके जीवन का अभिन्न अंग था।

श्रीनाभापीठ सुदामा कुटी के श्रीमहंत अमरदास महाराज एवं महन्त सुन्दर दास महाराज ने कहा कि गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज श्रीराम भक्ति के संवाहक थे।उन्होंने अपने सदगुरुदेव नरहरिदास महाराज की सद्प्रेरणा से श्रीराम चरित मानस, गीतावली, श्रीराम नामावली, दोहा वली, श्रीहनुमान चालीसा आदि ग्रंथों की रचना कर जनमानस पर जो उपकार किया है, उसके लिए समस्त सनातन धर्मावलंबी उनके सदैव आभारी रहेंगे।

महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री महाराज एवं पूर्व प्राचार्य डॉ. राम सुदर्शन मिश्र ने कहा कि संत प्रवर बाबा राम दास महाराज संत समाज के गौरव थे।वे अत्यंत सहज, सरल, उदार व परोपकारी थे।महाराजश्री नर सेवा को ही नारायण सेवा मानते थे।वे बिना किसी की सहायता के स्वयं ही निश्वार्थ भाव से मानवता की सेवा के लिए समर्पित थे।

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं शुकाचार्य पीठाधीश्वर डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री महाराज ने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास महाराज का ब्रज वृन्दावन से भी अत्यधिक लगाव रहा है।वे जब वृन्दावन आए,तो उन्होंने ज्ञानगुदड़ी स्थित मंदिर में श्रीकृष्ण की छवि में अपने आराध्य प्रभु श्रीराम के दर्शन किए थे।जो स्थान वर्तमान में तुलसी राम दर्शन स्थल मन्दिर के नाम से प्रख्यात है।

सन्त विद्वत सम्मेलन में श्रीराम कथा मर्मज्ञ स्वामी भानुदेवाचार्य महाराज, पण्डित रामगोपाल शास्त्री, आचार्य रामशास्त्री रामायणी, महन्त राघवदास रामायणी, सन्त रामसंजीवन दास शास्त्री, निंबार्क विद्यालय के प्रधानाचार्य ब्रज किशोर त्रिपाठी, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, मदन मोहन गोयल (पप्पू भगतजी), बाबा हरिदास महाराज आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।संचालन डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री महाराज ने किया।धन्यवाद ज्ञापन शांति बिहारी आश्रम के संस्थापक श्रीमहंत वैष्णवदास महाराज ने किया।साथ ही सभी आगंतुक संतों-विद्वानों का ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी माला और प्रसाद आदि भेंट करके स्वागत किया।

समस्त वेदों, पुराणों, उपनिषदों का सार है श्रीमद्भागवत महापुराण : धर्म पथिक शैलेन्द्र कृष्ण महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। ग्राम धौरैरा/राधा मोहन नगर स्थित मां धाम आश्रम में श्रावण मास झूलन महोत्सव के उपलक्ष्य में सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ चल रहा है।जिसके अंतर्गत प्रख्यात भागवताचार्य धर्म पथिक शैलेन्द्र कृष्ण महाराज अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा देश के विभिन्न प्रांतों से आए सैकड़ों भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत महापुराण की अमृतमयी कथा का रसास्वादन करा रहे हैं।

महोत्सव के तीसरे दिन व्यासपीठ पर आसीन श्रद्धेय शैलेन्द्र कृष्ण महाराज ने कहा कि श्रीमद्भागवत महापुराण कोई साधारण ग्रंथ नहीं, अपितु स्वयं अखिल कोटि ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमेश्वर भगवान श्रीकृष्ण का वांग्मय स्वरूप है।इसका श्रवण, वाचन व अध्ययन तीनों ही मंगलकारी है।इसीलिए इसे पंचम वेद कहा गया है।मनुष्यों के जब कई-कई जन्मों के पुण्यों का उदय होता है, तब-तब उनको श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा, सत्संग आदि श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

व्यासपीठाधीन शैलेन्द्र कृष्ण महाराज ने कहा कि भगवान नारायण के अवतार महर्षि वेदव्यासजी द्वारा रचित श्रीमद्भागवत महापुराण में समस्त वेदों, पुराणों, उपनिषदों और शास्त्रों का सार है।ये शब्द स्वरूप में विराजित स्वयं परब्रह्म परमात्मा हैं।जिनका प्रादुर्भाव समस्त जनमानस के कल्याण के लिए हुआ है।इसलिए हम सभी को जीवन में कम से कम एक बार इस ग्रंथ का आश्रय अवश्य लेना चाहिए, तभी हमारा कल्याण हो सकता है।

इस अवसर पर संतोष महाराज, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, श्यामपाल बाबूजी, महोत्सव के मुख्य यजमान सीताराम चौरसिया (मध्यप्रदेश), श्रीमती गीता चौरसिया, पंकज, डॉ. राधाकांत शर्मा, मोहन बाबा, चंद्रमोहन मास्टर साहब, सुमन दीदी, श्वेता, स्वाति, आकाश, साक्षी, मुन्ना भैया, पप्पू भैया आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

सुरक्षा निधि के आड़ में बिजली उपभोक्ताओं से बेजा वसूली

एमपीईबी शहरी क्षेत्र बैढ़न का मामला, उपभोक्ताओं में असंतोष

म.प्र. विद्युत मण्डल बैढ़न शहरी क्षेत्र में भरेंशाही मची हुई है। सुरक्षा निधि के आड़ में उपभोक्ताओं से मनमाना बिजली बिल के माध्यम से बेजा वसूली की जा रही है। जिसको लेकर उपभोक्ताओं में एमपीईबी एवं प्रदेश सरकार के प्रति भारी नाराजगी बढ़ रही है। बताने वाले तो यहां तक बता रहे है कि एमपीईबी अपना खजाना भरने के लिए नये-नये तरकीब तलाशते हुये तरह-तरह के सरचार्ज उपभोक्ताओं के बिजली के बिल में वसूल लेती है। 7 रूपये प्रति यूनिट के हिसाब से जहां बिल वसूलती है, वही तरह-तरह के सरचार्ज वसूलने में कोई कोर कसर नही छोड़ रही है। उपभोक्ताओं के बिजली के बिल में सुरक्षा निधि की रकम वसूल की जा रही है। जबकि सुरक्षा निधि नये कनेक्शन धारी उपभोक्ताओं या फिर डिफाल्टर जो समय पर बिजली बिल न करते हो, उनसे जमा कराया जाता है। किंतु एमपीईबी बैढ़न ऐसे उपभोक्ताओं से सुरक्षा निधि वसूल रही है जिनके द्वारा निर्धारित समय सीमा के पूर्व बिजली बिल का पूरा रकम जमा हैं और फिर भी उपभोक्ताओं से सुरक्षा निधि के आड़ में सैकड़ों रूपये वसूल किया जा रहा है। इस मामले में एमपीईबी बैढ़न गोलमाल जवाब दे रहा है। कई उपभोक्ताओं का आरोप है कि एमपीईबी सिर्फ अपना खाली खजाना भर रहा है और उपभोक्ता इसके आर्थिक शोषण के शिकार हो रहे हैं। उपभोक्ताओं के यह भी आरोप है कि स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए गले का फांस बन गया है और सरकार जानबूझकर उपभोक्ताओं का आर्थिक शोषण करा रही है।

क्या होती थी जनसेवा जाने इस लेख द्वारा

एक वरिष्ठ वकील 46 दोषियों को मौत की सजा (फांसी) से बचाने के लिए बहस कर रहा था।

तभी उसका सहायक अंदर आया और

उसे एक छोटा सा कागज दिया,

वकील ने इसे पढ़ा और अपनी जेब के

अंदर रखा और अपनी बहस जारी रखी।

लंच ब्रेक के दौरान,

न्यायाधीश ने उससे पूछा ₹आपको पर्ची पर क्या जानकारी मिली थी₹

वकील ने कहा ₹मेरी पत्नी मर गई₹

जज चौंक गया और बोला "फिर तुम यहाँ

क्या कर रहे हो ,अपने घर क्यों नहीं गए₹

वकील ने कहा.

मैं अपनी पत्नी के जीवन को वापस नहीं

ला सकता,लेकिन इन 46 स्वतंत्रता सेनानियों को जीवनदान देने और उन्हें मरने से रोकने में मदद कर ही सकता हूं।

न्यायाधीश, जो एक अंग्रेज था, उसने सभी

46 पुरुषों को रिहा करने का आदेश दिया।

वकील कोई और नहीं बल्कि

महान सरदार वल्लभभाई पटेल थे।

3300 करोड़ क्या यदि 33000 करोड़ की

प्रतिमा भी उनकी लगे तो वह कम ही होगी।

जयतु भारतं,

प्रयागराज
दिनांक-03.08.2025
समय रात्रि 08.00 बजे
जनपद प्रयागराज में बाढ का परिदृश्य
जलस्तर

गंगा नदी का जलस्तर- 1. फाफामउ- 85.87 (+10)
2. छतनाग- 85.19 (+14)
गंगा नदी का खतरे का बिन्दु. 1. फाफामउ-84.738 मी0
2. छतनाग-84.738 मी0
गंगा नदी का अधिकतम जलस्तर.1. फाफामउ-87.980 मी0
2. छतनाग-88.030 मी0
यमुना नदी का जलस्तर-1. नैनी- 85.82 (+04)
यमुना नदी का खतरे का बिन्दु. 84.738 मी0
यमुना नदी का अधिकतम जलस्तर.नैनी- 87.990 मी0
प्रभावित वार्ड्समोहल्ला - 107
सदर-47- कछार मऊ/सरैया, राजापुर देह माफी, असदुल्लापुर मो0बाद, बेली कछार, बेली उपरहार, बघाडा जहरूद्दीन, बघाडा बालन, मेहदौरी कछार, शिवकुटी, चांदपुर सलोरी उपरहार, सादियाबाद कछार, चिल्लापटटी, अराजी बारूद खाना कछार, आराजी जोधवल, अराजी बारूद खाना उपरहार, गोविंदपुर, चांदपुर सलोरी कछार, बकशी उपरहार, बकशी कछार, बभनपटटी कछार, बराही पटटी कछार, मुस्तफा बाद मुंस्कसमा, सराय मौज उर्फ कीडगंज, बखतियारा, दरियाबाद, मेहदौरी उपरहार, म्योराबाद, नकौली कछार, कछार भिखी सराय, नकौली उपरहार, नेवादा, बम्हौली कछार, असरौली कछार, गोहटी कछार, गोहटी उपरहार, करैली, करैला बाग, मैनापुर, असरावलखुर्द, फतेहपूर घाट, उझिली पटटी, चकसेरखां, लखनपुर, आदमपुर मदारीपुर, जोंदवल एवं फुलवा।
फुलपुर-18-सोनौटी, बदरा, धोकरी, भदकार, लीलापुर, पुरे सूरदारपूर, कोहना, हवेलिया, बहादुरपूर, शेरडीह, उस्तापुर, महमूदाबाद, नीबीकला, छिबैया, ककड़ उपरहार, दुबावल, कोतारी एवं कालीकट।
करछना-08-देहली भगेसर, हथसरा, पनासा, पनासा उपरहार, भडेरा, कब्का, कचरी एवं खरकोनी।
सोरांव-08-फाफामउ, गंगानगर,रंगपुरा, फतुपर, अकबरपुर गंगागंज, टिकरी, चपरी, सराय जयराम।
मेजा-12- झरियारी, अमिलिया खुर्द, इसौटा, मदरा, महेवा, समहन छतावा चौकी, परानीपुर, झरियारी, डेगुपूर, बगहा एवं अमिलिया।
बारा-08-अमिलिया आमद चायल, कंजासा, घूरपुर, गोहरा तरहार, बिरवल, मझियारी, लालापुर एवं पूरे किन्नर।
हण्डिया-06-बढौली, हरिहरपुर, इन्फवार, गोडरी, कसौधन एवं मवैया।

S ऐसे परिवार जो राहत शिविर में निवास कर रहे है-1747
S ऐसे परिवार जों सुरक्षित स्थान पर निवास कर रहे है-1747
S बाढ शिविर में निवास कर रहे व्यक्तियो की कुल संख्या-7436
S अन्य स्थान में निवास कर रहे व्यक्तियो की कुल संख्य-7436
S केवल फसल प्रभावित-0
S केवल आवागमन प्रभावित-39 ग्राम/मोहल्ले
चिन्हित बाढ राहत शिविर-97
1-सदर-26, 2-सोरांव-07, 3-फुलपुर-13, 4-करछना-19, 5-मेंजा-14, 6-बारा-09, 7-हण्डिया-06, 8-कोरांव-03
कुल-97
क्रियाशील बाढ राहत शिविर-20 स्रिकय शरणालय सदर-17
S कैण्ट मैरेज हॉल सदर बाजार न्यू कैण्ट-320 व्यक्ति (72 परिवार)
S ऐनीबेसेन्ट स्कूल, ऐलनगंज-950 व्यक्ति (225 परिवार)
S ऋषिकुल उ0मा0वि0, राजापुर-500 व्यक्ति (160 परिवार)
S महबूब अली इण्टर कॉलेज, स्टैनली रोड, बेली चौराहा-330 व्यक्ति (86 परिवार)
S रीगल गेस्ट हाउस-500 व्यक्ति (105 परिवार)
S वाई0एम0सी0ए0 स्कूल-1050 व्यक्ति (235 परिवार)
S सेन्ट जोसेफ गर्ल्स हा0से0स्कूल मम्फोर्डगंज-550 व्यक्ति (135 परिवार)
S स्वामी विवेकानन्द, इण्टर कॉलेज, अशोक नगर-220 व्यक्ति (40 परिवार)
S यूनिटी पब्लिक स्कूल करैली-60 व्यक्ति (13 परिवार)
S कम्पोजिट स्कूल नार्मल ऐलनगंज-215 व्यक्ति (36 परिवार)
S चेतना गर्ल्स इण्टर कॉलेज-160 व्यक्ति (32 परिवार)
S रामा देवी गर्ल्स इ0कॉलेज-450 व्यक्ति (104 परिवार)
S रानी रेवती देवी सरस्वती विद्या निकेतन राजापुर-600व्यक्ति (136 परिवार)
S ब्यावज हाई स्कूल सिविल लाइन्स-200 व्यक्ति (55 परिवार)
S कृष्णा गार्डन राजापुर-300 व्यक्ति (67 परिवार)
S प्रिया गार्डन राजापुर-140 व्यक्ति (40 परिवार)
S प्रा0वि0 बक्शीकला-201 व्यक्ति (25 परिवार)
S * बारा-1*
S उच्च प्राथमिक विद्यालय भीटा-300 व्यक्ति (60 परिवार)
S सोरांव-1
S सराय जयराम बाढ शरणालय- 100 व्यक्ति (50 परिवार)
S मेजा-1
S प्रा0विद्यालय कोना-290 व्यक्ति (71 परिवार)
वितरित सामग्री
आज संचालित नाव.168 एवं 01 मोटर बोट
आज वितरित लंच पैकेट-5500 (3 टाइम)
उपचारित व्यक्ति-242
वितरित ओ0आर0एस0-290
वितरित क्लोरिन टैबलेट-125
पशु शिविर-04
उपचारित पशु-55
टीकाकरण-275
भूसा वितरण-40 कु0
कंटोल रूम नम्बर
0532-2641577, 0532-2641578, 1077
जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण प्रयागराज।

फोन पर धमकी के बाद कानपुर में युवक की हत्या, जांच में जुटी पुलिस

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां जिले में युवाओं की हत्या का सिलसिला लगातार जारी है ,जिसके क्रम में फोन पर धमकी के बाद एक और युवक को मौत के घाट उठा दिया गया। उसकी बरामद हुई लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेजने के बाद पुलिस घटना की छानबीन कर रही है। पुलिस के मुताबिक अभी तक यह पता नहीं चल पाया है की हत्या क्यों और किस वजह से की गई।

यह घटना महाराजपुर थाना क्षेत्र की है, जहां सरसौल कस्बे में भेवली मोड़ के पास एक युवक का शव संदिग्ध हालात में पड़ा मिला है। पुलिस ने बताया कि बाद में मृतक की शिनाख्त शिवम कुशवाहा उर्फ रमपत के रूप में हुई है, जो सिखटिया गांव का निवासी था।

पुलिस के अनुसार, अभी तक मौत का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है। मृतक के पिता, बउवन ने बताया कि शिवम को फोन पर कुछ लोगों द्वारा जान से मारने की धमकी मिली थी जिसकी जानकारी उसने अपने परिवार वालों को भी दी थी। पुलिस के मुताबिक शिवम पहले लाइनमैन का काम करता था, लेकिन एक साल पहले बिजली घर में चोरी के आरोप में उसे नौकरी से निकाल दिया गया था। जिसके बाद वह शराब का आदी हो गया था। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पटना से उसके परिवार में कोहराम बचा हुआ है। वहीं पुलिस ने बताया कि घटना की छानबीन का दोषी को जल्द ही जेल भेजा जाएगा।

साहब !मेरा नाम हमेशा अपमान के पर्याय के रूप में लेते हो !आज मेरे नाम पर वैश्विक वफ़ादारी, समर्पण, मेहनतकश और प्रतिबद्धता का दिवस है

5 अगस्त 2025 क़ा दिन ऐसे श्रमिकों कर्मचारीयों व्यापारियों और हर उस व्यक्तियों के लिए है, जो कुत्ते की तरह वफादारी, निस्वार्थ और समर्पण भाव से कार्य करते हैं-
एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर हर उस व्यवहार, कार्य और परिस्थितियों में जहां किसी व्यक्ति का अपमान करना हो, उसे नीचा दिखाना हो, उसे बदनाम करना हो तो, उसे बोलने वाले प्राथमिक अस्वस्थ्य भाषा ठठोली क़े प्रतीक के रूप में कुत्ता शब्द का प्रयोग किया जाता है, वैसे तो इस बोध में अनेक पशु-पक्षी व जानवरों का नाम जैसे गधा, उल्लू सांड गिरगिट, काला नाग जैसे अनेक जानवरों के नामों का प्रयोग किया जाता है, जिसे सुनकर वाद विवाद प्रतिवाद इतना बढ़ जाता है कि, हत्या तक हो जाती है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि इसे नकारात्मक पहलू से देखा जाता है, जबकि इनका सकारात्मक पहलू यह है कि गधा बहुत भारी बोझ उठाकर मेहनत के प्रति समर्पित रहता है, सांड खेतियों में हल जोतने क़ी मेहनत क़ा काम करता है, इस तरह हर ऐसे अपमान क़े सूचक बनें इन प्राणियों का हमारे जीवन को सुचारू रूप से चलाने में कुछ ना कुछ योगदान होता है, फिर भी हम उन्हें हास्यप्रद व अपमान सूचक शब्दों से व्यक्त करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते, आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 5 अगस्त 2025 को हम राष्ट्रीय कुत्ते की तरह काम करने (वर्क लाइक ए डॉग डे) के दिवस के रूप में मनाया जा रहा है जो अमेरिका सहित पश्चिम भारत सहित दक्षिण एशिया इत्यादि देश में मनाया जाता है, इस दिन का उद्देश्य उन सभी लोगों को सम्मान देना है जो इतना कठिन परिश्रम करते हैं, अपनी वफादारी व जिम्मेदारियों को निष्ठा व अनुशासन के साथ निभाते हैं और मानव समाज की प्रगति में योगदान देते हैं। इसमें दो बातें महत्वपूर्ण है, (1) यह दिन एक प्रतीक है-ऐसे श्रमिकों, कर्मचारियों व्यापारियों और हर उस व्यक्ति के लिए जो 'कुत्ते की तरह' अथक, निःस्वार्थ और समर्पण भाव से कार्य करतें है। (2) पशुओं में कुत्ता वह प्राणी है जिसे सबसे अधिक वफादार, मेहनती और संरक्षक माना गया है। वह केवल आदेश मानने वाला प्राणी नहीं, बल्कि कई मामलों में नेतृत्वकर्ता, खोजी, सहायक और संकटमोचक भी होता है।पुलिस डॉग्स, थैरेपी डॉग्स, फॉर्म डॉग्स, रेस्क्यू डॉग्स और गाइड डॉग्स-हर क्षेत्र में इनकी मेहनत असाधारण है। ये विशेष प्रशिक्षित कुत्ते दिन-रात काम करते हैं, बिना शिकायत किए, बिना थके। यही भावना इस दिवस के पीछे की प्रेरणा है। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग सेआर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, वर्क लाइक ए डॉग डे,5 अगस्त 2025, वफादारी व समर्पण भाव से मेहनत करने वालों को सैल्यूट।

साथियों बात अगर हम मेहनतकश लोगों को सैल्यूट करने की करें तो,इस दिवस की एक और प्रासंगिकता है-यह आज की अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक और लक्ष्य-केंद्रित वर्क कल्चर की झलक देता है, ये सब हमें लगातार 'कुत्ते की तरह' काम करने के लिए मजबूत करता हैं। लेकिन यह कब प्रगति का संकेत बनता है और कब शोषण, इसपर विचार करना भी उतना ही आवश्यक है।जिसमें इंसान को मशीन की तरह 24/7 काम करने की अपेक्षा की जाती है।इस दिन का मुख्य उद्देश्य उन लोगों को सम्मानित करना है जो अपने कार्यस्थल पर या जीवन में साधारण नहीं, बल्कि असाधारण मेहनत करते हैं। इसमें शामिल हैं: (1) कृषक जो सुबह 4 बजे खेतों में पहुंचते हैं।(2) डॉक्टर और नर्स जो महामारी या आपदा के दौरान 18-18 घंटे की शिफ्ट करते हैं। (3) स्वच्छता कर्मी जो शहरों को साफ -सुथरा बनाए रखने में जुटे रहते हैं।(4) महिलाएँ, जो घर और ऑफिस दोनों में 'वर्क लाइक अ डॉग' वाली भूमिका निभाती हैं। (5) वर्क फ्रॉम होम, ओवरटाइम, स्टार्टअप कल्चर, करियर रेस चुनौतीपूर्ण कार्य।

साथियों बात अगर हम मेहनत करने की करें तो,जब हम मेहनत की बात करते हैं, तब हमें ये भी देखना होगा कि हर व्यक्ति को उसके काम का पूरा मुआवज़ा मिले, और उसकी मानसिक, शारीरिक और सामाजिक सेहत का ध्यान रखा जाए। (1) वर्कप्लेस वेलनेस प्रोग्राम्स (2) मेंटल हेल्थ अवेयरनेस (3) बर्नआउट की पहचान और राहत (4) वर्क- लाइफ बैलेंस के प्रयास ये सभी ज़रूरी हैं ताकि मेहनत करने वाले थकें नहीं, टूटें नहीं, बल्कि प्रेरित और संतुलित रहें। हम देखते हैं कि आज जब चैटजीपीटी जैसे एआई टूल्स, रोबोट, ऑटोमेटेड सॉफ्टवेयर इंसानी कामों को बदल रहे हैं,तब "कुत्ते की तरह काम करना"अब मेहनत नहीं बल्कि स्मार्ट वर्क की ओर मुड़ता प्रतीत हो रहा है। लेकिन इस बदलाव में भी वो भावना, वो ऊर्जा, वो लगन जो इंसान का मूल गुण है,वह अमूल्य है। एआई कभी वफादारी, नैतिकता और जुनून नहीं ला सकता, जो एक इंसानी श्रमिक में होता है।

साथियों बात अगर हम दुनियाँ के भविष्य,बच्चों व युवाओं को क़ाम का मूल्य सिख़ाने की करें तो,वर्क लाइक ए डॉग डे केवल

वयस्कों के लिए नहीं, बल्कि युवाओं को श्रम के मूल्य और गरिमा सिखाने का एक सुनहरा अवसर है। (1) उन्हें छोटे-छोटे कार्य सौंपें। (2) घर के कामों में भागीदार बनाएं (3) उन्हें यह बताएं कि मेहनत केवल पैसा कमाने के लिए नहीं, बल्कि आत्मनिर्माण के लिए भी है।परंतु *कुछ आलोचक कहते हैं कि ₹कुत्ते की तरह काम करना₹ इंसानों के आत्म- सम्मान के विरुद्ध है।* इसमें मनुष्यता की उपेक्षा होती है। यह दलील तब सार्थक लगती है जब कार्य की मात्रा मनुष्य की सीमा से अधिक हो जाती है।इसलिए इस दिन को मनाते हुए हमें मेहनत और शोषण के बीच की महीन रेखा को पहचानना ज़रूरीहै।5 अगस्त का नेशनल वर्कलाइक ए डॉग डे कोई तुच्छ मुहावरा नहीं बल्कि मेहनत करने वालों की आत्मा को श्रद्धांजलि है।यहदिन हमें याद दिलाता है कि समाज उन्हीं के कंधों पर खड़ा है जो लगातार आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं।हर पेशा-चाहे वह सीईओ हो या सड़क पर सफाई करने वाला-मेहनत का सम्मान बराबर चाहता है।सबसे महत्वपूर्ण बातः मेहनत करना गौरव की बात है, लेकिन अपने स्वास्थ्य, संतुलन और आत्म-सम्मान केसाथ।₹कुत्ते की तरह काम करने का मतलब सिर्फ पसीना बहाना नहीं है, बल्कि यह अपने काम से प्रेम करना, उसे जिम्मेदारी से निभाना, और दुनियाँ को यह दिखाना है कि ईमानदारी और मेहनत कभी असफल नहीं होती।"

साथियों बात अगर हम वर्क लाइक ए डॉग डे मनाने की करें तो, अपने दिन का सर्वोत्तम प्रदर्शन करें, (1) इस दिन अपने सभी कार्यों को सर्वोत्तम गुणवत्ता और पूर्ण समर्पण से करें। (2) अपने साथियों की प्रशंसा करें- टीम में जो सबसे मेहनती हैं, उन्हें धन्यवाद कहें या एक छोटी सी प्रशंसा दें। (3) अपने काम के प्रति खुद को प्रेरित करें-यह दिन आत्मनिरीक्षण का भी है। (4) किसी सेवा कुत्ते की कहानी साझा करें-जानवरों से प्रेरणा लेना भी इस दिन का एक भावनात्मक पहलू है। (5) आराम भी जरूरी है-ध्यान रखें कि संतुलन बनाए रखना भी इस दिवस की शिक्षा है।

साथियों बात अगर हम इस दिवस के इतिहास की करें तो,₹वर्क लाइक ए डॉग डे₹ की सटीक ऐतिहासिक उत्पत्ति अस्पष्ट है, लेकिन इसका मूल अमेरिका में माने जाते हैं। यह दिन उन मेहनतकश अमेरिकियों की प्रशंसा और मान्यता के लिए मनाया गया,जो रोज़गार और जीवन के तनावों के बावजूद पूरे मनोयोग से कार्य करते हैं।इसे अनौपचारिक छुट्टी के तौर पर मान्यता मिली,और सोशल मीडिया ने इसे लोकप्रिय बनाया।धीरे-धीरे यह दिन दुनियाँ भर के श्रमिकों के लिए एक प्रेरणा बन गया।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि साहब !मेरा नाम हमेशा अपमान के पर्याय के रूप में लेते हो !आज मेरे नाम पर वैश्विक वफ़ादारी, समर्पण, मेहनतकश और प्रतिबद्धता का दिवस है,राष्ट्रीय कुत्ते की तरह काम करने का दिवस(वर्क लाईक ए डॉग डे) 5 अगस्त 2025 - वफादारी से मेहनत करने वालों को सैल्यूट !5अगस्त 2025 क़ा दिन ऐसे श्रमिकों कर्मचारीयों व्यापारियों और हर उस व्यक्तियों के लिए है, जो कुत्ते की तरह वफादारी, निस्वार्थ और समर्पण भाव से कार्य करते हैं।

कार का माइलेज नहीं दे रहा साथ? अपनाएं ये 5 टिप्स और बढ़ाएं एवरेज झटपट

कार माइलेज युक्तियाँ भारत में हर साल सड़कों पर बड़ी संख्या में कारों को उतारा जाता है। जिससे पेट्रोल डीजल और सीएनजी के दामों में भी बढ़ोतरी होती है। जिस कारण कई लोग रोजाना कार उपयोग करने से बचते हैं। वहीं कुछ लोग कार चलाते हुए कुछ गलतियों के कारण माइलेज काफी कम कर देते हैं। किन बातों का ध्यान रखकर कार की माइलेज बढ़ सकती है।

नई दिल्ली। देश में अधिकतर महानगरों में ऑफिस के समय ट्रैफिक जाम लगने लगता है। जिससे ईंधन की खपत बढ़ती है और वातावरण को नुकसान के साथ ही खर्च भी बढ़ता है। अगर कुछ लापरवाही करने के कारण आपकी कार भी कम माइलेज (car mileage) देती है। तो किन बातों का ध्यान रखकर कार की माइलेज को सुधारा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

समय पर सर्विस है जरूरी

अपनी कार से बेहतर एवरेज चाहिए तो हमेशा कार की सर्विस को सही समय पर करवाना जरूरी होता है। कार की सर्विस को देरी से करवाया जाता है तो इंजन ऑयल खराब होने के साथ ही ऑयल फिल्टर चोक होने के कारण गाड़ी को ज्यादा क्षमता के साथ काम करना पड़ता है। जिससे एवरेज (Mileage Tips) में कमी आ जाती है। इसके अलावा गाड़ी के पार्ट्स खराब होने का खतरा भी बढ़ जाता है।

स्पीड का रखें ध्यान

कार से बेहतर एवरेज के लिए कार को तेज चलाने से भी बचना चाहिए। गाड़ी को तेज स्पीड में चलाया जाता है तो ज्यादा पावर की जरूरत होती है और इंजन को ज्यादा क्षमता से भी काम करना पड़ता है, जिससे ईंधन की खपत (fuel efficiency) भी बढ़ने लगती है।

टायर में रखें सही प्रैशर में हवा

अगर कार के टायर में हवा का प्रैशर सही मात्रा में हो तो भी एवरेज को आसानी से बेहतर किया जा सकता है। कार चलाते हुए पूरा वजन टायरों पर आ जाता है। लेकिन अगर टायर में हवा कम हो तो गाड़ी का पिकअप कम हो जाता है। ऐसे में एक्सीलेरेटर को ज्यादा दबाना पड़ता है और ईंधन की खपत भी ऐसे बढ़ जाती है। जिससे एवरेज में कमी आ जाती है।

ट्रैफिक से बचने की करें कोशिश

अगर आपको अपनी कार से बेहतर एवरेज (Car Mileage) चाहिए तो सफर को शुरू करने से पहले मैप का उपयोग किया जा सकता है। इससे आपको अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए ऐसे रास्ते का विकल्प मिल सकता है, जिसमें कम ट्रैफिक मिले। मैप का उपयोग करने से कम ट्रैफिक और समय को बचाने के साथ ही पेट्रोल या डीजल पर अतिरिक्त खर्च को भी बचाया जा सकता है।

गैरजरूरी सामान को हटाएं

कई लोग अपनी कार को चलता हुआ घर बना देते हैं। कार में ऐसा सामान भी रखा रहता है, जिसकी जरूरत लंबे वक्त तक नहीं पड़ती। ऐसे सामान के कारण गाड़ी का वजन भी बढ़ता है और इससे एवरेज में भी कमी आती है।

अगले कुछ महीनों में लॉन्च हो सकती हैं पांच इलेक्ट्रिक कारें, मारुति से लेकर किआ तक हैं शामिल

ईवी लॉन्च भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग लगातार बढ़ रही है। जिसे देखते हुए वाहन निर्माताओं की ओर कई सेगमेंट में कई वाहनों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अगले कुछ महीनों के दौरान कौन सी पांच इलेक्ट्रिक कारों को देश में लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में प्रदूषण को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों पर लगातार जोर दिया जा रहा है। जिसके बाद इन वाहनों की बिक्री में बढ़ोतरी भी हो रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अगले कुछ महीनों के दौरान कौन सी पांच इलेक्ट्रिक कारों (upcoming electric cars) को भारत में पेश और लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti E Vitara

मारुति की ओर से जल्द ही नई एसयूवी के तौर पर E Vitara को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से अभी इस बारे में जानकारी नहीं दी गई है कि वह कब तक एसयूवी को लॉन्च करेगी। लेकिन माना जा रहा है कि अगले कुछ महीनों के दौरान इसको औपचारिक तौर पर लॉन्च कर दिया जाएगा। यह मारुति की पहली इलेक्ट्रिक गाड़ी होगी जिसे एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाएगा। इस एसयूवी को जनवरी 2025 में हुए ऑटो एक्सपो में पेश किया जा चुका है।

Toyota Urban Cruiser EV

मारुति की ही तरह टोयोटा भी अर्बन क्रूजर हाइराइडर एसयूवी के इलेक्ट्रिक वर्जन को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। जानकारी के मुताबिक यह भी मारुति ई विटारा के प्लेटफॉर्म पर आधारित होगी। इसमें भी मारुति ई विटारा की तरह ही बैटरी पैक, मोटर और फीचर्स को दिया जाएगा। लेकिन इसके डिजाइन में कुछ बदलाव किए जाएंगे।

Tata Sierra EV

टाटा की ओर से जनवरी 2025 में हुए ऑटो एक्सपो के दौरान सिएरा को शोकेस किया गया था। जिसके बाद से ही यह उम्मीद की जा रही है कि निर्माता की ओर से जल्द ही इस एसयूवी के इलेक्ट्रिक वर्जन को भी बाजार में पेश किया जाएगा। अभी निर्माता ने औपचारिक तौर पर इसकी घोषणा नहीं की है लेकिन माना जा रहा है कि अगले कुछ महीनों के दौरान Tata Sierra EV को भी पेश किया जाएगा।

Kia Syros EV

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक किआ की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी के तौर पर किआ सिरोस को इसी साल भारत में लॉन्च किया गया है। इस एसयूवी के भी इलेक्ट्रिक वर्जन को अगले कुछ महीनों के दौरान भारत में लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। फिलहाल इस इलेक्ट्रिक एसयूवी को लेकर निर्माता की ओर से कोई जानकारी नहीं दी है। लेकिन 2025 के आखिर या 2026 में इसे पेश किया जा सकता है।

Volvo EX 30

वोल्वो की ओर से भी भारत में दो इलेक्ट्रिक एसयूवी को ऑफर किया जाता है। निर्माता की ओर से जल्द ही नई इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर Volvo EX 30 को लॉन्च किया जा सकता है। इस एसयूवी को मौजूदा एसयूवी के नीचे पोजिशन किया जाएगा। ऐसे में इसकी कीमत भी वोल्वो की बाकी एसयूवी के मुकाबले कम होगी।

इस हफ्ते धमाल मचाने आ रही हैं दो दमदार बाइक्स, ईवी से लेकर प्रीमियम सेगमेंट में होंगी लॉन्च

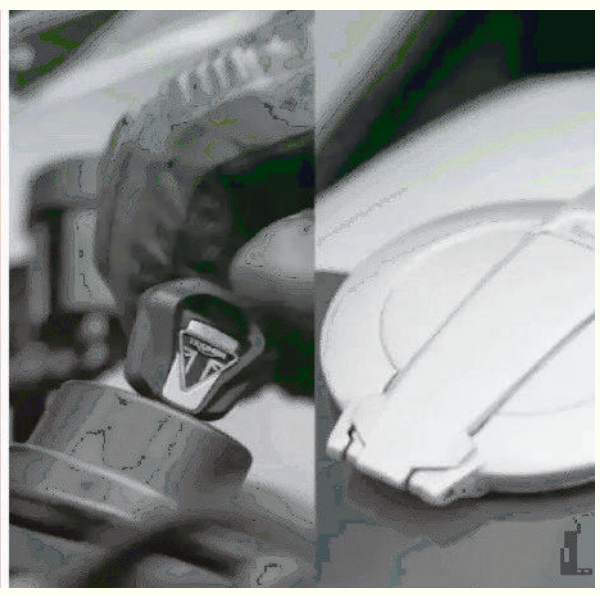

बाइक लॉन्च भारत में जल्द ही फेस्टिव सीजन शुरू हो जाएगा। इसके पहले सभी वाहन निर्माता नए उत्पादों को पेश और लॉन्च करने की तैयारी कर रहे हैं। अगस्त के अगले हफ्ते में दो नई बाइक्स को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। किस निर्माता की ओर से किस सेगमेंट में किस तरह की तकनीक के साथ बाइक्स को लॉन्च किया जाएगा।

नई दिल्ली। भारत में वाहन निर्माताओं की ओर से लगातार नए उत्पादों को पेश और लॉन्च किया जाता है। अगस्त के अगले हफ्ते में भी दो नई बाइक्स को भारत में लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। किस सेगमेंट में किस तरह की खासियत के साथ किस निर्माता की ओर से इन बाइक्स को लॉन्च (new bike launches) किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होंगी दो बाइक्स

ब्रिकी बढ़ाने के लिए निर्माताओं की ओर से नए उत्पादों को लॉन्च किया जाता है। अगस्त के नए हफ्ते में भी दो नई बाइक्स को लॉन्च (upcoming bikes) करने की तैयारी की जा रही है। इनमें से एक बाइक को इलेक्ट्रिक सेगमेंट में लॉन्च किया जाएगा। वहीं दूसरी बाइक को प्रीमियम बाइक सेगमेंट में ऑफर किया जाएगा।

नई Oben Rorr EZ होगी लॉन्च

ओबन इलेक्ट्रिक की ओर से बाजार में इलेक्ट्रिक बाइक्स की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से पांच अगस्त को भारत में नई electric bike बाइक के तौर पर Oben Rorr EZ को लॉन्च किया जाएगा। निर्माता की ओर से कुछ समय पहले इसकी जानकारी दी गई थी। बाइक को किस तरह की क्षमता वाली बैटरी और मोटर के साथ ही फीचर्स ऑफर किए जाएंगे अभी इसकी जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन यह मौजूदा वर्जन के मुकाबले ज्यादा बेहतर फीचर्स और रेंज के साथ ऑफर की जा सकती है।

Triumph Thruxton भी होगी लॉन्च

प्रीमियम बाइक निर्माता ट्रायम्फ की ओर से भी इस हफ्ते में नई बाइक को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से सोशल मीडिया पर नई बाइक के लॉन्च की जानकारी भी सार्वजनिक की गई है। उम्मीद की जा रही है कि नई बाइक के तौर पर Triumph Thruxton को लॉन्च किया जाएगा। यह बाइक 400 सीसी सेगमेंट में कैफे रेसर डिजाइन के साथ आएगी। जिसमें सिंगल सीट को दिया जा सकता है। इसमें निर्माता की ओर से 400 सीसी का वही इंजन उपयोग किया जाएगा तो स्पीड और स्क्रैम्बलर बाइक्स में उपयोग किया जा रहा है। इस बाइक की एक्स शोरूम कीमत भी Triumph Speed 400 और Scrambler 400 की कीमत के बीच हो सकती है।

स्कोडा स्लाविया के मोंटे कॉर्लो एडिशन को खरीदने में कितनी होगी समझदारी, पढ़ें खबर

Skoda Slavia Monte Carlo Review स्कोडा की ओर से भारतीय बाजार में Skoda Slavia के Monte Carlo एडिशन को ऑफर किया जाता है। इस मिड साइज सेडान कार को हमने कुछ दिनों तक चलाकर देखा। यह कार चलाने में कितनी दमदार है और इसकी हैंडलिंग कितनी बेहतर है। सामान्य स्लाविया के मुकाबले मोंटे कॉर्लो एडिशन में क्या बदलाव किए गए हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। चेक रिपब्लिक की वाहन निर्माता स्कोडा की ओर से भारतीय बाजार में Skoda Slavia के Monte Carlo एडिशन को मिड साइज सेडान कार सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेडान कार की हैंडलिंग कैसी है। इसकी ब्रेकिंग कैसी है। इसे चलाने का क्या अनुभव रहा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

कैसा है Skoda Slavia का Monte Carlo Edtion

स्कोडा की ओर से मिड साइज सेडान के तौर पर स्लाविया को भारतीय बाजार में ऑफर किया जाता है। स्कोडा की ओर से स्लाविया को Monte Carlo एडिशन के साथ भी ऑफर किया जाता है। इस एडिशन में कई कॉस्मैटिक बदलाव किए गए हैं, जिसके बाद यह गाड़ी देखने में सामान्य वर्जन के मुकाबले ज्यादा बेहतर लगती है। नए एडिशन में ग्लॉसी ब्लैक फिनिश का कई जगह उपयोग किया गया है, जिसे फ्रंट ग्रिल, अलॉय व्हील्स, मिरर, रूफ, विंडो लाइन, बैजिंग, रियर डिफ्यूजर, बूट लिड स्पॉयलर में देखा जा सकता है। क्रोम के मुकाबले ब्लैक फिनिश काफी बेहतर लगती है

कैसा है इंटीरियर

मोंटे कॉर्लो एडिशन को जिस तरह से बाहर से अलग बनाया गया है वैसे ही इसके इंटीरियर में भी ब्लैक के साथ रेड कलर कॉम्बिनेशन को दिया गया है। सीट से लेकर डैशबोर्ड, आर्म रेस्ट और इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर में भी दोनों रंगों का बेहतर तरीके से तालमेल किया गया है। कार में स्पोर्टी मैटल पैडल्स दिए गए हैं साथ ही Dead Pedal भी दिया गया है जो ड्राइविंग के दौरान ड्राइवर को लंबी दूरी की यात्रा के दौरान ज्यादा आराम देता है।

कितना दमदार इंजन

स्कोडा की ओर से स्लाविया के मोंटे कॉर्लो एडिशन में एक लीटर और 1.5 लीटर के इंजन का विकल्प दिया गया है जो इसके अन्य वेरिएंट्स में भी मिलता है। एक लीटर इंजन को 6स्पीड मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ लाया गया है और 1.5 लीटर इंजन के साथ 7स्पीड डीएसजी ट्रांसमिशन दिया गया है। स्कोडा की स्लाविया के मोंटे कार्लो एडिशन को हमनें कुछ दिनों तक चलाया। इस दौरान यह कार रोमांच पसंद करने वालों के साथ ही माइलेज लेने वालों को भी निराश नहीं करती। इसको एक लीटर पेट्रोल में अगर आराम से चलाया जाए तो 14-16 के करीब का माइलेज आसानी से मिल सकता है। इसके अलावा हर किसी के चलाने के तरीके पर भी यह निर्भर करता है कि वह कार से कितनी बेहतर माइलेज ले सकता है।

फाइनल वर्डिक्ट

स्कोडा की ओर से स्लाविया के मोंटे कार्लो एडिशन को हमने कुछ दिनों तक करीब 600 किलोमीटर तक चलाया। इस दौरान हाइवे और ट्रैफिक के बीच भी इसे चलाने में ज्यादा परेशानी नहीं होती। कार का ग्राउंड क्लियरेंस भी 178 एमएम का है तो खराब सड़कों पर भी यह आसानी से चलाई जा सकती है। तेज स्पीड में भी इस कार को चलाने पर पूरा कंट्रोल मिलता है। वहीं गियर बदलने में भी इसमें किसी तरह की परेशानी नहीं आती। अगर इसे थोड़ा तेज चलाया जाए तो फिर इसकी माइलेज आपको निराश कर सकती है। कार में 360 डिग्री कैमरा जैसे फीचर का न होना थोड़ा निराश कर सकता है। इसके अलावा इसमें जो रियर कैमरा और हॉर्न दिया गया है, उसे और बेहतर किया जा सकता था।

बहुभाषी, समावेशी शिक्षा को स्केल 'में साकार किया जा रहा है

विजय गर्ग

'बहुभाषी, समावेशी शिक्षा को स्केल पर रीलाइज्ड किया जा रहा है' की अवधारणा शैक्षिक प्रणालियों के सफल कार्यान्वयन को संदर्भित करती है जो विविध भाषाई पृष्ठभूमि के छात्रों को पूरा करती है, यह सुनिश्चित करती है कि सभी शिक्षार्थियों के पास अपनी मातृभाषा या अन्य भाषाओं की परवाह किए बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच हो। बोली जाने वाली। यह महत्वपूर्ण चुनौतियों और प्रदर्शनीय सफलताओं दोनों के साथ एक जटिल उपक्रम है। मुख्य पहलू और रणनीतियाँ: 1.। पॉलिसी फ्रेमवर्क और विजनः

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 (भारत उदाहरण): एक प्रमुख उदाहरण भारत का एनईपी 2020 है, जो छात्रों को अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं में प्रवीणता प्राप्त करते हुए अपनी मातृभाषा में सीखने में सक्षम बनाकर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की कल्पना करता है। इस नीति का उद्देश्य कठोर भाषाई पदानुक्रम से दूर जाना और एक समग्र, समावेशी और भविष्य के लिए तैयार शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना है।

लचीलापनः ऐसी नीतियां जो राज्यों या क्षेत्रों को अपने विशिष्ट भाषाई और सांस्कृतिक संदर्भों के लिए ढांचे को अनुकूलित करने की अनुमति देती हैं, सफल बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण हैं।2.।शैक्षणिक दृष्टिकोणः

मातृभाषा निर्देशः मातृभाषा में बचपन की शिक्षा पर जोर देना मूलभूत शिक्षा, सांस्कृतिक पहचान को बढ़ावा देने और समझ में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है।

द्विभाषी सामग्री और संसाधनः द्विभाषी शब्दावली, शब्दकोशों, दोहरी भाषा की पुस्तकों और अन्य संसाधनों का विकास और उपयोग करने से छात्रों को अपनी घरेलू भाषा और शिक्षा की भाषा के बीच की खाई को पाटने में मदद मिलती है।

ट्रांसलेजिंगः छात्रों को कक्षा में अपने पूर्ण भाषाई प्रदर्शनों की सूची (ट्रांसलंगुजिंग) का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना, जहां वे समझ और अभिव्यक्ति के लिए भाषाओं के बीच स्विच कर सकते हैं, भाषाई और संज्ञानात्मक विकास दोनों को बढ़ा सकते हैं।

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षणः शिक्षण विधियों में सांस्कृतिक ज्ञान, पूर्व अनुभवों और विविध दृष्टिकोणों को एकीकृत करना विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए सीखने को अधिक प्रासंगिक और प्रभावी बनाता है।

दृश्य और मल्टीमीडियाः आरेख, चित्र, वीडियो और इन्फोग्राफिक्स एड्स समझ का उपयोग करना, विशेष रूप से जटिल विषयों के लिए, बहुभाषी शिक्षार्थियों के लिए सामग्री को अधिक सुलभ बनाना।

भाषा उत्पादन को प्रोत्साहित करनाः छात्रों को समूह चर्चा, सहकर्मी बातचीत और प्रस्तुतियों के माध्यम से निर्देश की भाषा में बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने के अवसर प्रदान करना।

3।शिक्षक प्रशिक्षण और विकासः

बहुभाषी क्षमताः बहुभाषी सेटिंग्स में पढ़ाने और संसाधन के रूप में छात्रों की भाषाई विविधता का लाभ उठाने के लिए कौशल के साथ शिक्षकों को लैस करना सर्वोपरि है।

व्यावसायिक विकासः समावेशी प्रथाओं, सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र और बहुभाषी कक्षाओं के लिए प्रभावी रणनीतियों पर शिक्षकों के लिए चल रहे प्रशिक्षण में निवेश करना।4।पाठ्यक्रम और मूल्यांकनः

सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षण सामग्रीः ऐसे संसाधन बनाना जो शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को प्रतिबिंबित करते हैं, सगाई और समावेशिता को बढ़ावा देते हैं। इसमें अक्सर शिक्षकों, भाषाविदों और स्थानीय समुदायों के बीच सहयोग शामिल होता है।

विभेदित मूल्यांकनः मौखिक प्रस्तुतियों, अवधारणा मानचित्रों और पोर्टफोलियो जैसे वैकल्पिक मूल्यांकन विकल्पों की पेशकश करने से बहुभाषी शिक्षार्थियों को लिखित भाषा कौशल पर कम निर्भर प्रारूपों में अपने ज्ञान का प्रदर्शन करने की अनुमति मिलती है।

पाठ्यक्रम अनुकूलनः स्थानीय सामाजिक-आर्थिक संदर्भों के लिए राष्ट्रीय या क्षेत्रीय पाठ्यक्रम को अपनाना और योग्यता-आधारित शिक्षा पर जोर देना।5.। तकनीकी एकीकरणः

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और अनुकूली शिक्षण उपकरणः बहुभाषी संसाधनों तक पहुंच बढ़ाने और सीखने के अनुभवों को निजीकृत करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना।

बहुभाषी एनएलपी उपकरणः संचार अंतराल को पाटने और पहुंच बढ़ाने के लिए मशीन अनुवाद, भाषण मान्यता और भाषा मॉडलिंग में प्रगति का उपयोग करना।

डिजिटल लर्निंग इकोसिस्टमः प्लेटफ़ॉर्म जो राष्ट्रीय स्तर पर विशाल संसाधन, क्रेडिट ट्रांसफर और बहुभाषी सीखने के विकल्प प्रदान करते हैं।6। बड़े पैमाने पर बहुभाषी समावेशी शिक्षा के लाभः

उन्नत शैक्षणिक प्रदर्शनः छात्र अकादमिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं जब वे उस भाषा में सीख सकते हैं जिसे वे समझते हैं।

संज्ञानात्मक विकासः बहुभाषावाद को समस्या को सुलझाने, रचनात्मकता और मल्टीटास्किंग जैसी संज्ञानात्मक क्षमताओं में सुधार से जोड़ा गया है।

सांस्कृतिक पहचान का संरक्षणः यह भाषाई और सांस्कृतिक विविधता की सुरक्षा करता है और संबंधित और आत्मसम्मान की भावना को बढ़ावा देता है।

समान सीखने के अवसरः सभी छात्रों को सुनिश्चित करता है, विशेष रूप से हाशिए पर या कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों से, शिक्षा के लिए समान पहुंच है।

बेहतर सामाजिक सामंजस्यः विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों को बातचीत करने और एक साथ सीखने की अनुमति देकर सहानुभूति, मतभेदों के प्रति सम्मान और अधिक समावेशी सीखने वाले समुदाय को बढ़ावा देता है।

वैश्विक नागरिकता की तैयारीः छात्रों को भाषाई और अंतरसांस्कृतिक कौशल से लैस करता है जो तेजी से वैश्वीकृत दुनिया में पनपने के लिए आवश्यक हैं।7.। पैमाने पर साकार करने में चुनौतियांः

संसाधन बाधाएंः बहुभाषी शिक्षा को लागू करना संसाधन-गहन हो सकता है, प्रशिक्षित शिक्षकों, सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त सामग्री और पर्याप्त बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है।

योग्य शिक्षकों की कमीः कई भाषाओं में कुशल शिक्षकों की कमी और बहुभाषी शैक्षणिक कौशल से लैस।

पाठ्यक्रम जटिलताः पाठ्यक्रम डिजाइन करना जो प्रभावी रूप से कई भाषाओं को संतुलित करता है और विविध शिक्षण शैलियों को पूरा करता है।

भाषाई विविधता और संचार बाधाएंः भाषाओं की एक विस्तृत सरणी के साथ कक्षाओं का प्रबंधन और घर और स्कूल के बीच संचार चुनौतियों पर काबू पाने।

संसाधनों में पूर्वाग्रह और असमानताः यह सुनिश्चित करना कि शैक्षिक संसाधन और प्रौद्योगिकियां प्रमुख भाषाओं के प्रति पूर्वाग्रह प्रदर्शित न करें।

ब्रिजिंग पॉलिसी और प्रैक्टिसः महत्वाकांक्षी नीति के बीच का अंतर और कक्षा स्तर पर उनके प्रभावी कार्यान्वयन। निष्कर्षः पैमाने पर बहुभाषी, समावेशी शिक्षा की प्राप्ति के लिए व्यापक नीतिगत विकास, नवीन शैक्षणिक दृष्टिकोण, शिक्षक प्रशिक्षण और संसाधन निर्माण में महत्वपूर्ण निवेश और प्रौद्योगिकी के रणनीतिक एकीकरण से जुड़े एक ठोस प्रयास की आवश्यकता होती है। जबकि चुनौतियां बनी हुई हैं, लाभ-बेहतर शैक्षणिक परिणामों और संज्ञानात्मक विकास से लेकर सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ाने तक- यह वास्तव में समान और भविष्य के लिए तैयार शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास है। भारत जैसे देश, अपने विविध भाषाई परिदृश्य के साथ, सक्रिय रूप से इस दृष्टि की दिशा में काम कर रहे हैं, यह प्रदर्शित करते हुए कि बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन, हालांकि जटिल है, वास्तव में समर्पित प्रयास और नवाचार के साथ प्राप्त करने योग्य है।

तेजी से बढ़ रही है शिक्षित घरेलू सहायिकाओं की मांग

विजय गर्ग

दोहरी आय वाले परिवारों की बढ़ती संख्या और दैनिक काम के लिए बाहरी सहायता पर बढ़ती निर्भरता के कारण शिक्षित घरेलू सहायक- सहायिकाओं (मेड) की मांग कई गुना बढ़ गई है। भर्ती मंच वर्कइंडिया की रपट में यह जानकारी दी गई।

भर्ती मंच के मुताबिक, विभिन्न शिक्षा स्तर वाले घरेलू सहायकों की भूमिकाओं में 2024 में सालाना आधार पर तेज वृद्धि हुई। इस दौरान 10वीं कक्षा से कम शिक्षा प्राप्त लोगों की मांग में 112 फीसद की वृद्धि हुई। स्नातकों के लिए मांग में 102 फीसद, 10वीं पास के लिए 94 फीसद और 12वीं पास उम्मीदवारों के लिए असाधारण रूप से 255 फीसद की वृद्धि हुई। रपट में कहा गया कि 12वीं पास और स्नातक मेड की संख्या में तेज वृद्धि दर्शाती है कि नियोक्ता बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की देखभाल या घरेलू कामकाज संभालने जैसी भूमिकाओं के लिए अधिक शिक्षित व्यक्तियों की तलाश कर रहे हैं।

रपट के मुताबिक, पढ़ी-लिखी सहायिका होने से घरेलू कामकाज में भी काफी आसानी होती है। खासतौर से उन घरों में जहां बच्चे होते हैं। पढ़ी-लिखी सहायिका होने पर घरेलू कामकाज के अलावा बच्चों पर भी ध्यान देने में आसानी होती है। खासतौर से बच्चों के गृह कार्य से संबंधित कामकाज में आने वाली दिक्कतें काफी हद तक दूर होती हैं। इसके अलावा छोटी-मोटी व्यावहारिक परेशानियों से निजात मिलती है। वर्कइंडिया के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) और सह-संस्थापक नीलेश डूंगरवाल ने बताया कि भारत का घरेलू रोजगार बाजार एक महत्त्वपूर्ण बदलाव के दौर से गुजर रहा है। अनुभवी कर्मचारियों की बढ़ती मांग और आवेदनों में तेजी, एक विकसित होते घरेलू रोजगार पारिस्थितिकी तंत्र और नौकरी

चाहने वालों के सामने आने वाली आर्थिक जरूरत, दोनों को दर्शाती है। रपट कहती है कि इससे घरेलू कामगारों के कौशल विकास का अवसर भी पैदा होता है, क्योंकि पेशेवर रूप से प्रशिक्षित और शिक्षित मेड की मांग सभी योग्यता स्तरों पर बढ़ती जा रही है।

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से कहा है कि कानून बनाने पर विचार करें: सुप्रीम कोर्ट ने घरेलू कामगारों के अधिकारों की रक्षा के लिए कोई अखिल भारतीय कानून नहीं होने पर चिंता जताते हुए केंद्र सरकार को घरेलू कामगारों के अधिकारों की रक्षा के लिए कानून बनाने पर विचार करने का निर्देश दिया। पीठ ने कहा, घरेलू कामगार एक आवश्यक कार्यबल हैं, बावजूद इसके उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कोई

अखिल भारतीय कानून नहीं है। इसलिए वे नियोक्ताओं और एजेंसियों के शोषण का शिकार होते हैं। पीठ ने श्रम एवं रोजगार मंत्रालय व संबंधित मंत्रालयों को घरेलू कामगारों पर ऐसे कानून की व्यवहार्यता पर विचार के लिए विशेषज्ञ समिति बनाने का निर्देश दिया। इस पर छह सप्ताह के भीतर रिपोर्ट पेश करनी होगी। पीठ ने कहा, समिति की रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद केंद्र सरकार को घरेलू कामगारों की गरिमा और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए कानून लाने के लिए प्रयास करना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने एक महिला घरेलू कामगार को गलत तरीके से बंधक बनाने और तस्करी के आरोपों से संबंधित एक आपराधिक अपील का निपटारा करते हुए ये बातें कही। पीठ ने कहा कि घरेलू कामगारों के शोषण का सीधा कारण कानून नहीं होना है। भारत में घरेलू कामगार काफी हद तक असुरक्षित हैं और उन्हें कोई व्यापक कानूनी मान्यता नहीं है। यही वजह है कि उन्हें कम वेतन, असुरक्षित वातावरण में काम करना पड़ता है।

बोली से भाषा की तपिश तक

विजय गर्ग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्थानीय भाषा की तफतीश फिर शुरू हुई, तो हिमाचल ने अपनी जड़ों में जुराब फंसा ली। बेशक स्थानीय भाषा के पैमाने पूरी तरह भरें या न भरें, लेकिन हफ्ते में एक दिन का सफर भी अगर अपनी बोली, अपनी होली और अपनी चोली में हो जाए, तो संस्कृति के अहम पहलू में बचपना महफूज हो जाता है। भाषाई फार्मूलों की सियासत ने अब तक दक्षिण से महाराष्ट्र तक की तपिश देखी है, लेकिन हिमाचल में हिमाचली भाषा का गठजोड़ राजनीति के आलंबरदारों और तथाकथित साहित्यकारों के सरोकार को संकीर्णता की बोली तक ले जाता है। नतीजा यह कि न तो हम डोगरी भाषा की तरह एकजुट हुए और न ही देश की भाषाओं के परिवार में सम्मिलित हो पाए। बावजूद इसके एक्टिविटी बैग फ्री डे के दौरान अगर स्कूली बच्चे अपनी-अपनी बोलियों में संस्कृति की गहनता, समरूपता, कलात्मकता, माधुर्य, अपनत्व, रागात्मकता और गीत-संगीत के स्पर्श को महसूस करेंगे, तो शिक्षा के औपचारिक परिवेश की जटिलताओं के मध्य एक सहज-सरल व्यवहार की स्वीकृति

बढ़ेगी। स्थानीय बोली चूल्हे से निकली हुई वो पांत है, जहां सामाजिक, सामुदायिक और सांस्कृतिक भावना को मिलजुल कर बैठना सिखाती है। आज अगर किसी हिमाचल बोली का एक अलग चूल्हा पहचाना जा रहा है, तो कल पड़ोस का चूल्हा भी सौगात लाकर जोड़ पाएगा। यानी बोली-बोली में हम हिमाचल की विशालता, एकरूपता और सांस्कृतिक उजास को पहचानेंगे तो सहजता और संपूर्णता से एक दिन हमारे-शब्द, उनके अल्फाज, रावी के पानी को सतलुज से मिलाएंगे। भरमौर के अर्थों को सिरमौर में टटोल पाएंगे। हमारी तमाम बोलियों के बीच सौम्यता, संप्रेष्णीयता, संसर्ग और सहजता का कमोबेश एक जैसा खाका है। यह भाषा का वर्गीकरण नहीं, अपनत्व की स्वीकारोक्ति में ही पल्लवित और पुष्पित होगा। जब कुलदीप शर्मा, 'इन्हां बडियां जो तुडक़ा लाना'ओ ठेकेदारनिए' गाते हैं, तो यह बोली नहीं भाषा है। जब यही गायक, 'रोहड़ू जाना मेरी अमिए, रोहड़ू जाना हो।' गाता है तो भी हिमाचली भाषा की संवेदना अपना मर्म बताती है।

संस्कृति के पन्ने इसी संवेदना से राष्ट्रीय हो जाते हैं, इसलिए हिमाचली गायक अपनी गायन शैली के वैविध्य में किसी क्षेत्र विशेष की बोली में नहीं देखे गए। संस्कृति के अध्यायों को राज्य या राष्ट्र की परिभाषा में देखे बिना न नागरिक मुकम्मल होंगे और न ही राष्ट्र भावना के संदर्भ। हमें अगर अपनी पीढियों को मुकम्मल करना है, तो सर्वप्रथम राज्य के सभी पहलुओं में सशक्त होना होगा। स्कूलों में पहाड़ी बोलना अगर शैक्षणिक योग्यता की तलाश शुरू कर दे, तो एक दिन हिमाचली भाषा के तमाम स्रोत एक नदी बन कर बहना भी सीख लेंगे। विडंबना यह है कि अब कला, भाषा एवं संस्कृति भी अपने योगदान में सिर्फ सियासी पदचिन्ह ही देख रहा है। भाषा का अर्थ साहित्यकारों की पुस्तकों की खरीद या औपचारिक आयोजनों का बसेरा ही बना रहा, जबकि बोलियों के समागम में हिमाचली भाषा के संस्कार पुष्ट करने की यात्रा शुरू होनी चाहिए थी। इसी विभाग का कलात्मक पहलू अगर शोध की परिपाटी पर चले तथा इसके अधीन मंदिरों को संस्कृति, कला, गीत-संगीत व भाषा की प्रस्तुति का अहम केंद्र बनाए, तो हिमाचली पहचान के कई सेतु व संगम सक्रिय भूमिका निभाएंगे। प्रदेश के कला, भाषा एवं संस्कृति विभाग को अपने कत्र्तव्य के मंच पर हिमाचल की पेशकश को गीत-संगीत व नृत्य की विशिष्ट लय और बोलियों से प्रादेशिक भाषा के व्याकरण तक एक केंद्रीय भूमिका निभानी होगी। बहरहाल शिक्षा नीति की अंगुली पकडक़र हम स्कूल परिसरों के भीतर बच्चों की जुबान पर स्थानीय बोली चढ़ा रहे हैं। इसी प्रयोग का वैज्ञानिक व भावानात्मक विस्तार बोलियों को हिमाचली भाषा के आलोक तक पहुंचा सकता है, बशर्ते राज्य की पहचान में हर नागरिक अपनी अहमियत के सारे अर्थ भाषा के परिप्रेक्ष्य में खोजे तथा स्वीकार करे कि हम हिमाचली एक संस्कृति-एक भाषा और एक परंपरा के गठबंधन में अनूठी पहचान हैं।

₹एक राष्ट्र, कई आवाज़ें: भारत में भाषाई विविधता

विजय गर्ग

भारत अपने कई क्षेत्रों में कई प्राचीन और भाषाई रूप से समृद्ध भाषाओं का घर है। एक ही घर में, एक युवा व्यक्ति बोल सकता है, उदाहरण के लिए, ओडिया (ओडिशा के पूर्वी राज्य में बोली जाने वाली भाषा) अपने दादा-दादी के साथ, होमवर्क के लिए अंग्रेजी में स्विच करें, और यूट्यूब पर हिंदी गाने सुनने का आनंद लें।

भ्रमित होने से दूर, यह सह-अस्तित्व आवश्यक और प्राकृतिक है। यह एक ऐसे राष्ट्र की पहचान है जहां भाषा विविधता को दूर करने में बाधा बनने के बजाय एक ताकत के रूप में अपनाया जाता है।

उन्होंने कहा, " [भारतीय भाषाओं] ने हमेशा एक-दूसरे को प्रभावित और समृद्ध किया है। ₹इस तरह की भ्रांतियों से दूरी बनाना और सभी भाषाओं को गले लगाना और समृद्ध करना हमारी सामाजिक जिम्मेदारी है उनकी टिप्पणी ने एक व्यापक संदेश को मजबूत कियाः कि भाषाई विविधता एक बाधा नहीं है, बल्कि एक साझा सांस्कृतिक ताकत है जो भारत को एक साथ जोड़ती है।

लेकिन ऐसे विविध देश में भाषा राजनीतिक रूप से विभाजनकारी मुद्दा भी हो सकता है। और भारत के भीतर हिंदी, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के उपयोग को आकार देने की कोशिश के रूप में देखे गए शब्दों और कार्यों के लिए मोदी और उनकी सरकार के सदस्यों की आलोचना की गई है। देश की भाषाई जटिलता के कारण, स्थिति हमेशा नेविगेट करने के लिए अधिक जटिल होती है क्योंकि यह पहली बार दिखाई दे सकती है।

2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में कुल 19,500 भाषाएँ या बोलियाँ हैं जिन्हें मातृभाषा के रूप में कहा जाता है। उनमें से 22 भाषाओं को भारतीय संविधान के तहत आधिकारिक माना जाता है।

2011 की जनगणना में पाया गया कि 44% भारतीय, लगभग 528 मिलियन लोग, हिंदी को अपनी पहली भाषा के रूप में बोलते हैं (जिसका अर्थ है कि घर पर क्या बोला जाता है)। इसी तरह, लगभग 57% लोग इसे दूसरी या तीसरी भाषा के रूप में उपयोग करते हैं।

इसका मतलब है कि हिंदी की पूरे क्षेत्रों में व्यापक उपस्थिति है, लेकिन यह मराठी, बंगाली (97 मिलियन), तेलुगु (81 मिलियन), तमिल (69 मिलियन) और मेतेई (1.8 मिलियन) सहित कई अन्य भाषाओं के साथ मौजूद है।

2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में पहली, दूसरी और तीसरी भाषा बोलने वालों को दिखाने वाली तालिका। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में पहला, दूसरा और तीसरा भाषा बोलने वाला। 2011 भारतीय जनगणना, CC BY-NC-SA राष्ट्रीय स्तर पर, भारत की दो आधिकारिक भाषाएँ हैं: हिंदी और अंग्रेजी। हिंदी का उपयोग केंद्र सरकार के भीतर संचार के लिए किया जाता है, जबकि अंग्रेजी का व्यापक रूप से कानूनी, प्रशासनिक और अंतर्राष्ट्रीय मामलों में उपयोग किया जाता है। प्रत्येक राज्य राज्य-स्तरीय शासन के लिए अपनी आधिकारिक भाषा चुन सकता है। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु तमिल का उपयोग करता है, महाराष्ट्र मराठी का उपयोग करता है, और इसी तरह।

लेकिन दैनिक जीवन में, लोग अक्सर भाषाओं के बीच स्विच करते हैं कि वे कहां हैं और वे घर पर, काम पर या सार्वजनिक स्थानों पर किससे बात कर रहे हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, चार भारतीयों में से लगभग एक ने कहा कि वे कम से कम दो भाषाएं बोल सकते हैं, और 7% से अधिक ने कहा कि वे तीन बोल सकते हैं।

भारत ने 1960 के दशक में शिक्षा में तीन भाषा का सूत्र पेश किया था। इस नीति दिशानिर्देश ने छात्रों को तीन भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित कियाः उनकी क्षेत्रीय मातृभाषा, हिंदी (यदि यह पहले से ही उनकी पहली भाषा नहीं है) और अंग्रेजी। इसका उद्देश्य विभिन्न राज्यों में एक लचीला और समावेशी दृष्टिकोण पैदा करना था।

2020 में, मोदी सरकार ने एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति शुरू की, जिसने राज्यों को यह चुनने के लिए अधिक लचीलापन दिया कि अंग्रेजी के साथ दो भारतीय भाषाओं को पढ़ाया जाना चाहिए, लेकिन सभी राज्यों में सिफारिश को अनिवार्य कर दिया। इससे कई राज्यों में एक प्रतिक्रिया हुई है क्योंकि कुछ लोगों को डर है कि यह प्रभावी रूप से बैकडोर द्वारा हिंदी शिक्षण का परिचय देता है और अन्य भाषाओं के उपयोग को पतला करेगा।

राज्य और केंद्र शासित प्रदेश द्वारा भारत की आधिकारिक भाषाओं को दिखाने वाला नक्शा। राज्य और केंद्र शासित प्रदेश द्वारा भारत की आधिकारिक भाषाएँ। विकिमीडिया कॉमन्स के माध्यम भारत में अंग्रेजी की भूमिका के बारे में भी काफी बहस हो रही है, जो लगभग 10.6% भारतीय कुछ हद तक बोलते हैं, लेकिन कुछ का मानना है कि औपनिवेशिक शासन का अवशेष है। मोदी ने खुद सुझाव दिया है कि यह मामला है और अंग्रेजी के आधिकारिक उपयोग को कम करने के लिए कार्रवाई की है, उदाहरण के लिए मेडिकल स्कूलों में।

हालांकि, उन्होंने अंग्रेजी के महत्व को भी स्वीकार किया है, विशेष रूप से वैश्विक संचार में, और सभी भारतीय भाषाओं के मूल्य को देश की एकता और प्रगति के लिए लाया गया है। उन्होंने महाराष्ट्र में दर्शकों से कहा, ₹सभी भाषाओं को गले लगाना हमारा कर्तव्य है,₹ अंग्रेजी सहित भारतीय भाषाओं ने हमेशा एक-दूसरे को समृद्ध किया है और हमारी एकता की नींव बनाई है।

कई लोग भाषा को भारत के कई भाषाई समुदायों के बीच एक कड़ी के रूप में देखते हैं। अन्य लोग देखते हैं कि यह सामाजिक गतिशीलता के लिए एक उपकरण है, विशेष रूप से निचली जातियों के लिए। कुछ ने सरकार पर सामाजिक विशेषाधिकारों को बनाए रखने और हिंदी के प्रभुत्व को बढ़ावा देने के लिए अंग्रेजी को हतोत्साहित करने का भी आरोप लगाया है।

दूसरी ओर, 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति अंग्रेजी के शिक्षण को अनिवार्य करती है। यह अंग्रेजी और स्थानीय भाषाओं में द्विभाषी पाठ्यपुस्तकों की सिफारिश करता है, और प्राथमिक शिक्षा में मातृ भाषाओं के साथ अंग्रेजी को ₹जहां भी संभव हो₹ सिखाया जाना चाहिए।

सरकार डिजिटल दुनिया को लोगों के लिए अधिक समावेशी बनाने के लिए भी कदम उठा रही है, चाहे उनकी भाषा कुछ भी हो। 2022 में मोदी द्वारा शुरू की गई, भाषिनी परियोजना एक राष्ट्रीय एआई पहल है जो सभी 22 आधिकारिक भाषाओं में भाषण-से-पाठ, वास्तविक समय अनुवाद और डिजिटल पहुंच का समर्थन करती है। इसका उद्देश्य डिजिटल प्लेटफॉर्म और सार्वजनिक सेवाओं को अधिक समावेशी बनाना है, खासकर ग्रामीण और दूरदराज के समुदायों के लिए। जैसा कि कवि और नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने एक बार लिखा थाः 'अगर ईश्वर ने ऐसा चाहा होता, तो वह सभी भारतीयों को एक भाषा के साथ बोलते ... भारत की एकता रही है और हमेशा विविधता में एकता रहेगी

भारत में, बच्चे आज अपनी मातृभाषा बोलते हुए बड़े होते हैं, कई क्षेत्रों में संवाद करने के लिए हिंदी सीखते हैं, और वैश्विक कनेक्शन के लिए अंग्रेजी कौशल प्राप्त करते हैं। भारत का भविष्य एक भाषा को दूसरे के ऊपर चुनने पर निर्भर नहीं करता है, बल्कि उन्हें अगल-बगल पनपने में सक्षम बनाता है।

'भाषा सीखने के लिए एक और खिड़की है जिससे दुनिया को देखने के लिए है ऐसी हजारों खिड़कियों से भारत का भविष्य एकता और विविधता दोनों में निहित है।

मोदी का 'स्वदेशी' आह्वान

प्रधानमंत्री मोदी ने देशवासियों को 'स्वदेशी का प्रचारक' बनने का आह्वान किया है। अपने चुनाव क्षेत्र वाराणसी से यह आह्वान देश भर के लिए है कि सभी संकल्प लें और अपने घरों में स्वदेशी सामान ही लेकर आएं। प्रधानमंत्री मोदी को अचानक यह आह्वान क्यों करना पड़ा, जबकि संघ परिवार के लिए 'स्वदेशी' एक बुनियादी एजेंडा रहा है। आरएसएस का सहयोगी संगठन 'स्वदेशी जागरण मंच' दशकों से इस दिशा में प्रयासरत रहा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था और कारोबार के मौजूदा दौर में कोई भी देश 'स्वदेशी' के भरोसे न तो आर्थिक विकास कर सकता है और न ही अस्तित्व की रक्षा कर सकता है। भारत आज एक खुली अर्थव्यवस्था वाला देश है और उदारीकरण, आर्थिक सुधारों का प्रणेता रहा है। भारत की अर्थव्यवस्था और बाजार को 'बंद अर्थव्यवस्था' के दौर में नहीं धकेला जा सकता। 'स्वदेशी' के सीधे मायने हैं कि आप विदेशी निवेश का प्रवाह बाधित कर रहे हैं। स्थिरता के माहौल को फिर से अस्थिर करना चाहते हैं। आत्मनिर्भर भारत के लिए 'स्वदेशी' एक जड़ स्थिति है। अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप के 25 फीसदी टैरिफ थोपने के बाद प्रधानमंत्री की 'स्वदेशी' पर यह पहली सार्वजनिक प्रतिक्रिया है। 'मेक इन इंडिया' के प्रथम प्रोमोटर प्रधानमंत्री ही हैं। यह सिलसिला मोदी के प्रधानमंत्री बनने के कुछ माह बाद ही शुरू कर दिया गया था। दिसंबर, 2014 में उद्योग पर 'राष्ट्रीय कार्यशाला' के दौरान 'स्वदेशी' पर भी विमर्श किया गया था। बेशक आज भी विनिर्माण के क्षेत्र में इतना विकास और विस्तार नहीं हो पाया है कि वह देश के जीडीपी में 25 फीसदी का योगदान दे सके। हालांकि कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान भारत ने 60 फीसदी टीकों की आपूर्ति जरूरतमंद देशों को की। यह टीका भारत की कंपनियों ने ही बनाया और विकसित किया है तथा उसका उत्पादन वैश्विक स्तर पर किया जा रहा है। भारत ने 102 'स्वदेशी वंदे भारत' ट्रेरन का नेटवर्क भी खड़ा किया है।

आज भारतीय कंपनियां रक्षा उत्पादन में इतनी सक्रिय और व्यस्त हैं कि वे करीब 90 देशों को हथियारों की आपूर्ति कर रही हैं, लेकिन यह भी यथार्थ है कि हमें लड़ाकू विमान, हेलीकॉप्टर और प्रमुख वायु रक्षा प्रणाली विदेशों से ही खरीदने पड़ रहे हैं। अभी हम रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की 'दहलीज' पर ही खड़े हैं। हमें अपनी जरूरत का खाद्य तेल अब भी विदेश से आयात करना पड़ रहा है। हम स्वदेशी तेल का ब्रांड और उत्पादन स्थापित नहीं कर पाए हैं। 'स्वदेशी' महज एक नारा है, व्यावहारिक नहीं है। बेशक भारत का कपड़ा क्षेत्र 14.5 करोड़ लोगों को रोजगार दे रहा है। हम अमरीका को भी वस्त्र, परिधान आदि का अच्छा-खासा निर्यात करते हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स में भारत ने दोगुनी बढ़ोतरी की है, लेकिन कारों, मोबाइल आदि में जो सेमीकंडक्टर की 'चिप' लगती है, भारत उसके शोध, विकास, व्यापार के लिए आज भी सिंगापुर, ताइवान जैसे छोटे देशों पर ही आश्रित है। चीन, जापान, अमरीका की तो बात मत कीजिए। उनसे हमारा मुकाबला किया ही नहीं जा सकता। दो साल पहले भारत सरकार के बजट में युवा छात्रों को प्रशिक्षित और उनके रोजगार के मद्देनजर देश की 500 बड़ी कंपनियों में 'इंटर्नशिप' की योजना की घोषणा की गई थी। उसकी मौजूदा स्थिति क्या है, सरकार ने यह ब्रीफ करने की कभी जरूरत ही नहीं समझी। यह सवाल बेहद अहम और संवेदनशील है कि बीते 5 सालों के दौरान करीब 20 लाख पासपोर्ट 'सरेंडर' क्यों किए गए? वे लोग विदेशों में गए, काम में जुटे और फिर विदेशों में ही बस गए। यह आंकड़ा ऐसा है, जो 'स्वदेशी' की अवधारणा और संभावनाओं को नकारता है। 'स्वदेशी' एक व्यापक कैनवस है, लिहाजा सभी वस्तुओं का जिक्र करना संभव नहीं है। प्रधानमंत्री 'लोकल को वोकल' का नारा भी देते रहे हैं। विडंबना यह है कि इतने सालों के प्रयासों के बावजूद हमारे देश में न तो हुनरमंद श्रम है, न ही शोध एवं विकास पर अपेक्षाकृत फोकस है। स्वदेशी से ही आप ट्रंरप टैरिफ को पराजित नहीं कर सकते।

ओम नमो भगवते वासुदेवाय! श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव का आयोजन

डॉ हृदयेश कुमार

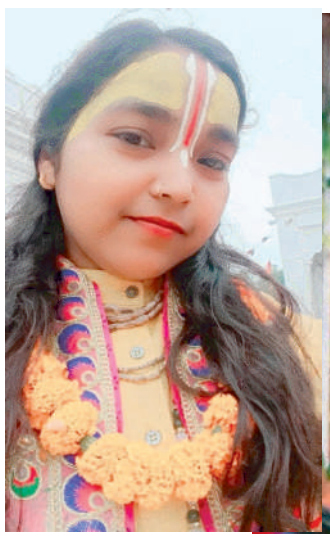

आदरणीया भारत विख्यात आध्यात्मिक प्रवक्ता श्री गौरी शंकर प्रिया जी के नेतृत्व में होने जा रही है आप सभी लोग इस कथा का आनन्द लें

हरियाणा सैक्टर 3 फरीदाबाद के जाट भवन में 10 अगस्त से 17 अगस्त तक श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव का आयोजन

आदरणीया भारत विख्यात आध्यात्मिक प्रवक्ता श्री गौरी शंकर प्रिया जी के मुखार बिंदु से सीधा प्रसारण किया जाएगा इस कथा का आयोजन RWA कमेटी के पदाधिकारीगण और अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के सदस्य और सभी सैक्टर वासी कॉलोनी वासी और श्रद्धालु भाई व बहनों तथा मीडिया बंधुओं द्वारा किया जाएगा

मानवमात्र को जीवन की सच्ची राह दिखाने वाले और पंचम वेद कहे जाने वाले श्रीमद्भागवत का श्रवण करने के लिए आयोजित इस श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव में मैं सभी श्रद्धालुगण को शुभकामनाएं देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह सभी के जीवन को ज्ञान के आलोक से जगमगाएं।

इस आयोजन के लिए भारत सरकार के मंत्री और हरियाणा प्रदेश के मंत्री भी शिरकत करेंगे ऐसे आयोजनों से ही मानव संस्कृति के लिए श्रीमद्भागवत के महत्व का प्रतिपादन होता है और भारतीय संस्कृति समृद्ध होती है।

आध्यात्मिक प्रवक्ता श्री गौरी शंकर प्रिया जी का कहना है कि विश्व में भौतिकता के प्रभाव के चलते युवा पीढ़ी का जीवन तनाव ग्रस्त है। इसी को देखते हुए आप कथा वाचन के साथ-साथ आज की युवा पीढ़ी को अध्यात्म की ओर प्रेरित कर उनका मार्ग दर्शन कर रही हैं। इससे लाखो छात्रों में आशा की किरण जगी है। इतना ही नहीं युवा पीढ़ी को तनाव प्रबंधन का ज्ञान हुआ है, जो वर्तमान में नितान्त जरूरी है।

इससे युवा पीढ़ी हर क्षेत्र में बेहतर करने के लिए तैयार होगी, जिससे युवा राष्ट्र की तरक्की में अपना महती योगदान देगें। इस कार्य हेतु मेरी अनंत शुभकामनाएं श्री जया किशोरी जी को समर्पित है। आपकी प्रखर बुद्धि का ही परिणाम है आपने बहुत कम उम्र में अध्यात्म और श्रीमद्भागवत को जानकर मानवता को जगाने का काम किया है।

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।

सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

भगवान श्रीकृष्ण कहते है कि अर्जुन सफलता और असफलता की आशक्ति को त्याग कर सम्पूर्ण भाव से समभाव होकर अपने कर्म करो। यही समता की भावना अध्यात्म व योग कहलाती है। आज हम सभी ने समता भावना के मार्ग पर चल कर विश्व को समभाव का संदेश देना है तभी हम विश्व में फिर से विश्वगुरू कहला पाएगें।

श्रीमद्भागवत ही एक पुराण है, जिसे जीवन में अपनाकर प्राणी मात्र का कल्याण सम्भव है। यही भगवत्स्वरूप का अनुभव कराने वाला और समस्त वेदों का सार है। संसार में फंसे हुए जो लोग इस घोर अज्ञान रूपी अन्धकार से पार पाना चाहते हैं उनके लिए आध्यात्मिक तत्वों को प्रकाशित कराने वाला यह एक अद्वितीय दीपक है।

भाईयों-बहनों!

जहां भगवान का नाम नियमित रूप से लिया जाता है। वहां सुख, समृद्धि व शांति बनी रहती है। जीवन को कर्मशील बनाने के लिए श्रीमदभागवत कथा का श्रवण करना जरूरी है। आवश्यकता है निर्मल मन ओर स्थिर चित्त के साथ कथा श्रवण करने की। भागवत श्रवण से मनुष्य को परम आनन्द की प्राप्ति होती है। भागवत श्रवण मनुष्य के सम्पूर्ण कलेश को दूर कर भक्ति की ओर अग्रसर करती है।

मनुष्य जब अच्छे कर्मों के लिए आगे बढ़ता है तो सृष्टि की सारी शक्ति समाहित होकर मनुष्य को और शक्तिशाली बनाती है और सारे कार्य सफल होते हैं। ठीक उसी तरह बुरे कर्मो की राह के दौरान सम्पूर्ण बुरी शक्तियां हमारे साथ हो जाती है। इसलिए हमें स्वयं निर्णय करना होता कि हमें किस राह पर चलना है।

छल और छलावा ज्यादा दिन नहीं चलता। छल जब जिस मानव जीवन में आ जाए उसे भगवान भी ग्रहण नहीं करते। निर्मल मन प्रभु को स्वीकार्य है। व्यक्ति को सांसारिक भौतिक सुखों का त्याग कर ईश्वर का भजन करना चाहिए। ताकि मोक्ष की प्राप्ति हो, भगवान की लीला का कोई पार नहीं है। यही भागवत का सार है।

प्रिय श्रद्धालु भाई-बहनों!

भागवत कथा के श्रवण से मानव के भीतर का साधु जागृत होता है और ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ता है। भागवत में शरीर को आत्मा का वस्त्र कहा गया है। जीव चेतन स्वरूपी है, इसीलिए उसे बहते पानी की तरह होना चाहिए। चलते रहो, रूको मत, हम स्वरूप से चेतन हैं- इसीलिए प्रेम, करूणा, दया यही जीवन के वास्तविक भाव हैं।

आज संसार में भौतिकवाद का बोल-बाला है। इसलिए आज सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि हम सब अपनी संस्कृति के जीवन मूल्यों और शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाएं और स्वयं इनका अनुसरण करें। आज तो हमारे लिए और खुशी की बात है कि हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में तैयार राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में मूल्य आधारित शिक्षा नीति तैयार की गई है, जिसमें योग और अध्यात्म को स्थान दिया गया है। जब अध्यात्म और नैतिक व संवैधानिक मूल्यों का हमारी युवा पीढ़ी को ज्ञान होगा तो देश में भ्रष्टाचार व्यभिचार के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों का खात्मा होगा और एक आदर्श समाज की स्थापना होगी।

इस दृष्टि से श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव का आयोजन बहुत ही प्रासंगिक है। मैं पुनः आप सबको और विशेष रूप से हरियाणा प्रदेश वैश्य महासम्मेलन को बधाई देता हूँ कि आप समाज में श्रीमद्भागवत के उपदेशों के माध्यम से खुशबू भरना चाहते हैं। आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय और मानव के लिए फलदायी है।

अति महत्वाकांक्षा के आत्मशिकार बने धनखड़

हरीश शिवननी

अब जब देश के नए उपराष्ट्रपति पद के लिए चुनाव-तिथि घोषित हो गई है तो अब 'पूर्व' बन चुके जगदीप धनखड़ की चर्चा फिर निकल आई है। अब यह बात कोई स्वीकार्य नहीं रही है कि 21 जुलाई को उपराष्ट्रपति पद से जगदीप धनखड़ के इस्तीफे के मूल में स्वास्थ्य कारण नहीं हैं। भारतीय राजनीति के चरित्र के जानकार अच्छी तरह से जानते हैं कि स्वास्थ्य को लेकर इस महादेश में उपराष्ट्रपति तो दूर, किसी कस्बे की नगरपालिका का पार्षद भी कुर्सी नहीं छोड़ता। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में अब तक केवल दो उपराष्ट्रपति, वी.वी. गिरी और आर. वेंकटरमण ने इस्तीफा दिया था, लेकिन उन्होंने स्वास्थ्य कारणों से नहीं, बल्कि राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ने के लिए इस्तीफा दिया था। धनखड़ के त्यागपत्र का कारण लिखित रूप में भले ही स्वास्थ्य रहा हो, किंतु वास्तविक कारण को समझने के लिए अब राजनीतिक अंतःपुर के अभेद्य कवच को भेदना कठिन नहीं है।

दरअसल पिछले लंबे समय से धनखड़ का व्यवहार संवैधानिक प्रमुख की भूमिका से हटकर कार्यपालिका प्रमुख जैसा होने लगा था। इसे कुछ घटनाओं से समझा जा सकता है। गत वर्ष 3 दिसंबर को धनखड़ ने केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुंबई में एक समारोह में न्यूनतम समर्थन मूल्य और किसानों से किए गए वादों को लेकर तीखे सवाल पूछे। उनके पूछने के तरीका इतना तल्ख़ था कि सब स्तब्ध रह गए थे। उधर, इस वर्ष मई में अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस की भारत यात्रा के बाद उन्होंने भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर से वेंस से हुई बातचीत की रिपोर्ट मांग ली। यह भी एक असामान्य बात थी कायदे से कैबिनेट मंत्रियों से सवाल पूछने या रिपोर्ट मांगने का अधिकार प्रधानमंत्री को ही होता है। इन दोनों घटनाओं को मोदी सरकार ने बहुत गंभीरता से लिया। धनखड़ के बदले और असहज करने वाले व्यवहार के संकेत पहले भी मिल रहे थे। गत वर्ष ही 20 जुलाई को पत्नी के जन्मदिन पर सरकारी खर्चे पर 800 लोगों को आमंत्रित और इसमें विपक्षी दलों के नेताओं, ख़ास तौर पर शराब घोटाले में जेल यात्रा कर आए आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल की उपस्थिति ने कई प्रश्न खड़े किए। उनकी यह पार्टी ऐसी थी जैसे वे कुछ बड़ा करने जा रहे थे, लगता था जैसे वे भविष्य के लिए एक नया रास्ता, नए समीकरण बनाए जा रहे थे। धनखड़ ने सुप्रीम कोर्ट के दिनों के पुराने मित्र समाजवादी पार्टी के सांसद कपिल सिब्बल से अपने संबंधों को सक्रिय किया तो कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे के नेतृत्व में विपक्ष भी आगे बढ़ रहा था।

उधर, संसद के मानसून सत्र में न्यायाधीश निवास से अधजले नोटों के बोरों वाले बहुचर्चित जस्टिस धनन्जय वर्मा के प्रस्तावित महाभियोग मामले के अवसर का उपयोग सरकार कॉलेजियम प्रणाली को खराब रोशनी में दिखाने के लिए करना चाहती थी। वह नहीं चाहती थी कि धनखड़ विपक्षी सांसदों द्वारा लाए गए प्रस्ताव को स्वीकार करें। जब उन्होंने अपने फैसले पर अडिग रहने का फैसला किया, तो बीजेपी ने इसे बेहद गंभीरता से लिया। यह भी चर्चा थी कि सभापति धनखड़ जस्टिस शेखर यादव के खिलाफ भी महाभियोग चलाने के प्रस्ताव पर विचार करने लगे थे। उनके विरुद्ध महाभियोग का प्रस्ताव कपिल सिब्बल लेकर आए, और भ्रष्टाचारी जस्टिस वर्मा के खिलाफ कोर्ट में वर्मा के वकील भी कपिल सिब्बल ही हैं। इस तरह उनकी विपक्ष के साथ बढ़तीं नजदीकियां उनकी बढ़ रही महत्त्वाकांक्षा के संकेत दे रही थीं कि क्या वे जुलाई 2027 में विपक्ष के सहयोग से भारत के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर बैठने की लालसा पाल रहे थे? उनके इस्तीफ़े के बाद एक टीवी चैनल की एक चौंकाने वाली एक्सक्लूसिव रिपोर्ट में चंद्रबाबू नायडू को एनडीए गठबंधन छोड़ने के लिए उकसाने वाली बात भी सार्वजनिक रूप से उजागर हुई। इन सबसे राजनीतिक पंडितों का विश्लेषण है कि क्या वे एनडीए में तोड़फोड़ कर मोदी सरकार को अल्पमत में लाकर स्वयं इस पद के लिए विपक्ष के साझा उम्मीदवार बनने की दिशा में योजनाबद्ध रूप से कदम-दर-कदम आगे बढ़ रहे थे? धनखड़ सार्वजनिक जीवन में कितने महत्वाकांक्षी रहे हैं, इस बात का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि राजनीति में वे शुरू से ही सत्ताधारियों से संपर्क बढ़ाने में निरंतर सक्रिय रहे।

सन-1989 में जनता दल नेता देवी लाल के 75वें जन्मदिन पर 75 गाड़ियां लेकर बोट क्लब दिल्ली पहुंच देवीलाल को बर्थ डे विश से राजनीति शुरु करने वाले धनखड़ वीपी सिंह, चंद्रशेखर, राजीव गांधी शरद पवार के नजदीक रहे। 1998 में काले हरिण के मामले में सलमान खान की पैरवी कर उन्हें जोधपुर उच्च न्यायालय से जमानत दिला कर देश भर का ध्यान आकर्षित करने के बाद में भाजपा में आ गए। 2019 में भाजपा ने इनको पश्चिम बंगाल का राज्यपाल बना दिया। वहाँ कई मामलों में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से टकरा कर भाजपा की नजरों में चढ़ गए और 2022 में उपराष्ट्रपति बना दिए गए। वे जानते थे कि उपराष्ट्रपति के रूप में उनकी भूमिका सीमित ही है। अमेरिका में कहा जाता है कि उपराष्ट्रपति को राष्ट्रपति बनने से केवल एक सांस की दूरी रहती है। यदि राष्ट्रपति की मृत्यु हो जाती है, तो उपराष्ट्रपति स्वतः राष्ट्रपति बन जाता है और शेष अवधि के लिए राष्ट्रपति ही रहता है। भारत में, यदि राष्ट्रपति की मृत्यु हो जाती है, तो उपराष्ट्रपति कार्यवाहक राष्ट्रपति बनता है। वह तब तक ऐसा ही रहता है जब तक कि कोई नया राष्ट्रपति चुना नहीं जाता। बी.डी. जत्ती भारत के उपराष्ट्रपति थे। वे दो बार कार्यवाहक राष्ट्रपति रहे, लेकिन वह कभी राष्ट्रपति नहीं बने। राष्ट्रपति तो ख़ैर धनखड़ भी नहीं बन पाए लेकिन अपनी महत्वाकांक्षा के आत्मशिकार हुए धनखड़ अपने इस्तीफ़े की कॉपी सोशल मीडिया X पर डालने वाले देश के पहले उपराष्ट्रपति ज़रूर बन गए।

खंडवा से अमरता तक: किशोर कुमार की सुरों भरी यात्रा

रितेश कुमार जैन

किशोर कुमार—एक ऐसी आवाज़ जो दिलों की गहराइयों में उतरती है, एक ऐसा जादू जो समय की सीमाओं को लांघता है, और एक ऐसी शख्सियत जो भारतीय सिनेमा के आकाश में सूरज की तरह चमकती है। 4 अगस्त 1929 को मध्यप्रदेश के खंडवा में जन्मे आभास कुमार गांगुली, जिन्हें दुनिया किशोर दा के नाम से पूजती है, केवल एक गायक, अभिनेता, या संगीतकार नहीं थे—वे एक जीवंत कला थे, जिन्होंने हर गीत में अपनी आत्मा उड़ेल दी। उनकी आवाज़ में प्रेम की मिठास, जुदाई का दर्द, मस्ती की शरारत, और जीवन का दर्शन एक साथ बसता था। किशोर कुमार ने न केवल हिंदी सिनेमा को समृद्ध किया, बल्कि हर संगीत प्रेमी के दिल में एक अमिट छाप छोड़ी।

खंडवा के साधारण परिवेश में जन्मे किशोर कुमार का बचपन सामान्य था, लेकिन उनकी प्रतिभा असाधारण। उनके पिता कुंजीलाल गांगुली एक वकील थे, और बड़े भाई अशोक कुमार उस समय सिनेमा के एक चमकते सितारे थे। अशोक के बुलावे पर किशोर मुंबई आए, जहां उनकी यात्रा एक अभिनेता के रूप में शुरू हुई। उनकी पहली फिल्म शिकारी (1946) थी, लेकिन उनका दिल अभिनय से ज्यादा गायकी में रमता था। संगीत की कोई औपचारिक शिक्षा न होने के बावजूद, उन्होंने अपनी सहज प्रतिभा और जुनून से वह मुकाम हासिल किया जो शास्त्रीय प्रशिक्षण के बिना दुर्लभ है। उनकी प्रेरणा थे के.एल. सहगल, जिनकी गायकी का प्रभाव उनके शुरुआती गीतों में साफ झलकता है।

किशोर कुमार की गायकी का पहला बड़ा पड़ाव था ज़िद्दी (1948) का गीत 'मरने की दुआएं क्यों मांगूं', जिसने उनकी प्रतिभा की झलक दिखाई। लेकिन असली शोहरत उन्हें 1969 में आराधना के गीतों 'मेरे सपनों की रानी' और 'रूप तेरा मस्ताना' से मिली। इन गीतों ने उन्हें रातों-रात स्टार बना दिया और राजेश खन्ना की आवाज़ के रूप में उनकी पहचान को अमर कर दिया। 1970 का दशक किशोर दा और राजेश खन्ना की जोड़ी का सुनहरा दौर था। अमर प्रेम का 'चिंगारी कोई भड़के', कटी पतंग का 'ये शाम मस्तानी', और महबूब की मेहंदी का 'ये जो चिलमन है' जैसे गीतों ने लाखों दिलों को जीत लिया। उनकी आवाज़ में एक ऐसी जादूगरी थी जो हर गीत को जीवंत कर देती थी।

किशोर कुमार की सबसे बड़ी ताकत थी उनकी आवाज़ की अभिव्यक्ति। वे गीत में केवल शब्द नहीं गाते थे, बल्कि किरदार की आत्मा को जीते थे। चाहे सफर का 'ज़िंदगी के सफर में' हो, जिसमें जीवन की नश्वरता का दर्शन छिपा है, या पड़ोसन का 'मेरे सामने वाली खिड़की में' जिसमें हास्य की चमक है—किशोर दा हर भाव को अपनी आवाज़ में ढाल लेते थे। उन्होंने लगभग 2,700 गीत गाए, जिनमें रोमांटिक, दर्दभरे, हास्यपूर्ण, और दार्शनिक गीत शामिल हैं। कुदरत का 'हमें तुमसे प्यार कितना', अनुराधा का 'हाय रे वो दिन क्यों न आए', और डॉन का 'खाइके पान बनारस वाला' जैसे गीत उनकी बहुमुखी प्रतिभा के गवाह हैं।

उनकी आवाज़ हर अभिनेता के लिए सटीक बैठती थी। राजेश खन्ना की रोमांटिक छवि, अमिताभ बच्चन का गुस्सैल युवा, देव आनंद का चुलबुला अंदाज़, या धर्मेंद्र का देसी ठाठ—किशोर की आवाज़ हर चेहरे को और जीवंत बना देती थी। आर.डी. बर्मन के साथ उनकी जोड़ी ने हिंदी सिनेमा को कई कालजयी गीत दिए। हरे रामा हरे कृष्णा का 'दम मारो दम', जवानी दीवानी का 'जाने जां ढूंढता फिर रहा', और यादों की बारात का 'चुरा लिया है तुमने' जैसे गीत उनकी और पंचम की रचनात्मकता का नमूना हैं। लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल, कल्याणजी-आनंदजी, और एस.डी. बर्मन जैसे संगीतकारों के साथ भी उन्होंने अनगिनत हिट गीत दिए।

किशोर कुमार केवल गायक ही नहीं, एक संवेदनशील फिल्मकार भी थे। उन्होंने झुमरू (1961), दूर गगन की छांव में (1964), और दूर का राही (1971) जैसी फिल्मों का निर्माण और निर्देशन किया। उनकी फिल्में मानवीय रिश्तों, सामाजिक सरोकारों, और जीवन के गहरे दर्शन को दर्शाती थीं। दूर गगन की छांव में में एक सैनिक की भावनात्मक कहानी को उन्होंने इतनी संवेदनशीलता से पेश किया कि यह फिल्म आज भी दर्शकों को रुला देती है। उन्होंने अपनी फिल्मों में संगीत भी दिया और गीत भी लिखे, जो उनकी रचनात्मकता का एक और आयाम दिखाता है।

उनका व्यक्तित्व उतना ही अनूठा था जितनी उनकी कला। किशोर दा रूढ़ियों को तोड़ने वाले और अपने सिद्धांतों पर अडिग रहने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने कई बार फिल्म उद्योग की व्यावसायिकता और रीति-रिवाजों का खुलकर विरोध किया। एक मशहूर किस्सा है कि जब एक निर्माता ने उन्हें समय पर भुगतान नहीं किया, तो उन्होंने आधा गाना गाकर स्टूडियो छोड़ दिया। उनकी यह बेबाकी और आत्मसम्मान उन्हें और भी खास बनाता था।

किशोर कुमार का निजी जीवन रंगीन और जटिल था। उन्होंने चार विवाह किए—रुमा गुहा ठाकुरता (1950-1958), मधुबाला (1960-1969), योगिता बाली (1976-1978), और लीना चंदावरकर (1980-1987)। मधुबाला के साथ उनकी प्रेम कहानी हिंदी सिनेमा की सबसे मार्मिक कहानियों में से एक है। मधुबाला की बीमारी और असमय निधन ने किशोर को गहरे तक प्रभावित किया। उनके कई दर्दभरे गीतों में मधुबाला के प्रति उनकी भावनाएं झलकती हैं। 13 अक्टूबर 1987 को, मात्र 58 वर्ष की उम्र में किशोर कुमार ने हृदयाघात के कारण इस दुनिया को अलविदा कह दिया। उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार, उनका पार्थिव शरीर उनके जन्मस्थान खंडवा ले जाया गया। उनकी मृत्यु ने सिनेमा जगत में एक ऐसी रिक्तता छोड़ी जो कभी पूरी नहीं हो सकती। फिर भी, उनकी आवाज़ आज भी हर संगीत प्रेमी के दिल में गूंजती है।

किशोर कुमार केवल एक कलाकार नहीं, बल्कि एक युगपुरुष थे, जिनकी आवाज़ में जादू और आत्मा का संगम था। उनकी गायकी हर पीढ़ी को अपने रंग में रंग लेती है, चाहे वह मुनीमजी का "जीवन के सफर में राही" हो, जिसमें जिंदगी की सैर की मासूम शरारत और गहरा दर्शन झलकता है, या अमर प्रेम का "कुछ तो लोग कहेंगे", जो समाज की रूढ़ियों पर करारा प्रहार करता है। उनके गीत जीवन के हर रंग—प्रेम, दर्द, मस्ती और आत्मचिंतन को जीवंत करते हैं। उनकी जयंती पर हम उनकी उस कला को सलाम करते हैं।

उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल (पंजी.) उत्तर प्रदेश में नई नियुक्तियाँ, संगठन को मिले तीन सक्रिय चेहरे

नवमनोनीत प्रांतीय सदस्य उत्तर प्रदेश, वरिष्ठ समाजसेवी मुशर्रफ खान ने इस विश्वास एवं जिम्मेदारी के लिए प्रदेश अध्यक्ष लोकेश अग्रवाल के प्रति विशेष धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया

श्री खान ने आश्वस्त किया कि संगठन के लक्ष्यों की पूर्ति हेतु वे निष्ठा, ईमानदारी एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेंगे और संगठन की मजबूती हेतु वे सदैव प्रतिबद्ध रहेंगे

आगरा, संजय सागर सिंह। उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल (पंजी.) उत्तर प्रदेश के संगठनात्मक विस्तार और सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए वरिष्ठ समाजसेवी मुशर्रफ खान को प्रांतीय सदस्य, निशा चौधरी को महानगर अध्यक्ष (महिला इकाई) तथा संजय कुमार गुप्ता को महानगर चेयरमैन, आगरा के पद पर मनोनीत किया गया है।

इस अवसर पर संगठन के प्रदेश अध्यक्ष लोकेश कुमार अग्रवाल ने तीनों नवमनोनीत पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि, "आप सभी का संगठन के प्रति समर्पण, नेतृत्व क्षमता तथा व्यापारी हितों के प्रति प्रतिबद्धता निश्चित ही मंडल को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाएगी। आशा है कि आपके सक्रिय सहयोग से संगठन और अधिक सशक्त एवं गतिशील बनेगा।"

प्रदेश अध्यक्ष ने आगे कहा कि संगठन को इन ऊर्जावान एवं कर्मठ व्यक्तित्वों से नई दिशा, सुदृढ़ रणनीति और प्रेरक नेतृत्व की प्राप्ति होगी, जिससे व्यापारी वर्ग को और अधिक मजबूती तथा प्रतिनिधित्व मिलेगा। इन महत्वपूर्ण नियुक्ति से संगठन में नई ऊर्जा का संचार हुआ है और आशा है कि इन कुशल नेतृत्वकर्ताओं के मार्गदर्शन में संगठन और अधिक सशक्त, प्रभावी एवं व्यापारी हितैषी दिशा में आगे बढ़ेगा।

इस अवसर पर नवमनोनीत वरिष्ठ समाजसेवी मुशर्रफ खान प्रांतीय सदस्य, निशा चौधरी को महानगर अध्यक्ष (महिला इकाई) तथा संजय कुमार गुप्ता महानगर चेयरमैन, आगरा ने इस विश्वास एवं जिम्मेदारी के लिए प्रदेश अध्यक्ष लोकेश अग्रवाल के प्रति विशेष धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। उन्होंने आश्वस्त किया कि संगठन के लक्ष्यों की पूर्ति हेतु वे निष्ठा, ईमानदारी एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेंगे।

वरिष्ठ समाजसेवी मुशर्रफ खान, जो वर्षों से सामाजिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं, ने कहा कि संगठन की मजबूती हेतु वे सदैव प्रतिबद्ध रहेंगे। वहीं, निशा चौधरी ने महिला व्यापारियों के हित में कार्य करने की प्रतिबद्धता दोहराई। संजय कुमार गुप्ता ने संगठन की जड़ों को और मजबूत करने का संकल्प लिया।

वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना की भावुक अपील — "आओ, मिलकर फिर इतिहास बनाएँ, हर घर तिरंगा फहराएं"

आइएं – तिरंगे की शान को राष्ट्र के सम्मान से जोड़ें, यह सिर्फ एक ध्वज नहीं, बल्कि हमारी पहचान है, हमारी आज़ादी की गाथा है।

आगरा, संजय सागर सिंह। देश आज़ादी की 78वीं वर्षगांठ की ओर बढ़ रहा है, और इस गौरवपूर्ण अवसर को ऐतिहासिक बनाने हेतु 'हर घर तिरंगा' अभियान एक बार फिर जनभावनाओं के केंद्र में है। इस वर्ष उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्यभर में 1.46 करोड़ तिरंगे फहराने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। प्रशासनिक तंत्र, स्वयंसेवी संस्थाएं, गैर सरकारी संगठन (NGO), स्वयं सहायता समूह (SHG), खादी ग्रामोद्योग और निजी क्षेत्र मिलकर इस अभियान को ज़मीनी स्तर तक पहुंचा रहे हैं। इस महत्वपूर्ण अभियान का यह संदेश हर गली, हर मोहल्ले और हर दिल में गूंजने लगा है।

इस विशेष पावन पर्व पर वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने सभी नागरिकों से भावनात्मक अपील करते हुए कहा है – आइए, हम इस स्वतंत्रता दिवस को एक नई ऊँचाई दें। अपने घरों पर तिरंगा फहराएं, सोशल मीडिया पर तिरंगे का प्रयोग करें और मिलकर इस अभियान को जनांदोलन का स्वरूप दें।

श्री खुराना ने आगे कहना है कि यह पहल केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि देशभक्ति, कर्तव्यबोध और राष्ट्रीय चेतना का उत्सव बन चुकी है। ₹तिरंगे की शान, राष्ट्र का अभिमान - आइए इस 15 अगस्त को यादगार बनाएं।

उन्होंने यह भी आग्रह किया है कि हर नागरिक अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल पर तिरंगे को स्थान देकर डिजिटल माध्यम से देशभक्ति का संदेश फैलाए। डिजिटल इंडिया के दौर में यह एक प्रभावी और सशक्त माध्यम है जिससे युवा वर्ग को देश की विरासत और स्वतंत्रता संग्राम की भावना से जोड़ता है। यह जनआंदोलन हमारे देश की आत्मा और चेतना को जाग्रत करने की प्रेरक पहल है।

उन्होंने यह भी बताया कि यह पर्व केवल उत्सव नहीं, बल्कि यह राष्ट्र पहले की भावना का परिचायक है। जब हम सभी नागरिक अपने-अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करेंगे, तभी स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों का भारत साकार होगा।

यह अभियान आने वाली पीढ़ियों को यह सिखाने और भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का महत्वपूर्ण अवसर है कि आज़ादी कोई सहज उपलब्ध नहीं हुई – इसके पीछे लाखों बलिदानों की गाथा है। ₹इस पहल के माध्यम से न केवल देशभक्ति की भावना को बल मिलेगा, बल्कि यह हमारे बच्चों और युवाओं को स्वतंत्रता की कीमत और उसकी गरिमा का भी बोध कराएगा।

आखिर में उन्होंने इस विशेष अवसर पर सभी नागरिकों से भावुक अपील करते हुए कहा कि – ₹आइए, हम सब मिलकर इतिहास बनाएं – हर घर तिरंगा फहराएं। तिरंगे की शान को राष्ट्र के सम्मान से जोड़ें। यह सिर्फ एक ध्वज नहीं, बल्कि हमारी पहचान है, हमारी आज़ादी की गाथा है।

एआई की छाया में सोच की समाप्ति ?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने हमारी सोचने, लिखने और सृजन करने की प्रक्रिया को तेजी से बदल दिया है। सुविधा के साथ-साथ यह हमारी मौलिकता और मानसिक सक्रियता को भी चुनौती दे रही है। एआई पर अत्यधिक निर्भरता से रचनात्मकता कम हो रही है, और सोचने की शक्ति निष्क्रिय हो रही है। यह लेख चेतावनी देता है कि यदि हमने विवेकपूर्वक तकनीक का उपयोग नहीं किया, तो आने वाली पीढ़ियाँ सोचने के बजाय केवल आदेश देने वाली बन जाएँगी। ज़रूरत है संतुलन की — ताकि तकनीक हमारे हाथ में रहे, हम तकनीक के हाथ में नहीं।

डॉ. सत्यवान सौरभ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई आज के युग का सबसे बड़ा आविष्कार है। यह मनुष्य की बुद्धि और काम करने के तरीके को बदल देने की शक्ति रखता है। परन्तु हर तकनीक की तरह इसके भी दो पहलू हैं — एक वह जो सहायता करता है, और दूसरा वह जो धीरे-धीरे आत्मनिर्भरता को समाप्त करता है।

आजकल हर व्यक्ति चाहे वह विद्यार्थी हो, शिक्षक हो, लेखक हो, पत्रकार हो या कोई आम नागरिक, अपनी छोटी-बड़ी समस्याओं का समाधान एआई से ढूंढने लगा है। लेख लिखने से लेकर निबंध, प्रोजेक्ट, उत्तर, कविता, कहानी, विचार, भाषण — सब कुछ अब एक बटन दबाते ही सामने होता है। यह सुविधाजनक है, समय बचाता है, लेकिन क्या यह हमारे मस्तिष्क को निष्क्रिय नहीं कर रहा?

मनुष्य का मस्तिष्क एक जीवित रचना है। यह उतना ही तेज होता है जितना अधिक उसका प्रयोग किया जाए। जैसे शरीर की मांसपेशियाँ कसरत से मजबूत होती हैं, वैसे ही मस्तिष्क चिंतन, मनन, कल्पना और अनुभव से विकसित होता है। यदि उसे सोचने की आवश्यकता न रहे, तो वह धीरे-धीरे निष्क्रिय हो जाता है।

जब हम हर प्रश्न का उत्तर तैयार रूप में एआई से ले लेते हैं, तो हम सोचने, विश्लेषण करने और नया उत्पन्न करने की शक्ति खोने लगते हैं। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे हमारी सृजनात्मकता को कमज़ोर कर रही है। रचनात्मकता केवल सुंदर शब्दों का मेल नहीं है, वह हमारी आत्मा, अनुभव और भावनाओं की अभिव्यक्ति है। जब हम किसी कविता को आत्मा से लिखते हैं, तब उसमें हमारी पीड़ा, प्रेम, विचार और दृष्टि झलकती है। परन्तु जब वही कार्य मशीन कर देती है, तब शब्द तो होते हैं पर आत्मा नहीं होती।

बच्चों और युवाओं पर इसका प्रभाव और भी गहरा है। आज के छात्र जब अपना गृहकार्य, निबंध या उत्तर एआई से बना रहे हैं, तो वे केवल उत्तर प्राप्त कर रहे हैं, सीख नहीं रहे। वे केवल लिख रहे हैं, सोच नहीं रहे। इसका सीधा प्रभाव उनकी समस्या सुलझाने की क्षमता पर पड़ रहा है। उन्हें तुरंत उत्तर की आदत लग रही है, जबकि जीवन में समस्याएँ

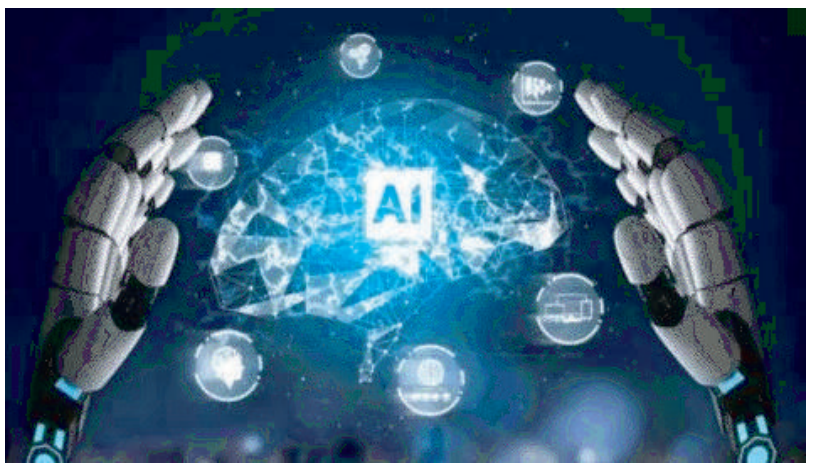

जटिल होती हैं, जिनका उत्तर कोई मशीन नहीं दे सकती।

शिक्षकों और लेखकों पर भी इसका असर हो रहा है। अब बहुत से शिक्षक एआई से उत्तर बनवाकर छात्रों को दे रहे हैं। पत्रकार भी समाचारों को एआई से लिखवा रहे हैं। इससे मौलिक सोच, गहराई और वैचारिक परिपक्वता समाप्त हो रही है। ज्ञान का स्थान सूचना ने ले लिया है, और समझ का स्थान गति ने। लेकिन क्या यह मनुष्य के बौद्धिक पतन की शुरुआत नहीं है?

कुछ लोग कहते हैं कि एआई से सीधे मस्तिष्क के न्यूरॉन नष्ट नहीं होते, परंतु यह सच है कि जब मस्तिष्क का प्रयोग कम होता है, तो उसकी सक्रियता कम हो जाती है। यदि हम सोचने की प्रक्रिया को छोड़ देंगे, तो हमारी स्मृति, एकाग्रता, विश्लेषण और कल्पना की शक्ति अवश्य घटेगी। यह धीरे-धीरे मानसिक आलस्य, निर्भरता और रचनात्मक जड़ता में बदल सकता है।

एक समय था जब छात्र काग़ज़ और कलम लेकर बैठते थे, घंटों सोचते थे, मिटाते थे, फिर से लिखते थे, तब जाकर कोई रचना बनती थी। अब केवल एक प्रश्न टाइप करना है और उत्तर मिल जाता है। यह सुविधा है या बौद्धिक गुलामी?

मानव जाति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सोचने की शक्ति है। हमने भाषा, संस्कृति, विज्ञान, साहित्य, संगीत, कला और धर्म इसी सोच से उत्पन्न किए। यदि यही सोच मशीनों को सौंप दी जाए, तो मनुष्य क्या केवल उपभोक्ता बनकर रह जाएगा?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विरोध नहीं किया जा सकता, न ही यह आवश्यक है। परन्तु उसका विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। हमें उसे साधन की तरह अपनाना चाहिए, साध्य की तरह नहीं। एआई को हमें सहायता करने देना चाहिए, परन्तु निर्णय, विवेक और रचना हमें स्वयं करनी चाहिए।

यदि कोई कवि केवल एआई से कविता बनवा रहा है, कोई शिक्षक केवल एआई से पाठ तैयार कर रहा है, कोई छात्र केवल एआई से उत्तर लिख रहा है, तो यह बौद्धिक आत्मसमर्पण है। यह सोचने की क्षमता का धीरे-धीरे खत्म हो जाना है।

हमें चाहिए कि हम एआई का प्रयोग सीमित और बुद्धिमत्तापूर्वक करें। हमें अपनी सोचने की आदत को बनाए रखना चाहिए। सप्ताह में कुछ दिन बिना एआई के काम करें, विचार करें, लिखें, संवाद करें। बच्चों को मौलिक सोच सिखाएं, प्रश्न पूछना सिखाएं, उत्तर खोजने का अभ्यास कराएं।

हमारी रचनात्मकता, हमारी सोच, हमारी भाषा और हमारे विचार हमारी सबसे बड़ी पूँजी हैं। उन्हें मशीनों के हवाले करना आत्मघाती होगा।

कल्पना कीजिए एक ऐसी पीढ़ी की, जो हर विचार, हर उत्तर, हर योजना के लिए एआई पर निर्भर हो। क्या वह पीढ़ी आत्मनिर्भर कहलाएगी? क्या वह सृजन कर सकेगी? क्या उसमें विचारों की आग होगी?

यदि नहीं, तो हमें आज ही रुककर सोचना चाहिए। तकनीक हमारी दासी होनी चाहिए, रानी नहीं।

हम मशीनों से तेज नहीं होंगे, यदि हम खुद सोचना छोड़ देंगे। हम तब ही श्रेष्ठ रहेंगे जब हम अपनी मौलिकता, अपनी रचनात्मकता और अपने चिंतन को जीवित रखेंगे।

आज आवश्यकता है एक नयी दृष्टि की, जो एआई का संतुलित उपयोग करना सिखाए। जो सोचने की संस्कृति को बचाए, जो विचारों की स्वतंत्रता को कायम रखे। वरना वह दिन दूर नहीं जब हम सोचने वाले प्राणी से केवल आदेश देने वाले यंत्र बनकर रह जाएँगे।

हमारे पूर्वजों ने सोचकर सृष्टि रची, हमने लिखकर सभ्यता गढ़ी। अब अगर हमने अपनी लेखनी, अपनी सोच, अपनी कल्पना एआई को सौंप दी, तो भविष्य का इतिहास कौन लिखेगा?

इसलिए हे विचारशील मानव! एआई को प्रयोग करो, पर सोच को समाप्त मत करो। रचना करो, निर्माण करो, कल्पना करो — क्योंकि मशीनें केवल समर्थन दे सकती हैं, आत्मा नहीं।

शब्दों को सजाना एआई कर सकती है, पर भावनाओं को महसूस करना केवल तुम कर सकते हो।

--

अंतिम वाक्यः

सोचो, रचो, गढ़ो — क्योंकि तुम्हारे बिना यह दुनिया केवल सूचना का ढेर बनकर रह जाएगी।

वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण नहीं रहे,राज्यपाल ,मुख्यमंत्री आदि ने जताई शोक संवेदना

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड के वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण सिंह नहीं अब रहे .आज आपने इस जग को अलविदा कह दिया.झारखंड के पत्रकारिता जगत के लिए उनका युं चला जाना अपूरणीय क्षति है. वे पिछले 10 महीने से लंग्स कैंसर से जूझ रहे थे. मेदांता अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था. रविवार को रांची के सैमफोर्ड अस्पताल में इलाज के दौरान उनकी मौत हो गयी. इनके निधन पर झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार, सीएम हेमंत सोरेन और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी समेत अन्य अनेकों ने उनके निवास पर आकर गहरा शोक जताया है.

झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार ने वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण सिंह के निधन पर सोशल मीडिया एक्स पर लिखा है कि वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण सिंह के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है. शोकाकुल परिजनों के प्रति उन्होंने गहरी संवेदना व्यक्त की है. वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण सिंह ने प्रभात खबर और दैनिक हिंदुस्तान में झारखंड के संपादक के रूप में रांची संस्करण के लिए कार्य किया. वे फिलहाल आजाद नामक अखबार सिपाही के संपादक थे. उनके निधन से पत्रकारिता जगत में शोक की लहर है . उनकी लेखनी संपादकीय में सामाजिक मुद्दों, गरीबी, शिक्षा, और भ्रष्टाचार जैसे विषयों को प्रमुखता से स्थान मिलता था. उन्होंने अपने समय में नये पत्रकारों का मार्गदर्शन किया . उनके कार्यकाल में झारखंड गठन के पूर्व हिन्दुस्तान का अपना बड़ा कार्यालय जमशेदपुर, चाईबासा में खुला।

चक्रधरपुर रेल मंडल ट्रेक पर माओवादी विस्फोट, एक गैंगमैन की मौत दुसरा बुरी तरह घायल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

चक्रधरपुर। दक्षिण पूर्व चक्रधरपुर रेलमंडल के रॉक्सी और रेंजरा के बीच सोमवार को रेल ट्रैक पर दुसर विस्फोट हुआ जिसमें एक गैंगमैन की मौत हो गई, जबकि दुसर बुरी तरह घायल हुआ है।हादसा नक्सलियों के ट्रैक पर लगाये गये बैनर को हटाने के दौरान रविवार सुबह 12 बजे की की बताई जाती है । नक्सलियों ने रविवार को झारखंड समेत पांच राज्यों में बंद बुलाया है।जानकारी के मुताबिक, शहीद सप्ताह के दौरान ही नक्सलियों ने कई जगहों पर बैनर और पोस्टर लगाये हैं। शनिवार देर रात को करमपदा और रेजरा के बीच उन्होंने आईईडी विस्फोट से ट्रैक को उड़ा दिया।इसके बाद यहां मालगाड़ियों का परिचालन बंद है ।यहां सिर्फ मालगाड़ियों का ही परिचालन होता है। सोमवारको रजरा और रॉक्सी के बीच ट्रैक पर लगे बैनर को हटाने के दौरान आईईडी विस्फोट हो गया।इसकी चपेट में गैंगमैन ऐतवा उरांव और बुधराम उरांव आ गये।दोनों को ओडिशा के विमलगढ़ अस्पताल ले जाया गया, लेकिन रास्ते में ही ऐतवा ने दम तोड़ दिया।बुधराम का इलाज चल रहा है। नक्सली 28 जुलाई से शहीद सप्ताह मना रहे हैं।उन्होंने रेल संपत्ति को नुकसान पहुंचाने की चेतावनी दी थी।इस चेतावनी के मद्देनजर अलर्ट जारी किया गया था।

मेरे संघर्ष की कहानी

गुरुजनों की शिक्षा, परिवार का प्रेम और साथ,
जीवन यात्रा में जब संघर्षों की बात आती है, तो गुरुजन और परिवार का साथ वह अनमोल धरोहर बन जाता है, जिसकी छाया में हर चुनौती आसान लगती है। मेरे जीवन के हर मोड़ पर — स्कूल, कॉलेज, या नौकरी जहां कहीं भी कठिनाइयाँ आईं, वहां मेरे गुरुजनों की शिक्षाएँ और अपनों का साथ मेरी शक्ति बनी रही।
गुरुजन का मार्दर्शन, प्रेरणा की अखंड ज्योति
मेरे शिक्षक और मार्गदर्शक, "सह पाठी" और अन्य गुरुजन ,मेरे जीवन के पथ-प्रदर्शक रहे हैं। उनकी दी हुई शिक्षाएँ आज भी मेरी स्मृतियों में उतनी ही ताजा हैं। उन्होंने सिर्फ किताबों की बात नहीं सिखाई, बल्कि जीवन के मूल्य: दृढ़ निश्चय, ईमानदारी और मानवता का पाठ पढ़ाया। कठिन परिस्थितियों में जब कभी मैं डगमगाया, तो उनके शब्द मुझे फिर से संभाल गए। वह अनुशासन, श्रम और आत्म-विश्वास जो उन्होंने मेरे भीतर बोया, आज भी हर उपलब्धि की नींव है।
माँ-पिता का प्यार,अटूट सहारा
मेरे माता-पिता का बिना शर्त स्नेह और विश्वास सबसे बड़ा सहारा रहे। आर्थिक और सामाजिक समस्याओं के बावजूद उनका समर्पण और सकारात्मक दृष्टिकोण मेरी ऊर्जा बने। जब कभी मैं असफल हुआ या थक गया, तो माँ के प्यारभरे शब्द और पिता की सलाह ने मुझे फिर से आगे बढ़ने का साहस दिया।
भाई-बहनों का साथ,साझेदारी का अद्भुत संबंध,
परिवार के हर सदस्य का स्नेह, भाई-बहनों के साथ बिताया बचपन, साझा संघर्ष, ये यादें मेरी आत्मा में रच-बस गई हैं। कभी छोटे-छोटे झगड़े, तो कभी एक-दूसरे के लिए सपनों का साथ बन जाना, उन पलों को भुलाया नहीं जा सकता। हम सबने साझा जीवन-संघर्ष से बहुत कुछ सीखा, मिलजुलकर हर कठिनाई को पार किया।
जीवन की सच्ची विरासत,
आज जब भी अतीत के पन्ने पलटता हूँ, तो महसूस करता हूँ ,गुरुजनों की शिक्षा, परिवार का प्रेम और साथ, यही मेरी असली दौलत है। संघर्षों की राह में यह धरोहर मेरी ताकत बनी, मेरी सोच को दिशा दी और हर मुश्किल में उम्मीद की किरण बनी।
परिवार और गुरुजनों से मिली सीख और प्रेम के बिना मंज़िल अधूरी है। जीवन की सबसे गहरी जड़ें वहीं हैं,और यही मेरी सबसे अनमोल विरासत है।
मेरी कामयाबी के हर कदम के पीछे, इन सभी की प्रेरणा, आशीर्वाद और साथ सदा मौजूद है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता, बल्कि हृदय में हमेशा अमिट बना रहेगा।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
सहज सरदा मध्य प्रदेश

माओवादियों ने चक्रधरपुर रेल मंडल का ट्रैक उड़ाया

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जामदा(पश्चिमी सिंहभूम) माओवादियों ने दक्षिण पूर्व चक्रधरपुर रेल मंडल अन्तर्गत झारखंड के कोल्हान से सटे ओड़िशा रॉक्सी और रेंगड़ा स्टेशन के बीच बीती रात रेल पटरी पर विस्फोट किया . इससे इस रेल रूट पर आवागमन पूरी तरह बाधित हो गयी है. यह रेल मार्ग पर पेसेजर ट्रेनें नहीं चलती माल ढुलाई कर सेल आदि कंपनियों को दी जाती है . विस्फोट के बाद यह कार्य अब बाधित है. माओवादियों द्वारा घोषित 24 घंटे के भारत बंद के ठीक बाद इस घटना को अंजाम दिया गया.

घटना देर रात 12 बजे के बाद हुई, जब माओवादियों ने पूर्व नियोजित ढंग से पटरी को विस्फोट से उड़ा दिया. विस्फोट की तीव्रता कम रहने के रेल पटरी को खास नुकसान नहीं पहुंचा, लेकिन पटरी के नीचे लगे सीमेंट का स्लीपर क्षतिग्रस्त हो गया. नक्सलियों ने रेल लाइन पर बैनर भी लगा दिया था,जिसे बाद में हटा दिया गया.

घटना के बाद झारखंड और ओडिशा की सीमा पर सुरक्षा बलों को तैनात कर दी गयी है. सारंडा के घने जंगलों .सारंडा क्षेत्र में पुलिस व सुरक्षा बलों द्वारा सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है. माओवादी संगठनों ने झारखंड, उड़ीसा, बिहार और छत्तीसगढ़ में 24 घंटे के भारत बंद का आह्वान किया है, जो शनिवार की रात 12 बजे से प्रभावी हो गया है. बंद के समर्थन में नक्सलियों ने पर्चे और पोस्टर छोड़े हैं, जिसमें उन्होंने "पुलिसिया दमन के खिलाफ जन प्रतिरोध" की अपील की है.

'एक शाम गौमाता के नाम' जागरण आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

कापरा मंडल स्थित श्री आईजी गौशाला में श्री सालासर बालाजी भक्त मंडल द्वारा परम पूज्य गुरुदेव कैलाशनाथजी महाराज के सान्निध्य में 'एक शाम गौमाता के नाम' जागरण का आयोजन किया गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति में भक्त मंडल के विकास शर्मा ने बताया कि गौसेवार्थ आयोजित जागरण में श्री सालासर बालाजी व श्री आईमाताजी की तस्वीर पर माल्यार्पण व ज्योत प्रज्ज्वलित की गयी। अवसर पर पधारे भक्तों के लिए भोजन प्रसादी की व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर की गयी। भजन सम्राट संत गुलाबनाथजी महाराज ने गौमाता के चरणों में भजनों के पुष्प अर्पित किये। भजन गायक संत गुलाबनाथ ने भजनों व कथाओं के माध्यम से गोमाता की महत्ता बताई। गायकों के प्रस्तुत भजन गुरू मेहर करोरर धरू आपरों ध्यान इत्यादि भजनों पर देर रात तक श्रद्धालु झूमते रहे। कार्यक्रम में पधारे सम्मानित अतिथि परम पूज्य गुरुदेव कैलाशनाथजी महाराज रुकनसर रामगढ़ शेखावटी, गुलाबनाथजी, गौशाला के पदाधिकारियों अध्यक्ष मंगलाराम पंवार, उपाध्यक्ष कालूराम काग, सचिव हुक्माराम सानपुरा, कोषाध्यक्ष नारायणलाल परिहार, सह सचिव ढगलाराम सेपटा, किशनलाल पंवार , मारवाड़ी युवा मंच मेड़चल द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में 22 यूनिट रक्त प्राप्त करने पर कैलाश प्रजापति, सर्व समाज के गणमान्य पदाधिकारी दुधाराम बाबल, मोहनलाल हाम्बड़, धर्माराम ढाका, शांतिलाल सुथार, भगाराम मुलेवा पारसमल शर्मा, जगदीश , कालुसिंह राजपुरोहित, बस्तीराम जांगिड़ ,राजस्थानी गैर मंडली बिरमगुड़ा परमेश्वर वैष्णव,

राकेश चोयल चन्द्र प्रकाश गेहलोत,व सम्मानित अतिथियों का पुष्प-माला, शॉल द्वारा सम्मान किया गया। कार्यकर्ताओं द्वारा फूलों की वर्षा का भक्तों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम श्री सालासर बालाजी भक्त मंडल के संरक्षक विकास शर्मा,श्रवण पारीक, अध्यक्ष महेश सैनी, उपाध्यक्ष दामोदर शर्मा सम्पत पारीक,सचिव ओमप्रकाश चौधरी, सह सचिव नंदुसिंह राजपुरोहित, कोषाध्यक्ष किशोर शर्मा, सह-कोषाध्यक्ष जयप्रकाश शर्मा,सदस्य सुरेन्द्र सैनी, अर्जुनसिंह, के.के. बन्ना, नरेश अग्रवाल, ईश्वरदान सिंह, करण सिंह, कमल भाटी, विक्रम सिंह, मनोहर सिंह, पुष्पेन्द्र सिंह राजपुरोहित, उदय कुमार भाटी, शशिकांत शर्मा, कानाराम जांगीड़, ढगलाराम सेपटा, मदन सिंह, राकेश वैष्णव, दुलीचन्द शर्मा, प्रकाश जाट, महावीर हरितवाल, दीपक पाण्डेय, नरेन्द्र सांखला, नरेश खण्डेलवाल, केदार शर्मा, राजेश प्रजापत, भंवरलाल जांगिड, गोपाल सैनी, इन्द्रपाल सैनी, आनन्द कुमार शर्मा, विकास जाट, सुनील कुमार शर्मा, कपिल शर्मा, गौरव सैनी, पुनीत शर्मा, अमित सहल, घांसीराम जाट, सौरभ सैनी, नत्थु सिंह, मुरली दाधीच लिचाणा , कार्यकर्ताओं व गौशाला की कार्यकारणी का विशेष सहयोग रहा।कार्यक्रम का विशेष कवरेज जगदीश सीरवी पत्रकार, लाईव यू-ट्यूब पर सीधा प्रसारण क्लिक मैजिक, राठौड़ साउंड भगवानराम राठौड़, बबलू,द्वारा किया गया। मंच संचालन मदन सिंह शेखावट ने किया। महाआरती के पश्चात कार्यक्रम का समापन हुआ।

महिला मण्डली द्वारा भजन प्रस्तुत के बाद प्रसादी का लाभ लिया गया

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर :- बलंगा की मरीज़ ने पंद्रह दिनों तक ज़िंदगी और मौत से जूझने के बाद आखिरकार अपनी आँखें बंद कर लीं। यह घटना शनिवार, 19 जुलाई की सुबह हुई और शनिवार, 2 अगस्त को उनका निधन हो गया। इतनी बड़ी घटना के बावजूद, सरकार और पुलिस प्रशासन ने केवल शोक संदेश भेजकर अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर ली। चार बार बयान दे चुका मरीज़ मानसिक रूप से स्वस्थ था। धीरे-धीरे उसकी हालत में सुधार हो रहा था, लेकिन उसकी अचानक मौत ने राज्य की जनता के मन में कई सवाल खड़े कर दिए हैं। आज कांग्रेस भवन में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रवक्ता सोनाली साहू, मधुस्मिता आचार्य, मनीषा दास पटनायक, जयश्री पात्रा और प्रणति मिश्रा ने आरोप लगाया कि यह पूरी तरह से सरकार द्वारा रचित हत्या थी।

प्रवक्ता श्रीमती। साहू ने शनिवार, 19 जुलाई को हुई घटना की शुरुआत से लेकर 2 अगस्त को बलंगा की मरीज़ की अंतिम सांस तक की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने सवाल उठाया कि एक के बाद एक चौंकाने वाली घटनाओं को कैसे और क्यों दबाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि पीड़ितों के कई बार बयान दर्ज करने के बाद भी पुलिस एक भी आरोपी तक नहीं पहुँच पाई। उन्होंने मांग की कि घटना की उचित जाँच के लिए नीमपारा विधायक और उपमुख्यमंत्री नैतिक आधार पर इस्तीफा दें। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या बालासोर की सौम्याश्री की घटना एक संयोग है या बलंगा की घटना में देखा गया एक प्रयोग।

इसी तरह, पार्टी प्रवक्ता मनीषा दास पटनायक ने पूछा कि पुलिस को कौन रोक रहा है, पुलिस किसका बचाव कर रही है और पुलिस का राजनीतिकरण क्यों किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि पुलिस द्वारा अचानक ट्वीट करना और धीरे-धीरे ठीक हो रहे मरीज़ की अचानक मौत भी संदिग्ध है। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि सरकार को यह नहीं सोचना चाहिए कि हम चुपचाप उस राजनीतिक नाटक को बर्दाश्त कर लेंगे जो सरकार राज्य की जनता की भावनाओं से खेल रही है, पुलिस को हथियार दे रही है। उन्होंने कहा कि सरकार को सत्ता में आए एक साल हो गया है। फिर भी, राज्य महिला आयोग का पद रिक्त होना सरकार की अक्षमता को दर्शाता है।

पार्टी प्रवक्ताओं में से एक जयश्री पात्रा ने कहा कि माननीय उपमुख्यमंत्री, जो स्वयं एक महिला हैं और पीड़िता उनके ही क्षेत्र की है, की भूमिका बेहद संदिग्ध है। उन्होंने सवाल किया कि क्या उपमुख्यमंत्री महोदया वास्तव में इस हत्या में शामिल लोगों को नहीं जानतीं? उन्होंने यह भी पूछा कि बयाबर का वह युवक कौन है, जो महोदया के साथ दिल्ली एम्स गया था और सोशल मीडिया पर उनके साथ घूमता हुआ दिखाई दे रहा है, और सीए पीड़िता के परिजनों को मीडिया में बयान देने से क्यों रोक रहा है? उन्होंने मांग की कि उपमुख्यमंत्री को भी जाँच में शामिल किया जाए।

प्रदेश कांग्रेस की मीडिया सदस्य मधुस्मिता आचार्य ने कहा कि पीड़िता के पिता द्वारा शुरू में दिए गए बयान और पीड़िता की मृत्यु के बाद दिए गए बयान में कई अंतर हैं। उन्होंने कहा कि पीड़िता के पिता का यह बयान कि उनकी बेटी की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है और सरकार की कार्रवाई से उनका संतुष्ट होना कई संदेह पैदा करता है।

महिला कांग्रेस की वरिष्ठ सदस्य प्रणति मिश्रा ने कहा कि महिला कांग्रेस आने वाले दिनों में हाईवे पर इसका करारा जवाब देगी। उन्होंने सरकार को चेतावनी दी कि अगर सात दिन के भीतर आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हुई तो डीजीपी कार्यालय का घेराव किया जाएगा।

कांग्रेस ने मांग की है कि गृह विभाग का प्रभार संभाल रहे मुख्यमंत्री को भी तुरंत इस्तीफा देना चाहिए क्योंकि पुलिस विभाग की जाँच के विभिन्न पहलुओं पर जनता के सवाल उठ रहे हैं।

हैदराबाद चितल श्रावण सैर के चार ज्योतिलिंग दर्शन भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग, त्रयंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग, घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग, वैधनाथ ज्योतिर्लिंग का दर्शन के भाग्यनगर में भव्य स्वागत किया इस अवसर पर उपस्थित मांगीलाल काग, कालुराम काग भुराराम काग, भंवरलाल मुलेवा, केसाराम, भानाराम सेपटा,प्रभुराम हाम्बड़, गोपाराम प्रभुराम, रावतराम काग, कानाराम गेहलोत,दिपाराम, भंवरलाल राठौड़, मंणक चन्द्र कुमावत , महिला मंडल व अन्य।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023